फाल्गुन माह, कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 34 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

# अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 26 फरवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

# यूक्रेन करें सरेंडर, थम जाएगा युद्धः रूस

## यूक्रेन ने किया बड़ा दावा, कहा- हमने मार गिराए 100 रूसी सैनिक, रूस का रोमानिया के शिप पर मिसाइल हमला, युद्ध में पहली बार नाटो के किसी मेंबर पर निशाना

**मॉस्को/कीव/वॉशिंगटनः रूस** ने लगातार दूसरे दिन भी यूक्रेन पर अक्रामक हमले जारी रखे हैं। अपने बचाव में यूक्रेन भी रूस पर हमले कर रहा है। रूसी सेना उत्तर पूर्व और पूर्व की ओर यूक्रेन की राजधानी कीव की ओर बढ़ रही है। वहीं, यूक्रेन शांति चाहता है और रूस के साथ बातचीत के लिए तैयार है, जिसमें नाटो के संबंध में तटस्थ स्थिति भी शामिल हैं। यह बात यूक्रेनी राष्ट्रपति के सलाहकार मायखाइलो पोडोलीक ने शुक्रवार को बताई है। उन्होंने एक टेक्स्ट संदेश के माध्यम से कहा कि यदि बातचीत संभव है, तो उसे आयोजित किया जाना चाहिए। इसके जवाब में रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि यूक्रेन की सेना द्वारा हथियार डालने के बाद ही हम बातचीत के लिए तैयार हैं।

**यूक्रेन के अलगाववादियों ने क्षेत्र का विस्तार करने की योजना बनाईः** रूसी समर्थित अलगाववादी नेताओं को उम्मीद है कि उनके सैनिक बहुत जल्द यूक्रेन के डोनेट्स्क और लुहान्स्क क्षेत्रों की सीमाओं की ओर बढ़ेंगे। शुक्रवार को अलगाववादी नेताओं के हवाले से ये जानकारी दी है। अलगाववादियों जिनकी स्वतंत्रता मास्को ने यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण शुरू करने से पहले इस सप्ताह मान्यता दी थी। वर्तमान में उन प्रांतों के केवल कुछ हिस्सों को नियंत्रित करते हैं।

**चीनी राष्ट्रपति चिनफिंग ने पुतिन से की बातः** यूक्रेन द्वारा शांति वार्ता की अपील किए जाने पर रूस अपनी शर्तों के साथ तैयार हो गया है। इस बीच, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बात की है। चीनी राष्ट्रपति ने कहा है कि चीन यूक्रेन के साथ बातचीत के लिए रूस का समर्थन करता है।

## पुतिन ने देश को दुनिया से अलग-थलग कियाः रूसी

**मॉस्को/कीवः** शुक्रवार को यूक्रेन पर रूसी हमले का दूसरा दिन रहा। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के यूक्रेन पर हमले के फैसले की दुनिया भर में निंदा हो रही है। अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, हंगरी, फ्रांस, जापान, स्विटजरलैंड में लोग रूसी हमले के खिलाफ प्रोटेस्ट कर रहे हैं। वहीं, पुतिन के खिलाफ उनके अपने देश में भी लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। रूस की बड़ी हस्तियों, पत्रकारों का कहना है कि इस युद्ध की शुरुआत कर रूस ने खुद को दुनिया से अलग-थलग कर लिया है। इधर, यूक्रेन में फंसे भारतीयों ने भी सरकार से मदद की गुहार लगाई है।

## अकेला पड़ा यूक्रेन, जरूरत के वक्त सबने साथ छोड़ा- राष्ट्रपति

**मॉस्को/कीवः** रूस ने यूक्रेन में भारी तबाही मचाई है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने अमेरिका और देशों से ये उम्मीद जताई थी कि रूस के खिलाफ जंग में वो उनकी मदद करेंगे, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूक्रेन में सेना भेजने से इनकार कर दिया। जेलेंस्की ने बयान जारी कर अपना दर्द बयां किया। उन्होंने कहा, 'दुनिया ने हमें जंग में लड़ने के लिए अकेला छोड़ दिया है।' यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने रूसी हमले के पहले दिन के आखिर में राष्ट्र के नाम एक वीडियो में कहा, 'हमें अपने राज्य की रक्षा के लिए अकेला छोड़ दिया गया है। यूक्रेन अब अपने दम पर रूस के साथ जंग लड़ेगा। हमारे साथ लड़ने के लिए कौन तैयार है? मुझे कोई नहीं दिख रहा है।

**हमले में यूक्रेन के 137 नागरिक मारे गएः** जेलेंस्की ने कहा, 'ज्मीनई द्वीप की रक्षा करते हुए बॉर्डर पर तैनात यूक्रेनी सेना ने अपनी वीरता का परिचय दिया। वे शहीद हो गए, लेकिन उन्होंने रूसी सेना के आगे सरेंडर नहीं किया।

## यूक्रेन में फंसे भारतीयः बसी बसाई गृहस्थी छोड़ आए कीव में

**कीवः** हम लोगों को आनन-फानन में बताया गया कि अब या तो आप यहीं रुककर अपना बचाव करें या फिर अपने मुल्क वापस चले जाएं। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना है। बसी बसाई गृहस्थी है। इतनी आसानी से सब कुछ नहीं छूटता लेकिन जान बचानी थी तो क्या करते। सब छोड़ आए कीव में। बस अपनी गाड़ी उठाई। कुछ जरूरी दस्तावेज लिए और मुख्य हाई-वे छोड़कर दूसरे रास्तों से पोलैंड बॉर्डर की ओर बढ़ चले। 12 घंटे के कठिन सफर के बाद इस वक्त में पोलैंड बॉर्डर पर हूं और यहां पर 15 किलोमीटर लंबी लाइन लगी है। समझ नहीं आ रहा है कि पोलैंड बॉर्डर से प्रवेश मिलेगी भी या नहीं। हालात बहुत खराब हैं। फिलहाल अभी यह इलाका सुरक्षित है।

## 1000 बच्चे बंकर में चिप्स खाकर और दूध पीकर कर रहे गुजारा, पैसे भी खत्म

**मजीठाः** यूक्रेन डॉक्टर बनने गए भारतीय बच्चे युद्ध के बीच बंकर में रह रहे हैं और चिप्स खाकर दूध पीकर गुजारा कर रहे हैं। रुपए खत्म हो चुके हैं और मेस तक खाना खाने जाना भी मुश्किल है। बच्चों ने पैरेंट्स को वीडियो बनाकर भेजी है, जिसमे वह बंकर में बैठकर सबकुछ ठीक होने का इंतजार कर रहे हैं।

**कायनात अगस्त में ही छुट्टियां काट कर लौटीः** पंजाब के अमृतसर के कृष्णा स्क्वायर और तिलक नगर के 4 बच्चे एक ही बंकर में एक साथ हैं। उनके माता-पिता ने शुक्रवार को सरकार से अपील करते हुए कहा कि अब सिर्फ उनका ही सहारा है। क्योंकि बच्चों के पास पैसे भी खत्म हो रहे हैं। यूक्रेन में पढ़ रही कायनात महाजन की माता ने बताया की उनकी बेटी अगस्त में ही छुट्टियों के बाद वापस गई है। बेटी से हर आधे घंटे में बात होती है, लेकिन हर बार चिंता बढ़ रही है।

**खाना खाने मेस में गए तो ब्लास्ट हो गयाः** सौम्या और अंबुज के माता-पिता ने बताया कि तीनों बच्चे एक साथ बंकर में हैं।

## यूक्रेन-रोमानिया सीमा के लिए रवाना हुआ भारतीय छात्रों का पहला बैच

**कीवः** यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद वहां फंसे 18 हजार से अधिक भारतीयों में से छात्रों का पहला जत्था शुक्रवार को यूक्रेन-रोमानिया सीमा के लिए रवाना हो गया। अब इन्हें रोमानिया के रास्ते भारत लाया जाएगा।

यूक्रेन में फंसे भारतीयों को निकालने के लिए भारत सरकार ने यूक्रेन के पड़ोसी देशों तक सड़क मार्ग के अलावा हवाई रास्ते का भी इस्तेमाल करने का फैसला किया है। इस पर आने वाला पूरा खर्च भी भारत सरकार ही उठाएगी। इसके बाद तय हुआ है कि एयर इंडिया यूक्रेन में फंसे लोगों को निकालने के लिए रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट के लिए दो उड़ानों का संचालन करेगी। सड़क मार्ग से यूक्रेन और रोमानिया की सीमा तक पहुंचे भारतीय नागरिकों को भारत सरकार के अधिकारी बुखारेस्ट ले जाएंगे जहां से उन्हें एयर इंडिया की उड़ानों के जरिए वापस भारत लाया जाएगा। इससे पहले भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने यूक्रेन में फंसे भारतीयों को हंगरी, पोलैंड, स्लोवाकिया और रोमानिया के रास्ते दिल्ली लाने की योजना बनाई थी। इसके लिए इन देशों की यूक्रेन के साथ सटी सीमाओं पर विशेष भारतीय प्रतिनिधियों की तैनाती की गयी है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने पश्चिमी यूक्रेन के लीव व चेर्निवित्सी शहरों में अपने शिविर कार्यालय चालू कर दिये हैं।

## पूर्वांचल को भाजपा ने किया माफियामुक्तः शाह

**प्रतापगढ़ः** प्रतापगढ़ में चुनाव प्रचार के अंतिम दिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस के गढ़ रामपुरखास विधानसभा सीट पर शुक्रवार को उम्मीदवार नागेश प्रताप सिंह के समर्थन में रामपुर खास चौराहे के पास जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि चार चरण के मतदाताओं ने एक मजबूत नींव डालने का काम किया है। आप लोगों को उस मजबूत नींव पर मजबूत इमारत बनाने का काम अब आगे करना है। ये सपा-बसपा, बुआ-भतीजा की सरकारों ने उत्तर प्रदेश को गर्त में डालने का काम किया। इतना बड़ा प्रदेश, 22 करोड़ की आबादी, लेकिन ये देश की 8वें, 9वें नम्बर की अर्थव्यवस्था थी। 5 साल के अंदर ही योगी जी ने यहां की अर्थव्यवस्था को दूसरे नम्बर पर लाने का काम किया है।

महात्मा बुद्ध की तपस्थली कराकर में अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं। यही भूमि स्वामी करपात्री जी की भूमि है इसको मैं प्रणाम करता हूं ।प्रसिद्ध बेला देवी के मंदिर को प्रणाम करता हूं। मां बाराही के आशीर्वाद की अपेक्षा करता हूं ।

## हिजाब विवाद पर सुनवाई पूरी, फैसला सुरक्षित

**बेंगलुरुः** कर्नाटक हाई कोर्ट में पिछले 11 दिनों से हिजाब विवाद को लेकर सुनवाई जारी थी। शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब पर प्रतिबंध को लेकर कोर्ट में तमाम याचिकाएं दायर की गई थी। इन सभी याचिकाओं पर सुनवाई के बाद कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है।

**मुख्य न्यायाधीश ने कही थी सुनवाई खत्म करने की बातः** कर्नाटक के शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब प्रतिबंध को लेकर विवाद की स्थिती बनी हुई है। मामले में मुस्लिम छात्राओं के ओर से कई याचिकाएं दायर की गई थी। जिनपर पिछले 11 दिनों से हाईकोर्ट में सुनवाई जारी थी। इस दौरान केस के पक्ष और विपक्ष दोनों के ओर से तमाम तरह की दलीलें पेश की गई। मामले की सुनवाई कर रहे हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने पिछली सुनवाई के दौरान यह साफ कर दिया था कि वे इस हफ्ते मामले की सुनवाई निपटाना चाहेंगे।

**पक्ष और विपक्ष दोनों ने पेश की कई दलीलेंः** शैक्षणिक संस्थानों में हिजाब प्रतिबंध के मामले में कर्नाटक सरकार की ओर से कोर्ट में कई दलीले दी गई। जिनमें बताया गया कि हिजाब एक आवश्यक धार्मिक परंपरा का हिस्सा नहीं है। सरकार का कहना है कि धर्म को शिक्षण संस्थानों से दूर रखा जाना चाहिए। सरकार का कहना है कि मुस्लिम छात्राएं हिजाब पहनकर स्कूल कंपाउंड में आ सकती है, लेकिन क्लास के अंदर हिजाब पहनने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। वहीं, हिजाब प्रतिबंध को हाई कोर्ट में चुनौति देने वाली मुस्लिम छात्राओं ने सुनावई के दौरान कहा था कि हिजाब धार्मिक परंपरा का हिस्सा नहीं है। लेकिन यह उनकी धर्म के प्रति आस्था को दशार्ता है, जिसके चलते हिजाब को धर्म के जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए।

## सैन्य कमांडरों को शस्त्र प्रणाली की तैयारियां बनाये रखने के निर्देश

**नई दिल्लीः** वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल पीवी चौधरी ने सैन्य कमांडरों को सभी प्लेटफॉर्म, शस्त्र प्रणाली और परिसंपत्तियों की तैयारियां बनाये रखने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी कमांडरों से सुरक्षित उड़ान वातावरण के लिए उनके प्रयासों को निरंतर बनाए रखने का आग्रह किया। एयर चीफ मार्शल चौधरी सुब्रतो पार्क, नई दिल्ली में आयोजित पश्चिम वायु कमान के कमांडरों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस सम्मेलन में पश्चिम वायु कमान के अंतर्गत आने वाले कमांडरों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि चौधरी का स्वागत पश्चिम वायु कमान के वायु अफसर कमांडिंग-इन-चीफ एअर मार्शल अमित देव ने किया और उन्हें गारद सम्मान भी दिया गया। वायु सेना अध्यक्ष ने अपने संबोधन में तैयारियों को उन्नत बनाने की आवश्यकता पर बल दिया और उपस्थित सैन्य कमांडरों को सभी प्लेटफॉर्म, शस्त्र प्रणाली और परिसंपत्तियों की संक्रियात्मक तैयारियों को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने सभी घटनाओं और दुर्घटनाओं के मूल कारणों के विश्लेषण और अभियानों की प्रभाविकता को सुनिश्चित करने के लिए रखरखाव के तरीकों में सुधार के अतिरिक्त साइबर सुरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।

## मलिक की गिरफ्तारी के खिलाफ प्रदर्शन

**मुंबईः** महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री नवाब मलिक को बुधवार को स्पेशल पीएमएलए कोर्ट ने 3 मार्च तक के लिए ईडी की हिरासत में भेज दिया। 8 घंटे की पूछताछ के बाद मलिक को मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में मंगलवार को गिरफ्तार किया गया है। इसके बाद उन्हें स्पेशल पीएमएलए कोर्ट में पेश किया गया। मलिक की गिरफ्तारी के बाद महाराष्ट्र में एक बड़ा राजनीतिक भूचाल आ गया है। महाविकास अघाड़ी की तीनों पार्टियों से जुड़े नेता केंद्र सरकार और भाजपा पर हमलावर हैं। नवाब मलिक के बाद अब ईडी ने उनके परिवार पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। उनकी बहन को पूछताछ के लिए ईडी ऑफिस बुलाया गया था। इसके बाद केंद्रीय जांच एजेंसी ने उनके भाई कप्तान मलिक को भी पूछताछ के लिए समन किया है। इसी कड़ी में कांग्रेस, शिवसेना और एनसीपी के लगभग सभी मंत्री, विधायक, सांसद और हजारों कार्यकर्ता मुंबई में मंत्रालय के बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं। महाराष्ट्र की राजनीति में पहली बार ऐसा हुआ है, जब सत्तारूढ़ दल से जुड़े मंत्री और नेता केंद्र सरकार और सेंट्रल एजेंसी के खिलाफ प्रोटेस्ट कर रहे हैं।

इसके अलावा एमवीए से जुड़े कार्यकर्ता भी इस गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं। मंत्रालय के बाहर लगी बापू की प्रतिमा के नीचे खड़े होकर शिवसेना कार्यकर्ताओं ने प्रोटेस्ट किया।

**भाजपा भी कर रही प्रदर्शनः** उधर, इसके जवाब में भाजपा ने भी राज्य के कई रेलवे स्टेशनों पर प्रदर्शन करने का ऐलान किया है। नवाब मलिक पिछले कई महीने से समीर वानखेड़े और उनके जरिए बीजेपी पर हमले कर रहे थे। कई बार उन्होंने यह भी कहा था, 'सुना है कि मेरे घर जल्द मेहमान आने वाले हैं।'

## रक्षा मंत्रालय के बजट खर्च की निगरानी के लिए बनेगा पैनल

**नई दिल्लीः** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि रक्षा मंत्रालय अपने बजट खर्च की निगरानी के लिए तीनों सेवाओं के प्रतिनिधियों के साथ एक पैनल बनाएगा ताकि इसका पूरा उपयोग किया जा सके। उन्होंने बजट के बाद एक वेबिनार के दौरान कहा कि इस बजट में आयात को कम करने और सशस्त्र बलों को स्वदेशी तकनीक से आधुनिक बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया गया है।

**मेक-आई के तहत पांच परियोजनाओं को मंजूरी मिलेगीः** राजनाथ सिंह ने कहा कि मुझे यकीन है कि रक्षा मंत्रालय ने वेबिनार के दौरान प्राप्त और इसमें विचार किए गए सभी अहम सुझावों को नोट कर लिया है और रक्षा में आत्मानिर्भरता के लिए बजट घोषणाओं के समयबद्ध कार्यान्वयन के लिए एक कार्ययोजना भी तैयार की है। उन्होंने कहा कि उद्योग के नेतृत्व वाले अनुसंधान और विकास प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए मैं वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान मेक-आई के तहत कम से कम पांच परियोजनाओं को मंजूरी दूंगा। मेक-आई श्रेणी के तहत परियोजनाओं में रक्षा मंत्रालय और विक्रेता के बीच सहमत शर्तों के अनुसार, चरणबद्ध तरीके से जारी और योजना की प्रगति के आधार पर 90 प्रतिशत सरकारी वित्त पोषण शामिल है।

**रक्षा क्षेत्र में स्टार्टअप्स को मदद मिलेगीः** उन्होंने कहा कि हम खास तौर पर निजी उद्योग और स्टार्टअप के लिए निर्धारित बजट की निगरानी के लिए तीनों सेवाओं के प्रतिनिधियों के साथ महानिदेशक अधिग्रहण के तहत एक निगरानी तंत्र तैयार करेंगे, ताकि इसका पूरी तरह से उपयोग किया जा सके। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्रालय क्यूए (दअ) प्रक्रिया में सुधार करेगा, ताकि यह गैर-घुसपैठ, रोकथाम आधारित और इंस्पेक्टर राज से मुक्त हो। हम परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए आईडीईएक्स प्राइम के साथ आएंगे, जिसके लिए 1.5 करोड़ रुपये से लेकर 10 करोड़ रुपये तक की जरूरत होगी। इससे रक्षा क्षेत्र में हमारे बढ़ते स्टार्टअप्स को मदद मिलेगी।

## दिल्ली की सड़कें होंगी गड्ढा मुक्त : सिसोदिया

**नई दिल्लीः** दिल्ली के नागरिकों को अब महीने भर के भीतर गड्ढा मुक्त सड़कों से निजात मिल जाएगा। साथ ही यदि किसी सड़क के निर्माण में कोई खामी पाई जाती है तो वहां के संबंधित इंजीनियर पर इसकी गाज गिरेगी। दिल्ली के नागरिकों को बेहतर सड़कें मिल सके और वे खराब सड़कों को लेकर अपनी शिकायत दर्ज कर सके इसको लेकर पीडब्ल्यूडी दिल्ली जल्द ही एक ऐप लांच भी करेगी। इस बाबत पीडब्ल्यूडी मंत्री मनीष सिसोदिया ने शुक्रवार को को एक समीक्षा बैठक के दौरान पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को आदेश दिए। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार दिल्ली के नागरिकों को बेहतर सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है और इसमें बेहतर सड़के भी शामिल है।

**महीने भर के भीतर गड्ढा मुक्त होंगी दिल्ली के सड़केंः** सिसोदिया ने बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देश दिए कि जल्द ही पीडब्ल्यूडी दिल्ली के अंतर्गत आने वाली सभी 1300 किमी की सड़कों की जांच।

# प्रदेश में भाजपा की सरकार अवश्य बनेगी : अमित शाह

## मऊआइमा के सकरामऊ में आयोजित जनसभा में अनुप्रिया पटेल ने कहा भाजपा व उसके सहयोगियों को मिलेगी तीन सौ से अधिक सीटें

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा के सकरामऊ मैदान में आयोजित जनसभा में मंच पर गृहमंत्री का स्वागत करते भाजपा पदाधिकारी व जनसभा में उपस्थित भीड़

**मऊआइमा।** उत्तर प्रदेश में भाजपा तीन सौ से अधिक सीटें जीतेगी ।सपा की साइकिल पंचर हो गई है उक्त बातें देश के गृहमंत्री अमित शाह ने मऊआइमा के सकरामऊ मैदान में एकत्रित भीड को प्रचार के अन्तिम दिन सम्बंधित करते हुए कही। गृहमंत्री ने कहा कि सपा के सारे सपने चकनाचूर हो चुके हैं तथा साइकिल पंचर हो चुकी है । गृहमंत्री एकत्रित भीड से कहे कि कांग्रेस सपा बसपा सभी विपक्षी दलों को जमानत बचाना मुहाल हो गया है। भाजपा एंवअपना दल के संयुक्त प्रत्याशी डाक्टर जमुना प्रसाद सरोज को पिछले बार की तरह इस बार भी भारी बहुमत से जीताने की अपील किए । गृहमंत्री ने कहा कि जो मैं ने पिछली बार आप लोगों से वायदा किया था वह वायदा निभाया । आप लोग जमुना प्रसाद को जिता कर भेजें। क्षेत्र में विकास अवश्य रुप से होगा । अपना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने कहा कि दस मार्च को भाजपा अपना दल की संयुक्त सरकार प्रदेश में बनने जा रही है । सपा की साइकिल की हवा निकल चुकी है। पूरे प्रदेश में अपना दल भाजपा की लहर चल रही है। उन्होंने डाक्टर जमुना प्रसाद को भारी बहुमत से जिताने की अपील किए। इस अवसर पर प्रत्याशी डाक्टर जमुना प्रसाद ,पूर्व ब्लाक प्रमुख सुधीर मौर्या ,एम एल सी सुरेंद्र चौधरी सहित दर्जनों नेता मंच पर मौजूद थे। तीन घंटा देरी से पहुंचने के बाद बाद भी सकरामऊ मैदान पर भीड खचाखच जमी थी। महिलाओं की संख्या भी बडी संख्या में थी। अपने नेता को सुनने के लिए हजारों लोगों की भीड आसमान पर टकटकी लगाए हुए ।घंटों बाद जब हेलीकॉप्टर की आवाज सुनाई दी तो लोग हेलीकॉप्टर को देखने के उमड पडे।

## बेरोजगारी से तंग आकर युवक ने दे दी जान

**प्रयागराज।** बेरोजगारी और आर्थिक तंगी से परेशान होकर एक व्यक्ति ने बुधवार रात फांसी लगाकर जान दे दी। सुसाइड नोट में उसने अपनी आपबीती लिखी है और परिवार के किसी सदस्य को गलत न फंसाने के लिए पुलिस प्रशासन से अपील की है। वहीं इस घटना से उसके परिवार में कोहराम मचा रहा। सूचना मिलने पर पहुंची धूमनगंज पुलिस ने छानबीन के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। धूमनगंज पुलिस ने बताया कि 45 साल का अशोक कुमार पाल उर्फ गोरे पाल कुछ समय से बेरोजगारी और आर्थिक तंगी से परेशान था। कुछ दिनों पहले उसका पत्नी से भी विवाद हुआ था। उसकी पत्नी मायके चली गई थी। बुधवार रात करीब 10 बजे वह अपने कमरे में गया और सुसाइड नोट लिखकर फांसी लगा ली। काफी देर तक वह कमरे से बाहर नहीं निकला तो परिजनों ने उसे पुकारा। दरवाजा भी नहीं खुला तो परिजनों ने पुलिस को सूचना दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस को छानबीन में सुसाइड नोट मिला। सुसाइड नोट में उसने लिखा है कि मैं अपनी जान अपनी मर्जी से दे रहा हूं।

# बैंक से रुपया निकालकर घर जा रहे व्यक्ति से ठप्पेबाजों ने झांसा देकर उड़ाया 30 हजार

अखंड भारत संदेश

**जसरा के रेरा गांव सभा निवासी कृपा कांत मालवीय जसरा बाजार बीओबी से निकाले थे 30 हजार रुपए**

**जसरा।** जसरा स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा से 30 हजार रुपए निकाल कर के अपने घर वापस जा रहे व्यक्ति को रास्ते में मिले टप्पे बाजो ने झांसा दे करके रुपया उड़ाया रेरा गांव सभा निवासी कृपा कांत मालवीय आज जसरा बाजार स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा से 30 हजार रुपए निकाल कर के अपने घर जा रहे थे। अभी वह बैंक से कुछ दूर ही चले थे कि एक टप्पे बाज उनके पास आया तथा स्मार्ट कार्ड बनवाने का सुहाना सपना दिखाते हुए उनसे काफी बातें करने लगा बाजार में एक तरफ किनारे ले जा करके उनसे आधार कार्ड का नंबर आदि लिया। उसी समय मोटरसाइकिल से एक और व्यक्ति उनके पास आया जो अपने को अधिकारी बता रहा था। इसी बीच में पैसा रखने आदि के समय टप्पे बाजों ने लिफाफा बदल करके उन्हें दूसरा लिफाफा थमा दिया। जिसे ले करके कृपा कांत जब कुछ दूर आगे गए और लिफाफा खोला तो उसमें केवल कागज के टुकड़े भरे थे। जब तक वह दौड़कर घटनास्थल पर पहुंचे तो देखा टप्पे बाज का कहीं अता पता नहीं है। इस सूरत में इधर-उधर ढूंढते हुए उन्होंने अपने घर में फोन किया। घर के लोगों के पहुंचने पर घूरपुर पुलिस को सूचना दिया गया।

# चुनाव के आखिरी दिन बसपा प्रत्याशी ने जुलूस निकालकर दिखाई ताकत

अखंड भारत संदेश

करछना विधानसभा क्षेत्र में बसपा प्रत्याशी ने निकाला जुलूस

**करछना।** विधानसभा क्षेत्र के बसपा प्रत्याशी अरविंद कुमार शुक्ला उर्फ भामे अपने समर्थकों के साथ करछना क्षेत्र के विभिन्न सड़क मार्गों पर मोटरसाइकिल जुलूस निकालकर अपनी ताकत का लोगों को एहसास दिलाया बड़ी संख्या में बसपा समर्थक मोटरसाइकिल एवं जीप से क्षेत्र के करछना बेला चौराहा घटवा, सुनाई , कौवा ,धरवारा ,वीरपुर पचदेवरा ,मुगारी, चनैनी, आदि सड़क मार्गों पर एक लंबा जुलूस निकालकर अपने पक्ष में मतदान करने के लिए लोगों को आह्वान करते हुए अपनी ताकत का लोगों को अहसास दिलाते हुए लोगों को बसपा प्रत्याशी को हाथी चुनाव चिन्ह पर वोट देकर विजई बनाने की अपील की मोटरसाइकिल रैली का नेतृत्व करते हुए अरविंद कुमार शुक्ला अपने समर्थकों के साथ रैली के माध्यम से लोगों से विजय का आशीर्वाद मांगा।

### बिना परमीशन के एआईएमआईएम द्वारा निकाले गए जुलूस , दर्ज होगा मुकदमा

**मऊआइमा।** बिना अनुमति के एआईएमआईएम द्वारा पूरे कस्बे सहित फोरलेन पर निकाले गए जुलूस का मऊआइमा पुलिस ने वीडीओ ग्राफी कर ली गई है । तथा सभी को चिन्हित किया जा रहा है। सैकड़ों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के कस्बा के कतिपय लोगों ने सैकड़ों लोगों साथ प्रचार के अन्तिम दिन ए आई एम आई ए ने शुक्रवार को कस्बा के विभिन्न मोहल्लों और थाना पडाव फोरलेन पर जुलूस निकाल कर जाम लगा दिया गया था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने वीडीओ ग्राफी कर के जुलूस में शामिल लोगों को खदेड़ दिया । कस्बा चौकी प्रभारी जगनारायण ने बताया कि जुलूस में शामिल लोगों से जुलूस के प्रमीशन का कागज मांगा गया परन्तु वह मौके पर नहीं देखा सके । कहने लगे प्रत्याशी के पास है परन्तु प्रत्याशी नहीं थे । पुलिस का कहना था कि प्रमीशन का कागज अभी तक नहीं देखाया गया है । वीडीओ ग्राफी में जुलूस में शामिल लोगों को चिन्हित किया जा रहा है । चिन्हित करके मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

## अपने मत का प्रयोग मतदाता अवश्य करें पुनीत कार्य है

**सहसों।** युवा डेवलपमेंट वेलफेयर सोसाइटी सहसों द्वारा चलाए जा रहे मतदाता जागरूकता अभियान के तहत शुक्रवार को सहसों बाजार सहित सिंगरामऊ, भोपतपुर, मीरापुर, जग बंधनपुर आदि गांव में व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाकर लोगों से 27 फरवरी रविवार को शत प्रतिशत मतदान करने के लिए जागरूकता के साथ प्रेरित किया गया। संस्था के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश केसरवानी ने कहा कि मतदान करना हम सब का राष्ट्रीय कर्तव्य है। लोकतंत्र में मतदान की शक्ति सबसे बड़ी महा शक्ति होती है इसलिए आप सभी मतदाता बंधुओं से विनम्र निवेदन है कि रविवार को अपने मतदान केंद्र पर जाकर मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। इतना ही नहीं संस्था द्वारा 25 जनवरी से लगातार क्षेत्र में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसकी क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों द्वारा काफी सराहना की जा रही है। इस अवसर पर संस्था के प्रबंधक ग्राम प्रधान सहसों विष्णु कुमार केसरवानी, डॉ अमित यादव, सौरभ केसरवानी, आशीष केसरवानी, पिंटू गुप्ता, अभिषेक राजपूत, घनश्याम सिंह, राजेश यादव, धीरज पांडे सहित काफी संख्या में संस्था के सदस्य मौजूद रहे।

# करछना में चुनावी जनसभा में गरजे सीएम योगी

अखंड भारत संदेश

**पांच साल में हुए विकास कार्यों को जनता को गिनाई उपलब्धियां**

करछना में चुनावी जन सभा को सम्बोधित करते हुए योगी आदित्य नाथ एवं उपस्थित लोगों की भीड़

**करछना।** विधानसभा 260 भाजपा प्रत्याशी पीयूष रंजन निषाद के चुनावी जनसभा में प्रचार के आखिरी दिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सिंह करछना में एक जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा के 5 साल के शासनकाल में हुए विकास कार्यों का खोला पिटारा और वादा किया कि इस बार भाजपा सरकार बनने पर और अधिक कार्य कराए जाएंगे और 60 साल के ऊपर महिलाओं को बसों में यात्रा मुफ्त में कराई जाएगी उन्होंने कहा कि करछना में बहुत काम पीछे से हो गया है जिसको विधानसभा में पीयूष रंजन को जीता कर सरकार बनाने का काम करें जिससे करछना का और विकास हो सके इसके अलावा उन्होंने कांग्रेश और समाजवादी सरकार समाजवादी पार्टी को आड़े हाथों लेते हुए माफिया और गुंडों की पार्टी का साथ देने का पार्टी को बताया यही नहीं सैफई महोत्सव पर भी चुटकी ली भीड़ को देखकर गदगद हुए सीएम योगी ने मतदाताओं को रिझाने के लिए युवाओं को रोजगार को बढावा देने के लिए लुभावने आश्वासन दिए तथा उन्होंने कहा कि पीयूष रंजन निषाद को पिछली बार चुनाव में सफलता नहीं मिली थी इस बार मैं उनके लिए वोट मांगने आया हूं इस बार उन्हें जिता कर उत्तर प्रदेश सरकार में शामिल करने में सहयोग करें इस मौके पर डॉक्टर भगवत पांडे पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पांडे रीता बहुगुणा जोशी शोभ नारायण द्विवेदी रिंकू सिंह बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# देश में कांग्रेस ने फैक्ट्रियां बनाई मोदी जी बेंच रहे : राहुल गांधी

अखंड भारत संदेश

कांग्रेस प्रत्यासी रामकृपाल कोल के समर्थन में जन सभा को संबोधित करते राहुल गांधी,महाराष्ट्र सरकार की शिक्षा मंत्री वर्षा गायकवाड़ आदि

**कोरांव।** कांग्रेस के कार्यकाल में बनी फैक्ट्रियां नरेंद्र मोदी बेचने का काम कर रहे। उक्त भाषण राहुल गांधी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कोराव पथरताल में आयोजित लाखों की संख्या में उमड़े जन सैलाब में रामकृपाल कोल के समर्थन में विशाल जन सभा को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने देश की जनता के साथ विश्वशघात करने का कार्य किया है। क्योंकि उन्होंने जनता से पंद्रह लाख काला धन का पैसा वापिस लेकर गरीबों के खातों में देने को कहा था लेकिन वे लोग खुद काले धन को पीछे से सफेद कर के डकार लिए। नोटबंदी करके जनता को तंग किया। कोरोना में जनता को उपचार की व्यवस्था के बजाए थाली बजवाई,मोबाइल की बत्तियां जलवाई,जिससे देश की हालत बदतर हो गई। गंगा में लाशों की लाइनें लग गई। गांधी ने कहा कि भाजपा की सरकारें विकास के बजाय पाकिस्तान की बात करने लगते हैं,देश में जाति धर्म मजहब की राजनीति करते हैं, मंहगाई,बेरोजगारी से जनता तंग है। किसानों का शोषण करते हैं। उन्होंने कहा कि मेरी जिस प्रांत में कांग्रेस की सरकार है,वहां 2500 रुपए प्रति कुंतल खाद्यान्न क्रय किया जाता है। यूपी में तो सिर्फ 1400 रुपए में ही क्रय किया जा रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि यूपी में नारी के सम्मान के साथ खिलवाड़ हो रहा है। उन्हे सम्मान के बजाए उनकी बेइज्जती की जाती है। उन्होंने कहा ये मोदी सरकार किसानों नौजवानों बेरोजगारों के साथ धोखेबाजी कर रही है। छुट्टा जानवर छोड़ कर किसानों की मेहनत से तैयार फसल को खिलवा दे रही है। मुख्य अतिथि ने कहा कि कोरोना के बिसय में मैंने सरकार को पहले ही आगाह कर दिया था। किंतु सरकार ने ध्यान नहीं दिया,जिससे देश में बबार्दी लोगों की हुई। उन्होंने जनता से योग्य एवं जुझारू प्रत्यासी पूर्व विधायक रामकृपाल कोल को बगल में खड़ा कर उनके कंधों पर हाथ रख कर जिताने के लिए आह्वान किया और पंजे के निशान पर बटन दबा कर भारी मतों से जिताने की अपील किया। प्रत्यासी रामकृपाल कोल ने जनता का अतिथियों की लाखों की भीड़ में पधारे नर नारी युवाओं बुजुर्गों का आभार जताया तथा 27 फरवरी को होने वाले मतदान के दिन पंजे के निशान वाली बटन दबा कर भारी मतों से जिताने की सर्वसमाज की जनता से अपील किया।

जनसभा में महाराष्ट्र सरकार की शिक्षा मंत्री वर्षा एकनाथ गायकवाड़, चित्रकोट चत्तीसगढ़ विद्वायक राजमन बेंजाम,सेखर बहुगुणा,अरुण त्रिपाठी,शिवबालक आदिवासी,कामरेड हरी राम पांडेय,जावेद ऊर्फी,बाजीराव खाड़े,एमपी के पूर्व मंत्री राजमणि पटेल,बबलू शुक्ल,उदितनारायण सिंह,पूर्व ब्लॉक प्रमुख राम अवध कुशवाहा, दीनेस चौधरी,रामनारायण मौर्य,आदि ने भी संबोधित किया। भाजपा के राम अवध कुशवाहा पूर्व ब्लॉक प्रमुख ने कहा की आज से अभी इसी वक्त भाजपा को छोड़ दिया। इसी तरह रामकृपाल के गुरु हरीराम पांडेय ने कहा की में अस्वस्थ चल रहा हूं,किंतु मैं यह रामकृपाल से आग्रह कर रहा हूं कि मैं रहूं या न रहूं किंतु अब तुम्हे कांग्रेस में ही रहना है पार्टी मत छोड़ना। क्योंकि जो तुम्हारा उद्देश्य है जनता से संघर्स का वह जारी रहेगा। यहां तुम्हारे जैसे लोग जनता की आवाज उठाने वाला झंडा डंडा लेकर चलने वाला कोई नेता नहीं है। राहुल गांधी हेलीकॉप्टर द्वारा पांच बजे शायंकाल जन सभा में पहुंचे थे। भीड़ इतनी थी घंटो आवागमन सुलभ होने में लगा।

## आदित्य ठाकरे जी का यूपी से लगा मोह : धर्म मिश्र

### कोरांव यूपी के लिए मुंबई में बनेगा सहायता केंद्र

**कोराव।** शिवसेना के चुनाव प्रभारी एवम अधिवक्ता धर्म मिश्र लीगल हेड एवं आब्जर्वर शिवसेना उत्तर प्रदेश ने बताया कि महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री के पुत्र कबीना मंत्री आदित्य ठाकरे जी का पहली बार यूपी पर आगमन हुआ,और यहां के लोगों से प्रभावित हुए। श्री मिश्र ने बताया कि ठाकरे साहब उत्तर भारतीयों के लिए मुंबई में आने पर उनकी सहायता के लिए एक सहायता केंद्र शिवसेना स्थापित करेगी। जिससे यूपी के कोराव के लोगों से संबंध प्रगाढ़ रहें। उन्होंने बताया कि ठाकरे साहब यहां पहली बार उत्तर प्रदेश की धरती पर आए। यहां के लोगों के व्यवहार और समस्याओं से भी वाकिफ हुए और आगे चल कर शिवसेना के माध्यम से विकास तथा सहायता के लिए कृत संकल्पता जताई। उन्होंने बताया कि ठाकरे जी मुंबई में शिवसेना द्वारा एक हेल्प सेंटर बनाया जायेगा। जिससे यहां की जनता को मुंबई आने पर उनकी किसी भी प्रकार की समस्याओं का निदान और मदद की जा सके। उक्त बातें श्री मिश्र ने इस प्रतिनिधि से एक अनौपचारिक वार्ता में कही।

## बार के पूर्व अध्यक्ष की पत्नी के देहांत पर दी गई श्रद्धांजलि

**सहसों।** फूलपुर तहसील के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं तहसील बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष शिव पूजन तिवारी की पत्नी का देहांत हो जाने पर पूरे अधिवक्ता समाज में शोक की लहर है। सहसों चौराहे पर शुक्रवार को वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश तिवारी पूर्व अध्यक्ष जिला बार एसोसिएशन प्रयागराज की अध्यक्षता में एक शोक सभा के माध्यम से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि गई तथा शोक व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखकर मृतक आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई। इस अवसर पर श्रद्धांजलि देने वालों में वरिष्ठ अधिवक्ता सृष्टि नाथ तिवारी, पूर्व तहसील बार अध्यक्ष रोशन लाल पटेल, संतोष शुक्ला, राजेश शुक्ला, अरविंद यादव, विजय कुमार यादव, कामता प्रसाद गुप्ता, शंकर सिंह, रमेश कुमार मिश्र, सौरव यादव, श्याम जी यादव, चंद्रभान यादव, राजीव वर्मा, प्रकाश चंद्र, एजाज अहमद, वसीम अख्तर , दिनेश कुमार, शिवम शुक्ला, रितेश पटेल, आदेश शुक्ला, शशिकांत मिश्रा, राधेश्याम तिवारी, देवराज उपाध्याय, इंद्रपति तिवारी, भूपेंद्र तिवारी, अशोक तिवारी, विजय कुमार तिवारी, रवि दुबे, हर्ष देव तिवारी, जीत लाल तिवारी सहित आदि अधिवक्ता एवं बुद्धिजीवी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

# भाजपा प्रत्याशी वाचस्पति के रोड़ शो में उमड़ी भीड़

अखंड भारत संदेश

**शुक्रवार को निकाली गई रोड़ शो में भारी जनसैलाब उमड़ा, जगह-जगह प्रत्याशी को क्षेत्रीय जनो ने माला पहनाया तथा जिन्दाबाद के नारे लगाए**

भाजपा प्रत्याशी वाचस्पति को रोड़ शो के दौरान स्वागत करते समर्थक

**घूरपुर।** भाजपा के बारा विधान सभा के प्रत्याशी वाचस्पति ने चुनाव प्रचार के अंतिम दिन शुक्रवार को निकाली गई रोड़ शो में भारी जनसैलाब उमड़ा। जगह जगह प्रत्याशी को क्षेत्रीय जनो ने माला पहनाकर और जिन्दाबाद के नारे लगा समर्थन दिए। रोड़ शो सुबह 9 बजे इरादतगंज से शुरू होकर घूरपुर, भीटा, कंजासा, बिरवल , तरहार रोड़, अमिलिया तरहार, लालापुर, रिंगवा मोड़, बारा, लोहगरा, शिवराज पुर, शंकरगढ़, नारीबारी, जारी, कौंधियारा, होते हुए सायांकाल तीन बजे गौहनिया मे समापन हुआ। रोड़ शो में योगेश शुक्ल, संतोष त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल, जिला मंत्री प्रकाश शुक्ल प्रचंड, मनोज गुप्त, गुलाब सिंह पटेल, मंगलेश्वर सिंह दिनेश मिश्रा, गोपाल दास गुप्ता, ज़िला मीडिया प्रभारी दिलीप चतुर्वेदी, ज़िला सह मीडिया प्रभारी राम कुमार शर्मा, अनूप केसरवानी, शिव राम सिंह परिहार, कमलेश त्रिपाठी, आदि दर्जनों पदाधिकारी शामिल रहे।

# चुनाव के आखिरी दिन उज्जवल रमण सिंह ने लोगों से विजय का मांगा आशीर्वाद

अखंड भारत संदेश

जन सभा में विजय का आशीर्वाद मागा उज्जवल रमण सिंह

**करछना।** विधानसभा क्षेत्र के समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी कुंवर उज्जवल रमण सिंह ने क्षेत्र के कई गांवो में ताबड़तोड़ जनसभाएं कर लोगों से विजय का आशीर्वाद मांगा करछना समेत बालापर कर्मा छीतूपुर घटवा सोनाई आदि जगहों पर जनसभाएं की तथा लोगों से क्षेत्र के विकास के लिए सपा प्रत्याशी के समर्थन में साइकिल पर वोट देने के लिए जन आशीर्वाद मांगा और वादा किया कि सपा की सरकार बनने जा रही है जिसमें सभी वर्गों का ख्याल किया जाएगा युवाओं को रोजगार से जोड़ा जाएगा महंगाई पर अंकुश लगाया जाएगा गुंडाराज खत्म किया जाएगा तथा क्षेत्र के चौमुखी विकास के लिए काम करने का आश्वासन दिया उनके साथ बड़ी संख्या में समर्थक ब्लाक प्रमुख सरोज द्विवेदी/ कमलेश द्विवेदी विजय राज सिंह ,हंसराज सिंह, दूधनाथ यादव, जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय बाबू यादव, क्षेत्र पंचायत सदस्य ज्ञानचंद हिमांशु सिंह ,संदीप यादव ,उदय राज कुशवाहा, समरजीत यादव संतोष कुमार यादव लल्लन यादव डीआर सिंह, राकेश सिंह, पीआर सिंह सहित बड़ी संख्या में सपा समर्थक मौजूद रहे।

# निष्पक्ष शांतिपूर्ण मतदान को चक्रव्यूह तैयार

अखंड भारत संदेश

**35 हजार से अधिक सुरक्षा संभालेंगे जवान, लगातार गश्त पर रहेंगी फ्लाइंग, सर्विलांस टीमें, शांतिपूर्ण मतदान के लिए तैनात फोर्स**


शांतिपूर्ण मतदान के लिए सुरक्षा में लगे जवान

**प्रयागराज।** निष्पक्ष और शांतिपूर्ण मतदान के लिए जिले में चक्रव्यूह जैसी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। मतदान की प्रक्रिया सात स्तरीय सुरक्षा घेरे में संपन्न कराई जाएगी। जिले के सभी पोलिंग बूथ पैरामिलिट्री के जवानों के जिम्मे होंगे और इसके बाद अलग-अलग स्तर पर सेक्टर, जोनल, पीएसी और पुलिस की टीमें सुरक्षा में मुस्तैद रहेंगी। चुनाव के लिए पैरामिलिट्री, पीएसी, पुलिस और होमगार्ड को मिलाकर 35 हजार से ज्यादा तैनात किए जाएंगे।पांचवें चरण में जिले की 12 विधानसभा सीटों के लिए मतदान 27 फरवरी को होना है। इसके मद्देनजर की जाने वाली सुरक्षा व्यवस्था का खाका तैयार कर लिया गया है। पुलिस अफसरों ने बताया कि मतदान प्रक्रिया के लिए सात स्तरीय सुरक्षा घेरा बनाया गया है। पहले स्तर की बात की जाए तो पोलिंग बूथ पर सीपीएमएफ (सेंट्रल पैरामिलिट्री फोर्स) के जवान तैनात होंगे।

**मतदान केंद्र पर रहेंगी सतर्क नज**

बूथ और मतदान केंद्रों की पूरी सुरक्षा पैरामिलिट्री के जवानों के ही जिम्मे होगी। इसके बाद के दो स्तरों पर सेक्टर और जोनल स्तर पर गठित टीमें तैनात होंगी जो सेक्टर व जोन की हर गतिविधि पर नजर रखेंगी। सेक्टर स्तर पर गठित टीम का नेतृत्व एसआई जबकि जोनल स्तर पर गठित टीम का नेतृत्व इंस्पेक्टर करेंगे। चौथे स्तर पर गठित टीम सीओ-एसडीएम के नेतृत्व में काम करेगी जो सर्किलवार अपने मतदान व मतदेय स्थलों पर सतर्क नजर बनाए रखेंगी इसके बाद एएसपी-एडीएम स्तर के अफसरों वाली टीम होगी जो शहर, यमुनापार व गंगापार में लगातार भ्रमणशील रहेंगी। छठे स्तर पर जिलाधिकारी और एसएसपी संयुक्त रूप से मतदान प्रक्रिया पर नजर रखेंगे। इसी तरह सातवें स्तर पर हर थानों में मोबाइल टीम होगी जो थाना प्रभारी के नेतृत्व में अपने-अपने क्षेत्र में भ्रमणशील यह सुनिश्चित करेंगी कि शांति व्यवस्था बनी रहे और कानून व्यवस्था कहीं भी बिगड़ने न पाए।

**हाईअलर्ट मोड पर रहेंगी 24 क्यूआरटी**

सेक्टर, जोनल व अन्य टीमों के साथ ही किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए त्वरित कार्रवाई बल(क्यूआरटी) भी गठित की गई हैं। जिले में कुल 24 क्यूआरटी बनाई गई हैं और प्रत्येक विधानसभा में दो-दो क्यूआरटी टीमें रहेंगी। विधानसभा क्षेत्र में कहीं भी अचानक कोई घटना होने पर क्यूआरटी तत्काल मौके पर पहुंचेगी और स्थिति को नियंत्रित करेंगी। यह टीमें थाने पर मौजूद रहकर हाई अलर्ट मोड पर रहेंगी।

**लगातार गश्त पर रहेंगी फ्लाइंग, सर्विलांस टीमें**

अन्य व्यवस्थाओं के अलावा चुनाव में माहौल बिगाड़ने, अवैध वस्तुओं के परिवहन और चुनाव आचार संहिता उल्लंघन के मामलों पर नजर फ्लाइंग और स्टैटिक सर्विलांस टीमें रखेंगी। प्रत्येक विधानसभा में नौ-नौ टीमें गठित की गई हैं और इस तरह से पूरे जिले में कुल 108-108 फ्लाइंग और स्टैटिक सर्विलांस टीमें लगातार काम कर रही हैं। पुलिस अफसरों ने बताया कि यह टीमें तीन शिफ्टों में लगातार 24 घंटे तक भ्रमणशील रहते हुए वाहनों की चेकिंग, नगदी, आभूषण और मादक द्रव्य की तस्करी के मामलों में कार्रवाई करेंगी।

**शांतिपूर्ण मतदान के लिए तैनात फोर्स**

**145 कंपनी पैरामिलिट्री तीन कंपनी एक प्लाटून पीएसी 15 एसपी-एएसपी 47 इंस्पेक्टर, 1637 एसआई 10836 सिपाही-दीवान 9041 होमगार्ड**

मतदान शांतिपूर्ण व निष्पक्ष तरीके से संपन्न हो, इसके लिए सुरक्षा व्यवस्था का खाका तैयार है। जवान सुरक्षा ड्यूटी में मतदान से एक दिन पहले यानी शनिवार शाम तक मुस्तैद हो जाएंगे। जबकि अन्य गठित टीमों ने शुक्रवार से ही काम शुरू कर दिया है। **-अजय कुमार, एसएसपी**

# प्रयागराज के सियासी चक्रव्यूह में फंसी भाजपा को सिर्फ मोदी मैजिक का सहारा

**मंडल कमंडल के बीच घूम रहा पांचवें चरण का चुनाव**

अनूप मिश्रा

**प्रयागराज।** गंगा जमुना सरस्वती की पावन संगम के ऐतिहासिक धरती पर भाजपा की राह पहले की तरह आसान नहीं रह गई है। सिर्फ प्रयागराज ही नहीं, मंडल की सभी सीटों पर पार्टी के प्रत्याशियों को सिर्फ मोदी मैजिक पर भरोसा है। अंतिम दो चरण के चुनाव में पूर्वांचल की ज्यादातर सीटों पर सपा-भाजपा के बीच सीधी लड़ाई है। समाजवादी पार्टी अबकी हर [illegible] सीट पर भाजपा और बसपा को पटखनी देती नजर आ रही है। इसी क्रम में प्रयागराज के 12 विधानसभा सीटों पर कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है ' सभी विधानसभा क्षेत्रों में सभी दलों के नेता एड़ी चोटी का जोर लगा दिए हैं अपने प्रत्याशी को जिताने के लिए, जनसभा रोड शो तथा अन्य प्रकार से मतदाताओं के बीच अपनी पकड़ मजबूत करने में लगे हुए हैं किसी क्षेत्र में भाजपा कहीं पर सपा तो कहीं पर कांग्रेस के प्रत्याशी रात दिन मेहनत कर चुनाव जीतने के जुगाड़ में लगे हैं ' मगर गांव मोहल्ले में चर्चा का विषय है कि इस बार का चुनाव सपा भाजपा के बीच ही रहेगा ' कहीं रोड शो तो कहीं जनसभा को संबोधित करते रह गए माननीय मगर जनता तो ठान कर ही बैठी है वोट किसको देना है।

**5 वर्ष में नेताओं के आरोप-प्रत्यारोप का आता है महाकुंभ**

चुनाव के दौरान अजीबोगरीब भाषण से नेताओं के चर्चे इस प्रकार बन जाते हैं जैसे चुनाव नहीं आपसी झगड़ा झंझट हो रहा हो मगर चुनाव बीतते ही सभी नेता ऐसे सब कुछ भूल जाते हैं जैसे कभी कुछ कहा ही नहीं है, मगर इस राजनीति के दलदल में आम जनता एक दूसरे नेताओं के झंडे लेकर नारे लगाते हुए सुबह से शाम कर देते हैं इसी तरह चुनाव का वक्त जाति धर्म कि राजनीति में निकल जाता है कोई नेता आम जनता के हित की बात करने के लिए तैयार नहीं होती है अगर कोई तैयार भी होता है तो सिर्फ चुनाव वादों की तरह ही रह जाता है।


प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित कैडेट

## समाजोत्थान के प्रति निरंतर प्रयत्नशील रहता है कैडेट : संजय श्रीवास्तव

### एनजीबीयू में रोवर्स-रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

**हनुमानगंज।** नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में आयोजित पंच दिवसीय रोवर्स-रेंजर्स प्रवेश प्रशिक्षण शिविर' शुक्रवार को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि यह प्रशिक्षण केवल पाँच दिन का ही नहीं है, अपितु प्रशिक्षुओं को इसमें बताई गई बातों को प्रतिक्षण याद रखना चाहिए और समाज के उत्थान के लिए हर समय यथासंभव प्रयत्नशील रहना चाहिए। यदि विद्यार्थी स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति और समाज के प्रति जागरूक रहेगा, तभी यह प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल और सार्थक होगा। प्रति कुलपति डॉ. सुरेश चन्द्र तिवारी ने कहा कि व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाना ही ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य है। निरंतर समाज की सेवा समर्पित भाव से करते रहना ही प्रशिक्षुओं का ध्येय होना चाहिए। रोवर्स-रेंजर्स के प्रशिक्षक राज नारायण शुक्ला ने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो अपना कार्य और सहायता स्वयं कर सके। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. विष्णु प्रसाद शुक्ल, डॉ. साधना त्रिपाठी, डॉ. शक्तिनाथ, श्रीमती रीता शर्मा,?श्री उमेश चन्द्र द्विवेदी तथा श्री वेद प्रकाश भगत (डीओसी-प्रयागराज) ने अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर प्रशिक्षुओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। संचालन डॉ. हिमांशु शेखर सिंह तथा धन्यवाद डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र द्वारा किया गया। डॉ. देव नारायण पाठक, डॉ. आशीष शिवम्, डॉ. पार्थसारथी, डॉ. छाया मालवीय, डॉ. रमेश चन्द्र मिश्रा, डॉ. वीरेन्द्र मणि त्रिपाठी, डॉ. प्रबुद्ध मिश्रा, डॉ. के.के. त्रिपाठी सहित अनेक शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।कार्यक्रम के पूर्व प्रशिक्षणार्थियों द्वारा एक मतदाता जागरूकता रैली निकाली।

# भयमुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, अपराधी मुक्त है अपना उत्तर प्रदेश : योगी आदित्यनाथ




अखंड भारत संदेश

**प्रतापपुर।** सीएम योगी आदित्यनाथ ने प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के सरायममरेज में एनडीए गठबंधन उम्मीदवार डाक्टर राकेशधर त्रिपाठी एवं हंडिया विधानसभा के प्रत्याशी प्रशांत सिंह के समर्थन में आयोजित जनसभा को शुक्रवार को संबोधित किया।उन्होंने संबोधन के दौरान सपा पर निशाना साधते हुए कहा कि 5 साल पहले यह उत्तर प्रदेश रोज नए दंगो की चपेट में आता था रोज दंगा होता था पूजा नहीं करने दिया जाता था, गुंडे आकर परेशान करते थे। समाजवादी पार्टी की सरकार में सरकार में 314 दंगे हुए थे सपा का बसपा से पहले के कार्यकाल में जगह-2 आंतकी विस्फोट हुए थे व्यापारियों की संपत्ति जला दी जाती थी।मुख्यमंत्री ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश देश के अंदर विकास की ऊंचाई को छू पा रहा। 2017 से पहले बिजली आती नहीं थी, आज जाती नहीं है। सबको बिजली पर्याप्त बिजली, पहले बिजली का भी जाति महजब हुआ करता था। ईद, मोहर्रम में बिजली आती थी, होली-दिवाली में बिजली नहीं आती थी आज भेद नहीं है। भयमुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, अपराधी मुक्त है अपना उत्तर प्रदेश कोरोना काल में भाजपा आयी हालचाल लेने के लिए। लोगों को फ्री में टेस्ट, फ्री में वैक्सीन, फ्री में उपचार मिला। सीएम योगी सपा-बसपा पर निशाना साधते हुए बोले कि भाजपा सरकार में दो बार फ्री में राशन मिलता है। लेकिन पहले इस राशन का सारा पैसा जाता था, सपा के गुंडों के हाथ में, बसपा की सरकार में हाथी का पेट इतना बड़ा था कि सारा राशन उसी में समा जाता था। लेकिन आज का राशन गरीब को मिल रहा है उज्जवला से जुड़े लोगों को होली, दीपावली में फ्री में गैस सिलेंडर उपलब्ध कराएंगे। बेटी की जन्म से लेकर स्नातक की पढ़ाई तक के लिए 25 हजार राशि हो गई।सभा को केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल, सांसद रमेश चन्द्र बिंद, जिला पंचायत अध्यक्ष वीके सिंह, पूर्व सांसद गोरखनाथ पांडेय सहित तमाम लोगों ने संबोधित किया कार्यक्रम का संचालन अमरनाथ यादव ने किया।

## मेजा में सीएम योगी ने जनसभा को किया संबोधित, वोटरों से की अपील



**मेजा रोड।** यूपी विधानसभा चुनाव 2022 के लिए प्रचार जारी है। इसी सिलसिले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज शुक्रवार को प्रयागराज पहुंचे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज पहुंचने के बाद मेजा के सोरांव गांव के आसरे तालाब पर स्थित मैदान में जनसभा को संबोधित किया।उन्होंने महर्षि भरद्वाज को याद करते हुए चुनावी रैली को संबोधित करने की शुरूआत की। सीएम योगी ने कहा कि, पहले अराजकता, सत्ता प्रायोजित दंगे, अपराध व अराजकता का तांडव होता था। कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करता था। 5 साल में भाजपा सरकार ने जो काम किया उससे न कोई दंगा-कर्फ्यू, न महिलाओं व व्यापारियों का उत्पीड़न हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि, "भाइयों बहनों मां गंगा जमुनी तहजीब व यहां के किसानों के परिश्रम से उर्वरक धरती मेजा में आपका स्वागत करता हूं। आज फिर से मेजा व कोरांव के मतदाता भाइयों बहनों का आभार व्यक्त करने आया हूं। उन्होंने कहा कि, पांच साल पहले मेजा व कोरांव और प्रदेश में क्या होता था यह किसी से छिपा नहीं है। पिछली सरकारों में किसान आत्महत्या करता था, गरीब भूख से मरता था, जंगल राज की स्थिति थी, अपराधी सत्ता पर हावी था और कानून का संचालन हिस्ट्रीशीटर करते थे। उन्होंने कहा कि, 2017 के पहले की सरकार ने दर्जनों आतंकियों की पैरवी की थी। भाजपा की सरकार में राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। ऐसा इसीलिए संभव हो सका, क्योंकि मेजा व कोरांव दोनों विधानसभा सीट पर भाजपा को जिताया था। योगी आदित्यनाथ ने कहा बुलडोजर सही करवा लिये हैं क्योंकि 10 मार्च के बाद गर्मी वालों की गर्मी दूर करना है।कुछ लोगों को विकास और बहन-बेटियों की सुरक्षा अच्छी नहीं लगती है । 2017 से 2022तक डबल इंजन की सरकार ने सब बदल दिया है और माफिया और गुंडागर्दी पर लगाम लगाई और विकास कराया। प्रयागराज में 2 दिन पहले भू माफिया से 2 करोड़ की जमीन जप्त की पहले बिजली जाति के आधार पर मिलती थी। ईद और मुहर्रम पर बिजली मिलती थी और दीपावली पर बिजली नहीं मिलती थी। आज बिना भेदभाव के शहरों में 24 घंटे और गांवों में 20 से 22 घंटे बिजली मिल रही है। हमारा मुद्दा राष्ट्रवाद और विकासवाद है। दंगो के वक्त जातिवादी कहां थे।रामभक्तों पर गोली चलते वक्त जातिवादी कहां थे।कुछ लोग अभी से लंदन का टिकट कटा रहे हैं। अब हिंदुस्तान और राष्ट्रवाद चलेगा। 10 मार्च के बाद फिर प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनेगी। जिन लोगों को भय था वही चुनाव की साजिश के तहत हिजाब मुद्दा लेकर आए। यूपी में हर व्यक्ति को सुरक्षा की गारंटी दी है। सी एम ने कहा कि राशन का पैसा,दावा का पैसा,वैक्सीन का पैसा इत्र वाले मित्र के पास जाता था।हमने उसके लिए भी बुलडोजर तैयार करके रखा है। उन्होंने युवाओं को नौकरी, कन्याओं को 25 हजार और शादी के लिए 51 से बढ़ाकर एक लाख रुपए देंगे। हर परिवार को नौकरी और रोजगार देंगे। इससे पहले विधायक नीलम करवरिया ने बुके देकर सी एम योगी का स्वागत किया।कार्यक्रम में इलाहाबाद की सांसद रीता बहुगुणा जोशी, जय शंकर पांडे,सुशील मिश्रा, गंगा प्रसाद मिश्रा, रामसेवक पटेल, शैलेश पांडे आशीष पटेल शिवा पांडे रोहिणी पांडे ,श्याम राज यादव,अखिलेश शुक्ला आदि ने सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन विधान सभा प्रभारी धनंजय पाण्डेय ने किया।इस मौके पर प्रमुख रूप से सुशील केसरी, अंकित केसरी, चंद्र मोहन सिंह, चांद मोहम्मद चंदू, कामेश्वर पटेल, नाथु गुप्ता, सिद्धांत तिवारी, मनीष उपाध्याय, रामकृष्ण जायसवाल, बीना मिश्रा, अशोक सिंह, विदुप अग्रहरी,संजीव करवरिया, नित्यानंद उपाध्याय,रामसेवक पटेल, मुन्नन शुक्ला,कमलेश मिश्र,पुष्कर तिवारी, मौजूद रहे।

# सपा की सरकार में करवाए जाते थे सांप्रदायिक दंगे: सतीश चंद्र मिश्र




**बारा।** बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीशचंद्र मिश्र ने कहा कि प्रदेश में जब-जब (वर्ष 2003 और 2012) समाजवादी पार्टी की सरकार आई है, तब-तब गुंडागर्दी, फिरौती, लूट, हत्या, डकैती, बलात्कार और दंगा-फसाद में इजाफा हुआ। समाजवादी पार्टी की सरकार ने 134 दंगे करवाए और फिर अपनी ही पीठ थपथपाई। सतीशचंद्र मिश्र ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में दंगे होते नहीं थे, बल्कि जान-बूझकर करवाए जाते थे। सपा-भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किसी में भी जनता हित नहीं है। राज्यसभा सांसद सतीश चंद्र मिश्र यमुनापार के कौंधियारा (बंदरहिया की बाग) में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बारा विधानसभा से बसपा प्रत्याशी डा. अजय कुमार के समर्थन में आयोजित जनसभा में सतीशचंद्र मिश्र ने कहा कि चार चरण में वोट पड़ चुके हैं। हाथी को एकतरफा जनसमर्थन मिल रहा है। आगामी दस मार्च को हमारी पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है। यहां की जनता डा. अजय कुमार को जिताकर हमारे विधायकों की गिनती बढ़ाने का काम करेगी। सतीशचंद्र मिश्र ने कहा कि डा. अजय कुमार ने अपने सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं दिया, इसीलिए बहन मायावती ने इनको टिकट दिया। यूपी की जनता तीनों सरकारों को देख चुकी है। 2007 में बसपा को, 2012 में सपा को और 2017 में भाजपा को। इससे जनता को पता चल गया है कि किसकी सरकार अच्छी थी। बहन मायावती ने सभी वर्ग का ध्यान रखा। कानून का राज कायम किया था। जनसभा में उमड़ी भारी भीड़ से उत्साहित बसपा प्रत्याशी डा. अजय कुमार ने कहा कि बसपा की लहर अब धीरे-धीरे आंधी का रूप धर रही है। आने वाली दस मार्च को बहन मायावती की अगुवाई में बसपा की सरकार बनने जा रही है। जनसभा को पूर्व मंत्री नकुल दुबे, मुख्य सेक्टर प्रभारी अशोक गौतम ने भी संबोधित किया। इस मौके पर राजेश पासी, गुलाब चमार, राकेश मिश्र, अभिषेक गौतम, समरजीत चौधरी, जगदंबा कुशवाहा, प्रधान विमल सिंह, सोहित केसरवानी, मोहन यादव, मुन्नू शुक्ला, शिवयश पांडेय, अभिषेक मिश्रा सहित हजारों लोग मौजूद रहे।

## सर्व समाज के साथ ब्राह्मण समाज पर चारों तरफ से हमला हो रहा- सतीश चन्द्र मिश्रा

**जंघई।** बसपा के राष्ट्रीय महासचिव सांसद सतीश चन्द्र मिश्रा द्वारा प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी इंजीनियर घनश्याम पांडेय के समर्थन में शुक्रवार को जरियारबीर बाबा मैदान मठोई जंघई में आयोजित जनसभा को संबोधित किया गया।जनसभा को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्र ने भाजपा और सपा को एक ही थैली के चट्टे-बट्टे बताया। कहा, यदि मायावती मुख्यमंत्री बनतीं हैं, तो खुशी दुबे समेत अन्य निरापराध लोगों के साथ हुए अन्याय को खत्म कर न्याय दिलाया जाएगा।उन्होंने कहा कि आज सर्व समाज के साथ ब्राह्मण समाज पर चारों तरफ से हमला हो रहा है। बसपा की सरकार में ब्राह्मण समाज का मान सम्मान वापस हुआ था। आज गिनती के लिए ब्राह्मणों का नाम लिया जाता है, जो भविष्य के लिए खतरा है। कहा कि सपा सरकार में गुंडई लूट तथा बलात्कार जैसी घटनाएं सामान्य बात रहा करती थी। भाजपा-सपा के लोग समाज के साथ दिखावा कर रहे हैं। उन्होंने याद दिलाया कि बसपा की सरकार में गुंडे-माफिया जेल में रहा करते थे। योगी पर बयानी हमला करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार में सबसे ज्यादा ब्राह्मणों की हत्या कराई गई है। भाजपा के लोग राम के नाम पर रुपया वसूली कर पार्टी चला रहे हैं। कहा, चार चरण के हुए मतदान के बाद अब मीडिया भी चुप्पी साध रही है और कहने लगी है, बीएसपी किसी से पीछे नहीं रहेगी।बसपा की सरकार में कराए गए विकास कार्यों को भी गिनाया। कार्यक्रम को पूर्व मंत्री नुकुल दुबे सहित तमाम लोगों ने संबोधित किया कार्यक्रम का संचालन बसपा जिलाध्यक्ष बाबूलाल भंवरा ने किया पूर्व ब्लॉक प्रमुख प्रतापपुर पुनीत पांडेय ने आगंतुकों के प्रति आभार जताया।

# मैं जन गण मन की बात करता हूं सपा गन की बात करती है : स्वतंत्र देव

**कोरांव।** प्रयागराज मैं जन गण मन की बात करता हूं, सपा गन की बात करती है। 10 मार्च को प्रदेश में पुनः योगी सरकार का गठन होने के घंटे भर बाद ही बचे खुचे गुंडे माफिया बोरिया बिस्तर समेट कर प्रदेश छोड़ कर भाग जाएंगे। यह बातें भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पूर्व परिवहन मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने कोरांव (265) सुरक्षित विधानसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार विधायक राजमणि कोल के समर्थन में आयोजित सरदार पटेल स्मारक स्थल धौखर में जनसभा को संबोधित करने के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने गरीबों के कल्याण व पक्की छत व इज्जत घर का हवाला देते हुए कहा कि एक मां से सवाल किया कि यह गरीबों को पक्की छत, मुफ्त राशन, गैस कनेक्शन, स्वास्थ्य कार्ड कौन दिया मां ने जवाब दिया मेरे बेटे योगी और मोदी ने दिया। आगे कहा कि जब माताएं मोदी और योगी को अपना बेटा मान ली हैं तो निश्चित तौर पर प्रदेश में पुनः योगी की सरकार बनने जा रही है। सपा बसपा के गुंडाराज को प्रदेश की जनता देख चुकी है। कहा कि राजमणि कोल को भरोसा दे दीजिए राजमणि चिंता मत करो आपको चुनाव जिता कर भेजने का काम करेंगे। हाथ के पंजे व साइकिल पर सवार होकर लक्ष्मी नहीं आती, लक्ष्मी कमल के फूल पर बैठकर आती हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने आगे कहा कि बहन बेटियां व माताएं बाहर न जाए इसके लिए प्रत्येक घरों को शौचालय माताओं बहनों को धुंआ न लगे इसके लिए निशुल्क गैस देने का काम किया गया। जनसभा में मौजूद रहीं फूलपुर की सांसद केसरी देवी पटेल ने भी अपने समाज के लोगों को आगाह करते हुए देश व राष्ट्र तथा क्षेत्र के विकास के लिए भाजपा सरकार बनाने की अपील की। विधायक राजमणि कोल ने उपस्थित मतदाताओं का आभार जताया। जनसभा को प्रमुख रूप से नगर पंचायत अध्यक्ष कोरांव नरसिंह कुमार केसरी उर्फ गोपाल जी, भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष अजीत प्रताप सिंह, जिला महामंत्री पुष्पराज सिंह, भारतीय किसान संघ काशी प्रान्त के मंत्री भोला सिंह, भारतीय किसान संघ काशी प्रान्त की महिला प्रमुख उर्मिला सिंह,बड़ोखर मंडल के महामंत्री अनिल मिश्र, रेवती पाल, महिला मोर्चा की जिला महामंत्री गीता सिंह, जिला मीडिया प्रभारी संतरा देवी निषाद, गोविंद मिश्र, रवि द्विवेदी, शशी द्विवेदी, बार एसोसिएशन कोरांव के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह पटेल, आनंद केसरी उर्फ मुन्ना सर्राफ सहित कई वक्ताओं ने संबोधित किया। अध्यक्षता बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष हेमावती कुमार सिंह व संचालन तारा शंकर पांडेय ने किया।

# पांच साल के आरव और 9 साल के असित साई का अनोखा कारनामा

**मतदान प्रतिशत अधिक हो इसके लिए बनाया वोटिंग अवेयरनेस वीडियो, 5 साल के आरव ने दी है अपनी आवाज जबकि 9 साल के असित है म्यूजिक कंपोजर**


उपहार के साथ आरव असित साई

**प्रयागराज।** उत्तर प्रदेश में हो रहे विधानसभा चुनाव में 4 चरण के मतदान हो चुके हैं जबकि पांचवें चरण का मतदान 27 फरवरी को है ऐसे में अब तक हुए शहरी क्षेत्रों के मतदान का वोटिंग परसेंटेज काफी कम देखा गया है। चुनाव आयोग लगातार लोगों से अपील कर रहा है कि लोग अपने मतों का प्रयोग करें और मतदान जरूर करें । इसी कड़ी में प्रयागराज के 5 साल के आरव साई ने वोटिंग अवेयरनेस सॉन्ग के माध्यम से लोगों से अपील की है । आरव ने अपने बड़े भाई असित साई के साथ सांग कंपोज किया है। आरव जिसकी उम्र 5 साल की है उसने गाना गाया है जबकि असित जिसकी उम्र 9 साल उसने गाने का म्यूजिक कंपोज किया है। दोनों ने बताया कि वोटिंग अवेयरनेस सॉन्ग बनाने का मकसद सिर्फ इतना है कि लोग मतदान के प्रति जागरूक हो भारी संख्या में लोग मतदान स्थल पहुचे जिससे वोटिंग परसेंटेज में इजाफा देखने को मिले। साईं ब्रदर्स द्वारा जारी किए इस गीत का विमोचन प्रयागराज के कस्टम एक्साइज के वरिष्ठ अधीक्षक संजीव कांत पांडे ने किया। संजीव पांडे जी ने कहा कि उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी कम उम्र के बच्चे मतदाता जागरूक गीत बनाएंगे और खुद ही गाएंगे । उन्होंने कहा कि उनको खुशी है कि उनके द्वारा इस गाने का विमोचन किया गया है जो आज से हर जगह सुनने को मिलेगा। करीब 1 मिनट के इस जागरूकता सॉन्ग में बच्चों ने अपनी मधुर आवाज के जरिए लोगों से अपील की है कि जिन की भी उम्र 18 साल से ऊपर है वह मतदान जरूर करें क्योंकि प्रदेश का भविष्य तभी सुरक्षित है जब अधिक से अधिक संख्या में लोग अपने मतों का प्रयोग करेंगे और बेहतर सरकार चुनेंगे।

**वोटिंग अवेयरनेस सांग के बोल :** उंगली पर जो लगी स्याही वह निशान नहीं है, वह है आप की शान, आपके अधिकारों का वही है सम्मान, करें प्रदेश का जो उत्थान, उसी को करना है मतदान,उसी को करना है मतदान,उसी को करना है मतदान" आरव और असित साईं के पिता वीरद्र कुमार का कहना है कि दोनों बच्चों का म्यूजिक के प्रति रुझान रहा है और एक दिन टीवी देखते हुए उनके छोटे बेटे आरव ने पूछा कि पापा यह चुनाव क्या होता है और बार-बर लोगों से मतदान करने की अपील क्यों की जा रही है इसी का जवाब देते हुए जब असित और आरव के पिता वीरेंद्र ने उनको समझाया तो उन दोनों बच्चों ने कहा कि क्यों ना हम भी लोगों को जागरूक करें एक गीत के द्वारा । जिसके बाद असित ने जिसकी उम्र 9 साल है उसने गीत को लिखा और आरव जिसकी उम्र 5 साल है उसने इस गीत को गाया ।पहली बार उनके पिता ने जब यह गीत सुना तो वह आश्चर्यचकित हो गए, जिसके बाद इस वोटिंग अवेयरनेस सॉन्ग की लॉन्चिंग के लिए उन्होंने प्रयागराज के इनकम टैक्स अधीक्षक एसके पांडे से बात की। एसके पांडे जी को जैसे ही पता चला कि 5 साल के आरव ने इस गीत को गाया है तो उन्होंने फौरन ही विमोचन के लिए राजी हो गए। ऐसे में आज से हर जगह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इस गीत को लांच किया जा रहा है। आरव और असित साई की इस अनोखे गीत को लेकर के उनके पिता वीरेंद्र कुमार से खास बातचीत अखंड भारत संदेश के वरिष्ठ रिपोर्टर सैयद आकिब रजा ने मुलाकात करके की गौरतलब है कि प्रदेश के महानगरों में वोटिंग प्रतिशत काफी कम देखने को मिला है। हालांकि अब ये कहना गलत नही होगा कि छोटे बच्चों द्वारा शुरू की गई ये मुहिम होने वाले मतदान में जरूर असर डालेगी। आज से ही प्रयागराज के साथ साथ वोटिंग अवेयरनेस सांग को डिजिटल प्लेटफार्म पर लांच किया जा रहा है ।

# सपा कार्यकताओं ने रैली निकाल किया शक्ति प्रदर्शन

अखंड भारत संदेस



**करछना।** शुक्रवार को चुनाव प्रचार के आखिरी दिन समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने विजय राज सिंह राजू पूर्व ब्लाक प्रमुख करछना तथा ग्राम प्रधान हिन्दुपुर मुख्तार अहमद के नेतृत्व में बाइक रैली निकालकर करछना विधानसभा के समाजवादी पार्टी प्रत्याशी उज्जवल रमण सिंह जी के समर्थन में शक्ति प्रदर्शन किया बाइक रैली करछना ब्लॉक से प्रारंभ होते हुए करछना तिराहा हिंदूपुर बेला चौराहा करेहा पूरवा खास रामपुर बीरपुर पचदेवरा नहर कोठी होते हुए करछना ब्लॉक के सामने समाप्त हुई कार्यकताओं ने आ गई है साइकिल, छा गई है साइकिल उज्जवल रमण सिंह जिंदाबाद अखिलेश यादव जिंदाबाद अबकी बार 300 पार, साइकिल वाले आएंगे रोजगार दिलवाएंगे के नारों के साथ भ्रमण किया। इस अवसर पर शाहबाज हक ने ?कहा भाजपा से जनता नाराज और परेशान हैं जनता ने मन बना लिया है समाजवादी सरकार बनानी है उन्होंने कहा आगामी 27 तारीख को साइकिल का बटन जनता ऐसा दबाएगी की भाजपा का सुपाड़ा ही साफ हो जाएगा। तथा समाजवादी पार्टी के जिला सचिव डॉ गुलाम मुस्तबा उर्फ लाल मियां ने कहा की अभी तक हुए चार चरणों के चुनाव में जनता ने स्पष्ट साइकिल को रफ्तार दी है और दोहरा शतक लगा दिया है पांचवें चरण में ऐतिहासिक बहुमत सपा को मिल जाएगा । कार्यक्रम में विजय राज सिंह राजू पूर्व ब्लाक प्रमुख करछना डॉ गुलाम मुस्तबा उर्फ लाल मियां जिला सचिव समाजवादी पार्टी, मुख्तार अहमद ग्राम प्रधान हिन्दुपुर, युवा सपा नेता शाहबाज हक, केशव विश्वकर्मा, विकास सोनी,फैसल आशीष यादव, असद सिद्दीकी, ब्रिजेश यादव, समेत कई लोग मौजूद रहे।

## प्रचार के अंतिम दिन अपना दल और सपा ने दिखाई ताकत

**अद (एस) प्रत्याशी ने किया रोड शो, सपा प्रत्याशी ने भारी जनसमूह के साथ पैदल भ्रमण कर मांगा जनसमर्थन**

**शंकरगढ़।**, चुनाव प्रचार के अंतिम सभी राजनैतिक दलों ने पूरी ताकत लगा दी। सुबह से शूरू हुआ रैली, जनसंपर्क और रोड शो का सिलसिला शाम तक अनवरत चलता रहा। यमुनापार के विधानसभा बारा से अपना दल (एस) के प्रत्याशी डा. वाचस्पति और समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अजय भारती उर्फ मुन्ना ने भी जनसमर्थन पाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। प्रचार के अंतिम दिन भाजपा के सहयोग अपना दल (एस) के प्रत्याशी डा. वाचस्पति ने भारी जनसमूह के साथ घूरपुर फ्लाईओवर से रोड शो निकाला। फ्लाइ ओवर से निकला रोड शो भीटा, कंजासा, परवेजाबाद, नीबी, लोहगरा, कपारी, शिवराजपुर, शंकरगढ़, चुंदवा, रानीगंज, कल्याणपुर, जूही, सुरवल साहनी, जारी, कौंधियारा, पटेलनगर सहित अन्य स्थानों पर होते हुए गौहनिया कार्यालय पहुंचकर समाप्त हुआ। रोड शो के दौरान डा. वाचस्पति ने कहा कि प्रदेश में फिर से भाजपा की सरकार बनने जा रही है। उनके साथ योगेश शुक्ल, डा. विनोद त्रिपाठी, संतोष त्रिपाठी आदि मौजूद रहे। दूसरी तरफ भाजपाइयों ने नगर पंचायत शंकरगढ़ के सभी वार्डों में घर-घर जाकर संपर्क किया। संपर्क अभियान में गोपालदास गुप्ता, अनूप केसरवानी, मूलचंद्र गुप्ता,सुधा गुप्तता, नरेंद्र गुप्ता, रामानुज गुप्ता, सार्थक गुप्ता, सभासद सुजीत केसरवानी, डा. प्रेमचंद्र, बल्लू केसरवानी आदि शामिल रहे। दूसरी तरफ समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अजय भारती उर्फ मुन्ना ने बारा विधानसभा के विभिन्न गांवों का तूफानी दौरा किया। भ्रमण के दौरान सपा प्रत्याशी का काफिला नगर पंचायत शंकरगढ़ भी पहुंचा। यहां पर सपा प्रत्याशी ने समर्थकों के साथ सभी वार्डों में घर-घर जाकर लोगों से सपा के पक्ष में मतदान की अपील की। उन्होंने क्षेत्र के कपारी, जोरवट में भी पैदल भ्रमण कर जनसंपर्क किया। सपा प्रत्याशी अजय भारती के साथ सचिन वैश्य, कामदप्रताप सिंह, पूर्व प्रमुख गुलाबकली, अतुल यादव, शैलेंद्र सिंह, डा. लालसाहब यादव, मुलायम सिंह यादव, पंचेश्वर त्रिपाठी, अनीश खान समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

# नाम के समाजवादी हैं अखिलेश, संरक्षण देते हैं आतंकवादियों को: योगी आदित्यनाथ

## पट्टी में आयोजित जनसभा को मुख्यमंत्री ने किया सम्बोधित

अखंड भारत संदेश

**पट्टी, प्रतापगढ़।** बुधवार को सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पट्टी विधानसभा में हजारों की संख्या में मौजूद जनसभा को संबोधित किया। समाजवादी पार्टी पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि नाम तो समाजवादी है लेकिन काम आतंकवादी है। उन्होंने कई घटनाओं का जिक्र करते हुए समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव को आतंकी संरक्षण देने का आरोप लगाया। भाजपा सरकार द्वारा जन कल्याणकारी योजनाओं का जिक्र करते हुए आम जनमानस से जुड़ी हुई योजनाओं के संबंध में बताया।

पट्टी में आयोजित जनसभा में बोलते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

उन्होंने बताया कि समाजवादी पार्टी गुंडों की पार्टी है जिसकी सरकार में तमाम प्रकार के दंगे फसाद और सामाजिक समरसता में खलल डालने वाला काम करने वाली यही समाजवादी लोग हैं। उन्होंने कहा कि 5 साल में उत्तर प्रदेश में अपराध करने वाले आज या तो जेल में हैं या फिर प्रदेश छोड़ चुके हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार बनने पर 12वीं पास करने के बाद प्रवेश लेने पर, उज्जवला योजना मुफ्त में राशन युवाओं को रोजगार राष्ट्रवाद और हिंदुत्व पर भी निशाना साध कर विधानसभा पट्टी के भाजपा प्रत्याशी राजेंद्र प्रताप सिंह मोती सिंह के पक्ष में मतदान करने की अपील की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व मंत्री शिवाकांत ओझा, रानीगंज भाजपा प्रत्याशी धीरज ओझा, पट्टी नगर अध्यक्ष खेदनलाल जायसवाल, पूर्व नगर अध्यक्ष जुग्गीलाल जायसवाल, ब्लाक प्रमुख नंदन सिंह, ब्लाक प्रमुख सुशील सिंह, कमलाकांत यादव, ब्लाक प्रमुख आसपुर देवसरा कमलाकांत यादव, मीडिया प्रभारी विनोद पांडे, निषाद राज पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद सहित हजारों लोग कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व नगर अध्यक्ष रामचरित्र वर्मा ने किया।

# भाजपा सरकार में गुण्डा व माफिया जेल की सलाखों में भेजे गये : जे पी नडडा

## एमएमपीजी डिग्री कालेज में आयोजित जनसभा में बोलते राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

**परियावां, प्रतापगढ़।** एमएमपीजी डिग्री कालेज कालाकांकर में बुधवार को लगभग साढ़े बारह बजे भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नडडा का जैसे ही हेलीकाप्टर उतरा, पूरा जन समूह नारे लगाने लगा। मंच पर राज्य मंत्री सुनील बरनाला, जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्रा, कुंडा प्रत्याशी सिन्धुजा मिश्रा सेनानी, राजकुमारी रत्ना सिंह ने फूलों का गुलदस्ता व अंग वस्त्र भेंट किया।

कालाकांकर में आयोजित जनसभा में राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत करते भाजपाई।

इस दौरान मंच पर आसीन अन्य गणमान्य लोगों ने फूलों की माला पहनाकर नडडा का जोरदार स्वागत किया। मंच पर आसीन राजनीतिक नेताओ ने अपने अपने विचार व्यक्त किये। जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नडडा ने उपस्थित जनता जनार्दन का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि भारत के प्रधानमंत्री मोदी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी ने जो कहा, उसे कर दिखाया। प्रदेश के गुंडा माफियाओं को जेल के सलाखों में भेज दिया। योगी राज में एक भी दंगे नही हुये जब कि सपा सरकार में कई दंगे हुए। जनसभा में मौजूद जनसमूह से अपील किया कि कुंडा व बाबागंज विधान सभा के भाजपा प्रत्याशी सिन्धुजा मिश्रा सेनानी व केशव पासी को विजयी बनाएं। भाजपा सरकार ने सबका साथ सबका विकास किया। किसी के साथ भेदभाव नही किया। इस मौके पर सतीश चैरसिया, भूपेंद्र पाण्डेय, अभय प्रताप सिंह पप्पन त्रिभुवन नाथ मिश्र, डॉ0 घनश्याम यादव राजभवन मैनेजर, महाराज जय सिंह सिसौदिया सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

# जिला कारागार का विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने किया वर्चुअल निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के दिशा निर्देश व जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजय शंकर पाण्डेय के मार्गदर्शन में जिला कारागार का सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार त्रिपाठी द्वारा वर्चुअल निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान उपजेलर सुनील कुमार द्विवेदी द्वारा अवगत कराया गया कि जिला कारागार में 1116 बन्दी निरूद्ध है जिसमें 967 विचाराधीन बन्दी है, इसमें महिला 21 तथा 895 पुरूष बन्दी शामिल हैं। सिद्धदोष बन्दियों की संख्या 129 बतायी गयी जिसमें 06 महिला बन्दी व 123 पुरूष बन्दी शामिल हैं। जेल अस्पताल में कुल 10 बन्दियों का उपचार चल रहा है। यह भी बताया गया कि जिला कारागार में कोई बन्दी कोरोना पाजिटिव नहीं है, जिला कारागार को पूरी तरह से सेनेटाइज कराया जा चुका है। प्रतिदिन जेल में बन्दियों के लिये कोरोना जांच की व्यवस्था है। जिला कारागार में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों को कोरोना की बूस्टर डोज लगा दी गयी है। वीडियो कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से बन्दी सचिन सरोज, हरिओम यादव, पप्पू कुमार गौड़, शारदा प्रसाद ने बताया कि उसके पैरवी के लिये निजी अधिवक्ता है जो मुकदमें की पैरवी करते है। इस अवसर पर सचिव द्वारा बन्दियों को उनके अधिकारों एवं प्लीबारगेनिंग के सम्बन्ध में विधिक जानकारी देते हुये जागरूक किया गया। उपजेलर द्वारा जानकारी दी गयी कि जेल में निरूद्ध सभी सिद्धदोष बन्दियों की अपील हो चुकी है जो सम्बन्धित न्यायालयों में विचाराधीन है। वर्चुअल जेल निरीक्षण के दौरान जेल अधिकारी को निर्देशित किया गया।

# विजय मिश्रा की ऐतिहासिक जीत के लिए कार्यकताओं ने भरी हुंकार

अखंड भारत संदेश

**गोपीगंज।** शुक्रवार को गोपीगंज नगर के पंडित गुलाब धर मिश्र इंटर कॉलेज में प्रगतिशील मानव समाज पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन संपन्न हुई जिसमें विधायक विजय मिश्रा की ऐतिहासिक जीत के लिए वक्ताओं ने कहां की आगामी 10 मार्च को जनता के ऐतिहासिक फैसले को देखकर विरोधी सभी दलों की बोलती बंद होगी। प्रगतिशील मानव समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद बिंद ने ज्ञानपुर विधानसभा के कार्यकर्ता सम्मेलन में कही। गोपीगंज नगर के पंडित गुलाब धर मिश्र इंटर कॉलेज में आयोजित पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रेमचंद बिंद ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की योगी सरकार में गुंडागर्दी चरम सीमा पर है बेरोजगार नौकरी की तलाश में दर-दर भटक रहे हैं। कहा कि सरकार के गुंडे चाहते थे कि विधायक चुनाव ना लड़का है। भाजपा और सपा ने हमें छला है और उसके इस विश्वासघात का जवाब ज्ञानपुर की जनता विजय मिश्रा को ऐतिहासिक जीत दर्ज करा कर देगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का गरीबों को दिए जाने वाली योजना महज एक छलावा है करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी अस्पताल में गरीबों को सुविधाएं नहीं मिल रही है 5लाख का कार्ड पकड़ा दिया गया है, लेकिन गरीब उसकी सुविधा नहीं पा रहा है। कार्यकर्ता सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि एमएलसी रामलली मिश्रा ने कहा कि मेरे पति विधायक विजय मिश्रा को सरकार जिले से 600 किलोमीटर दूर रख कर बेवजह उन्हें परेशान कर रही है हमारे परिवार को बराबर प्रताड़ित कर के यह चाहती थी कि विजय मिश्रा चुनाव न लड़े आज हम ज्ञानपुर की जनता से आंचल फैला कर वोट की भीख मांग रहे हैं क्योंकि विजय मिश्रा का सपना है कि अंतिम सांस तक ज्ञानपुर की जनता की सेवा कर सकूं। आज हमें खुशी हो रही है की कठिन परिस्थिति में भी ज्ञानपुर की जनता हमारे साथ खड़ी है। महाराष्ट्र के शिवसेना के संगठन गुलाब दुबे ने कहा कि कार पलटने की बात तो दूर हेलीकॉप्टर पर बैठ विधायक विजय मिश्रा आसमान की सैर करेंगे जो स्वयं विजय का प्रतीक हो उसे कौन हरा सकता है अब ज्ञानपुर की जनता उनके राज्य तिलक की तैयारी करें।

मंच पर मौजूद कार्यकर्ता।

विधायक के पुत्री रीमा पांडे ने मंच पर हाथ जोड़ उपस्थित जनसमूह से कहा कि शासन और प्रशासन से हमें न्याय मिला नहीं लेकिन ज्ञानपुर की जनता हमारे साथ है और जनता ही न्याय करेगी मुझे पूर्ण विश्वास है कि 7 मार्च को विधायक विजय मिश्रा को एक एक वोट देकर जनता उनके कर्ज को चुकाएगी।

मंच पर उपस्थित वक्ताओं ने कहा कि 10 मार्च को ज्ञानपुर एक नया इतिहास लिखेगा जब पूर्वांचल के नायक विजय मिश्रा विधायक होंगे। कार्यकर्ता सम्मेलन में प्रमुख रूप से अमन शुक्ला दीपिका बिंद बिंदु बिंदु राजित राम यादव रेहान अहमद अजय पांडे जे पी राम सागर चौरसिया अशोक शुक्ला हजारी लाल बिंद सुशील बिंद विनोद द्विवेदी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए कार्यक्रम का संचालन शिवसागर शुक्ला द्वारा किया गया

# धीरज ओझा नहीं अनुप्रिया पटेल लड़ रही है चुनाव: अनुप्रिया

## रानीगंज में आयोजित जनसभा में शामिल हुईं केन्द्रीय मंत्री

अखंड भारत संदेश

**रानीगंज, प्रतापगढ़।** चार चरण के चुनाव में भाजपा, अपना दल (एस) एवं निषाद पार्टी के पक्ष में लोगों ने जमकर मतदान किया है। सपा एवं अन्य दलों का जनपद प्रतापगढ़ ही नही अपितु सम्पूर्ण प्रदेश से सूपड़ा साफ हो जाएगा। यह बातें अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष/केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल रानीगंज के बभन मई में भाजपा प्रत्याशी धीरज ओझा के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रही थीं।

उन्होंने कहा कि अपना दल में जिसे विधायक दो बार बनाया उसने कार्यकताओं का मनोबल गिराते हुए पार्टी के विरोध में कार्य किया। अब वह यहां से सपा की साइकिल पर चढ़कर चुनाव लड़ रहा है। उसे सबक सिखाने का समय आ गया है। अनुप्रिया पटेल ने कहा कि 27 तारीख को भूल जाना कि धीरज चुनाव लड़ रहा है बल्कि यह याद रखना कि यहां से अपना दल अनुप्रिया पटेल चुनाव लड़ रही हैं। भाजपा प्रत्याशी धीरज ओझा के बारे में कहा कि सरकारी खजाने से पैसा लाकर उन्होंने रानीगंज का विकास। एक बार इन्हें पुनः

बभनमई में आयोजित जनसभा में बोलतीं केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल

## उमडे.सैलाब से उत्साहित अनुप्रिया ने कहा कि जनता बता रही है परिणाम

अखंड भारत संदेश

**लालगंज, प्रतापगढ़।** लालगंज में भाजपा प्रत्याशी नागेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ छोटे सरकार के समर्थन में आयोजित सभा में उधर लालगंज के नया पुरवा में जनसभा को संबोधित कर रही अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने कहा कि प्रदेश की योगी सरकार में अराजक तत्वो का खातमा हुआ है। इससे पूर्व नागेश प्रताप सिहं ने माल्यार्पण कर अपना दल एस की मुखिया का स्वागत किया। नागेश सिंह ने जनता का आभिवादन करते हुए आशीर्वाद मांगा।

उन्होंने कहा कि भाई के लिए आज एक बहन आप सब से आशीर्वाद मांगने आई है। आप लोगो द्वारा एक बहन का एक बेटी का स्वागत ही बता दिया कि एक बेटी, एक बहन की अर्जी को मेरी माताओं, बहनों, भाईयों व दादाओं ने स्वीकार कर लिया। इस दौरान मंच पर उपस्थित सांसद संगमलाल ने रामपुर खास में बदलाव के लिए छोटे सरकार को समर्थन करने की जनता से अपील की। पूर्व सांसद राजकुमारी रत्ना सिंह व राजा अनिल प्रताप सिह ने भी जनसभा को संबोधित किया। इस मौके पर पूर्व प्रमुख रमेश सिंह, ओम प्रकाश पाण्डेय, सुजीत तिवारी, संजीत तिवारी, शिवा पाण्डेय, विनोद सिह आदि ने मंच पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। विधायक बनाइए। कार्यक्रम में सांसद संगम लाल गुप्ता भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा अपना दल जिला अध्यक्ष बृजेश पटेल, निषाद पार्टी के जिलाध्यक्ष अरविंद निषाद, भाजपा जिला महामंत्री आशीष श्रीवास्तव, विधानसभा प्रभारी सतीश द्विवेदी, ललित तिवारी आदि उपस्थित रहे।

# ओपीएस के लिए संसद घेरने की तैयारी: मेंस

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** पुरानी पेंशन की मांग को लेकर चुनाव बाद संसद घेरने की तैयारी है। बुधवार को नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन की ब्रांच कार्उंसिल में इसके संकेत मिले हैं। नेताओं का कहना कि मार्च बाद घेराव की तैयारी है। केंद्रीय नेतृत्व के निर्णय के बाद आंदोलन को धार मिलेगी।

मेस यूनियन की प्रतापगढ़ ब्रांच की बैठक में कर्मचारियों की समस्याओं जैसे नाइट ड्यूटी भत्ता, यात्रा भत्ता, सीयूजी के मुद्दे पर बात हुई। कर्मचारियों ने इन मुद्दों को जोरदार तरीके से उठाया। कर्मचारियों ने पुरानी पेंशन का भी मुद्दा उठाया। कहा कि राजस्थान सरकार पुरानी पेंशन देने जा रही है। उन्होंने यूनियन पर पेंशन का हक दिलाने के लिए दबाव बनाया। ब्रांच मंत्री अनिल शुक्ला ने कहा कि इसी साल मार्च महीने में पुरानी पेंशन के मुद्दे पर यूनियन सड़क से लेकर संसद तक आंदोलन करेगी। इसकी तैयारी चल रही है। मीटिंग में अजय आंनद, मोहम्मद अनीस, मनीष पांडे, राज किशोर, सलामत उल्ला, विनय मिश्रा समेत कई कर्मचारी नेता मौजूद थे।

### आज आएंगे अखिलेश सिंह यादव

**प्रतापगढ़।** गुरुवार को सपा मुखिया अखिलेश सिंह यादव प्रतापगढ़ आएंगे। वे दो बजे कुण्डा विधान सभा क्षेत्र के बूढ़ापुर छेऊंगा, तीन बजे विश्वनाथगंज विधान सभा क्षेत्र के सरियापुर नौबस्ता, चार बजे सदर विधान सभा क्षेत्र के मन्दाह का मैदान में आयोजित जनसभा को सपा प्रत्याशियों के पक्ष में सम्बोधित करेंगे। इस दौरान वह सदर, रानीगंज व पट्टी क्षेत्र में कार्यकताओं से भेंट भी करेंगे।

# मतदान केन्द्रों पर विद्युत आपूर्ति निर्बाध रूप से सुनिश्चित की जाए : डीएम

## मतदान दिवस 27 फरवरी को रहेगा सार्वजनिक अवकाश

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 के अन्तर्गत जनपद में 27 फरवरी 2022 को मतदान होना है। जनपद के सभी मतदान केन्द्र/मतदेय स्थलों पर न्यूनतम मूलभूत आवश्यक सुविधा के अन्तर्गत विद्युत की आपूर्ति निरन्तर बना रहना आवश्यक है।

उन्होंने विद्युत वितरण खण्ड के समस्त अधिशासी अभियन्ता को निर्देशित किया है कि मतदान के एक दिवस पूर्व से ही निर्वाचन समाप्ति तक जनपद के सभी मतदान केन्द्र/मतदेय स्थलों पर न्यूनतम मूलभूत आवश्यक सुविधा के अन्तर्गत विद्युत आपूर्ति निर्बाध रूप से सुनिश्चित किया जाये। यदि मतदान के एक दिवस पूर्व तथा मतदान के दिवस में किसी मतदेय स्थलों पर विद्युत आपूर्ति बाधित होती है तो सम्बन्धित विद्युत वितरण खण्ड के अधिशाषी अभियन्ता पूर्णतया उत्तरदायी होगें, साथ ही निर्वाचन जैसे महत्वपूर्ण कार्य में बाधा उत्पन्न करने के दृष्टिगत सम्बन्धित विद्युत वितरण के अधिशाषी अभियन्ता के विरूद्ध कठोर कार्यवाही अमल में लायी जायेगी। उन्होने कहा कि दिये गये आदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता को गम्भीरता से लिया जायेगा। उधर जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि उत्तर प्रदेश शासन श्रम अनुभाग-3 लखनऊ के निदेर्शानुसार विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 में मतदान दिवस पर कारखानों में कार्यरत कर्मकारों को मतदान की सुविधा उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 की धारा-135 (ख) के प्राविधानों के अनुसार अविरल प्रक्रिया वाले कारखानों में कार्यरत समस्त कर्मचारियों को मतदान का उपयुक्त अवसर प्रदान करने तथा अनविरल प्रक्रिया वाले कारखानों में मतदान के दिवस को सार्वजनिक अवकाश प्रदान किया जायेगा तथा अगले साप्ताहिक अवकाश के दिन उनसे कार्य नही लिया जायेगा। उन्होने बताया है कि जनपद प्रतापगढ़ में पंचम चरण में 27 फरवरी 2022 (दिन रविवार) को मतदान है।

# देश की सत्ता भाजपा के हाथ में सुरक्षित नहीं: भूपेश बघेल

## मदाफरपुर बाजार में कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन में मांगा वोट

मदाफरपुर में आयोजित जनसभा में बोलते छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल।

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** बुधवार को कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का भी हेलीकाप्टर प्रतापगढ़ में उतरा। मुख्यमंत्री के साथ ही कांग्रेस के दिग्गज नेता प्रमोद तिवारी भी मौजूद रहे। मदाफरपुर बाजार के पास सदर व पट्टी विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को सम्बोधित किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि देश की सत्ता भाजपा के हाथ में सुरक्षित नहीं है। उन्होंने कांग्रेस सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस सरकार बनाने का जनता से आहवान किया। उन्होंने कहा कि प्रियंका गांधी के प्रतिज्ञा पत्र को आप लोग पूरा करें। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशियों को जिताने का आहवान किया। इस दौरान जनसभा के दौरान प्रमोद तिवारी ने आवारा पशुओं से किसानों को हो रही समस्याओं का जिक्र करने के साथ ही भाजपा पर जमकर निशाना साधा। इस दौरान पट्टी की सुनीता पटेल, सदर के प्रत्याशी नीरज त्रिपाठी, रानीगंज के प्रत्याशी अब्दुल वाहिद समेत जनपद के सभी कांग्रेस प्रत्याशियों के पक्ष में जनता से मांगा वोट। इस दौरान मंच पर मुख्यमंत्री भूपेश के साथ ही प्रमोद तिवारी, नीरज त्रिपाठी, सुनीता पटेल, अब्दुल वाहिद, श्यामकिशोर शुक्ल समेत कई कांग्रेसी नेता रहे मौजूद।

# बसपा प्रत्याशी आशुतोष त्रिपाठी ने किया व्यापक जनसंपर्क

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** बसपा प्रत्याशी आशुतोष त्रिपाठी ने बुधवार को टेकार में जनसभा की। उन्होंने कहा कि सदर विधान सभा का सबसे बड़ा मुद्दा सही प्रत्याशी का चुनाव है। बहुत सी सरकारें आईं और गईं लेकिन सदर की सूरत नहीं बदल सकी। न तो नगर में सीवर लाइन बन सकी न गांवों में सड़कें गड्ढा मुक्त हो सकीं। वर्तमान सरकार चिकित्सा और रोजगार के मुद्दे पर भी असफल साबित हुई। सदर के विधायक जीतने के बाद जनता से मुंह मोड़ लेते हैं इसलिए जनता जनार्दन को बसपा के पक्ष में मतदान करना चाहिए, ताकि उनका विधायक जनसुलभ और उनके सुख दुःख का साथी बन रह सके। इस दौरान बसपा प्रत्याशी ने रूपापुर, तिवारीपुर, रामापुर कोंहडोर, क्षमा का पुरवा, पूरे कोलाहल और प्रतापगढ़ नगर में जनसंपर्क किया। इस दौरान जिसमें कोमल दत्त मिश्र, सुशील श्रीवास्तव, अरशद खान, प्रशांत सिंह, सुशील सागर, बाबी पांडेय आदि ने सहभाग किया।

## खबर संक्षेप

### बिन पेंदी के लोटा फिर साबित हुए चर्चित माफिया

**कौशाम्बी।** विभिन्न राजनीतिक दलों में अपना वर्चस्व कायम करने वाले यमुना नदी किनारे क्षेत्र के एक चर्चित माफिया हमेशा सुर्खियों में रहना चाहते हैं यह माफिया लगातार विधायक बनने का ख्वाब देख रहे हैं लेकिन सपा बसपा भाजपा कांग्रेस सहित विभिन्न राजनीतिक दल ने उन्हें टिकट देने से इंकार कर दिया जिस पर माफिया निर्दलीय चुनाव लड़ विधानसभा पहुंचना चाहते हैं लेकिन जनता ने उन्हें उनके व्यवहार कुशलता और उनकी हैसियत बता दी है मतदाताओं के बीच माफिया की पकड़ नहीं है हमेशा अपने गुरूर में रहने वाले यह माफिया जाने जाते हैं विधायक का ख्वाब रखने वाले इस माफिया ने मतदान के 48 घंटे पूर्व फिर करवट बदलना शुरू कर दिया है और माफिया ने भारतीय जनता पार्टी के एक प्रत्याशी को समर्थन देने की अपील करना शुरू कर दिया है जनता ने माफिया को बिन पेंदी का लोटा कहना शुरू कर दिया है।

# प्रचंड बहुमत के साथ केशव को जिताना है : अमित शाह

अखंड भारत संदेश

**कौशांबी।** केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सिराथू विधानसभा क्षेत्र के सायरा में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के समर्थन में एक चुनावी सभा में उमड़ी विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि प्रचंड बहुमत के साथ डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को जिताना है उन्होंने इस मौके पर उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए सवाल पूछा है कि केशव मौर्या को प्रचंड बहुमत से जिताओगे कि नहीं योगी को मुख्यमंत्री बनाओगे कि नहीं मोदी के हाथ मजबूत करोगे कि नहीं मेरे साथ हाथ उठाओ और मेरे साथ बोलो भारत माता की जय जोरदार आवाज के साथ भीड़ ने अमित शाह की बातों का समर्थन किया है।

चुनाव प्रचार के अंतिम समय कौशांबी पहुंचे अमित शाह ने सांसद विधायक नेताओं और कार्यकताओं का नाम लेकर संबोधन शुरू करते हुए कहा कि बड़ी संख्या में आए हुए माताओं बहनों और मेरे जिगर के टुकडे जैसे युवाओं की भीड़ देखकर प्रचार करने की जरूरत नहीं है जनता ने तय कर दिया है कि केशव को ही जिताना है उन्होंने कहा कि डिप्टी सीएम केशव का सहयोग सिराथू क्षेत्र की जनता कर रही है केशव के लिए सब

कार्यक्रम को संबोधित करते अमित शाह साथ में खड़े डिप्टी सीएम तथा कार्यक्रम को सुनने उमड़ी भीड़

लोग ताली बजाओ अमित शाह के इस सवाल पर भीड़ ने जोरदार ताली बजाई। सभा स्थल पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने संबोधन के पूर्व कड़ा धाम की शीतला माता को प्रणाम किया है प्रभास गिरी को प्रणाम किया है दुर्गा भाभी की जन्मभूमि का व्याख्यान करते हुए कहा कि ध्यान से सुनिए भीड़ से सवाल पूछा सुनोगे ध्यान से कि नहीं भाषण शुरू करें कि नहीं उन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे यह पता होता कि इतनी बड़ी सभा होगी तो मैं नहीं आता यहां प्रचार करने की जरूरत ही नहीं रह गई है जनता ने तय कर रखा है केशव को जिताना है उन्होंने कहा कि 2014 में जब मैं आया तो पिछड़ा वर्ग की कोई आवाज बनने वाला नहीं था तो केशव पिछड़ा वर्ग की आवाज बने फिर से सवाल पूछा 2014 में किसको जिताया है 2017 में किसको जिताया है 2019 में किसको जिताया है और 2022 में किसको जिताओगे भीड़ ने जवाब दिया कमल के फूल पर बटन दबाया है भाजपा को जिताया है फिर कमल के फूल पर बटन दबाएगे और भाजपा को जिताएंगे। भीड़ को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि चार चरण का चुनाव हो गया है वह घूम कर आए हैं सपा बसपा का सूपड़ा साफ है भाजपा 300 के पार है उन्होंने कहा कि परिवार वादी पार्टियां है जातिवादी पार्टियां है और सपा बसपा के राज में बाहुबलियों का जमाना था गलती से भी साइकिल की सवारी करोगे तो जेल में रहेंगे तो फिर कमल का बटन दबाना है भाजपा को चुनना होगा उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहां कि पिछड़े वर्ग के 3 करोड़ 67 लाख लोगों को मुफ्त गैस सिलेंडर दिए गए हैं 2 करोड़ 61 लाख परिवारों को शौचालय दी गई है 1 करोड़ 41 लाख परिवार को मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया गया है उन्होंने कहां कि काली कमाई से 400 करोड़ की संपत्ति एकत्रित करने वाले के घर भाजपा सरकार ने छापा डाला तो परिवार वादी पार्टी के लोग हल्ला मचाने लगे हैं समाजवादी पार्टी को उन्होंने परिभाषित करते हुए कहा कि समाजवादी का मतलब संपत्ति और पार्टी से मतलब परिवार है इसलिए परिवार वादी पार्टियों से सावधान रहने की जरूरत है बार-बार उन्होंने भाजपा को जिताने की अपील करते हुए जनता को संबोधित किया है कोविड-19 टीकाकरण की चर्चा बिजली आने जाने की चर्चा 80 करोड़ देश के लोगों को प्रति व्यक्ति 5 किलो अनाज मुफ्त में दिए जाने की चर्चा के साथ केंद्र सरकार की बिभिन्न योजनाओं पर उन्होंने जनता को संबोधित किया है कार्यक्रम के दौरान जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी विधायक शीतला प्रसाद पटेल सांसद विनोद सोनकर जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर विधायक संजय गुप्ता सहित भारी जनसमूह मौजूद रहा।

### अमित शाह ने कहा मेरे कहने पर संजय ने खाली किया सीट

**कौशांबी।** उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि संजय के लिए ताली बजाओ मेरे कहने के बाद संजय ने चायल विधानसभा सीट खाली की है कार्यक्रम के दौरान कई बार अमित शाह ने चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता का नाम लेकर उनका हौसला बढ़ाया है।

### चिकित्सक दंपत्ति पर दलित के परिजनों ने लगाए गंभीर आरोप

**कौशाम्बी।** चायल तहसील क्षेत्र के तिल्हापुर स्थित गणेश नर्सिंग होम के चिकित्सक दंपत्ति पर मरीज के परिजनों ने फिर गंभीर आरोप लगाए हैं पूर्व में अस्पताल सीज हो चुका है लेकिन अस्पताल में बगैर रजिस्ट्रेशन के चिकित्सक दंपत्ति द्वारा मरीजों को इलाज कर लूटा जा रहा है पिपरी थाना क्षेत्र के दरियापुर रानियां पर निवासी हरिश्चंद्र पुत्र अमृतलाल ने आरोप लगाया है कि उसकी पत्नी काजल के बच्चेदानी में शिकायत होने पर गणेश अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां मर्ज ठीक करने का चिकित्सक दंपत्ति ने 9000 रुपए में ठेका लिया लेकिन 15000 रुपए चिकित्सक दंपत्ति ने उनसे वसूल लिया है मर्ज भी नहीं ठीक हुआ है और मरीज को बंधक बना लिया गया है 50 हजार रुपए की अतिरिक्त डिमांड चिकित्सक दंपत्ति कर रहे हैं मामले की शिकायत पीड़ित महिला काजल के पति हरिश्चंद्र ने पिपरी थाना पुलिस से करते हुए चिकित्सक दंपत्ति पर फिर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की है लेकिन क्या मामला है कि चिकित्सक दंपत्ति पर शासन प्रशासन स्वास्थ्य विभाग से लेकर पुलिस और प्रशासनिक विभाग मेहरबानी बनाए हुए हैं जिससे बंद अस्पताल बेखौफ तरीके से मरीजों को लूटने में लगा है।

# भाजपा सरकार पर जमकर बरसीं जया बच्चन

## विधानसभा प्रत्याशी के समर्थन में मतदान करने की अपील करने मंच पर पहुंची डिंपल यादव

मुकुट पहनाकर डिंपल यादव का स्वागत करते सपा नेता तथा कार्यक्रम में उपस्थित भीड़

अखंड भारत संदेश

**कौशांबी।** समाजवादी पार्टी की सिराथू विधानसभा प्रत्याशी डॉक्टर पल्लवी पटेल के समर्थन में राज्यसभा सदस्य जया बच्चन और उनके साथ सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने संयुक्त रूप से सायरा में आयोजित सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित किया उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए जया बच्चन ने कौशांबी से अपना पुराना नाता जोड़ते हुए कहा कि वह अपने पति के चुनाव प्रचार में कौशांबी आई थी उन्होंने भाजपा सरकार पर हमला करते हुए कहा कि भाजपा के नेता परिवार त्याग कर रखा है वह महिलाओं की क्या सुरक्षा करेंगे उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार में हमने महिलाओं की सुरक्षा की है और हम महिलाओं की सुरक्षा करते रहेंगे उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार ने आम जनता महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया है भाजपा सरकार की योजनाओं पर जमकर कुठाराघात करते हुए उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी डॉ पल्लवी पटेल को भारी बहुमत से जिताएं।

### भाभी की एक झलक पाने को लालायित रहे नवयुवक

**कौशांबी।** समाजवादी पार्टी की स्टार प्रचारक पूर्व राज्यसभा सदस्य जया बच्चन और सांसद डिंपल यादव ने कौशांबी में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को संबोधित किया है जनसभा में प्रबुद्ध जनों की भीड़ कम दिखाई पड़ी है समाजवादी पार्टी के कार्यक्रम में सभा स्थल पर नव युवकों की भीड़ अधिक थी कार्यक्रम के दौरान भाभी की एक झलक पाने के लिए नवयुवक बेताब थे।

जनसभा स्थल पर उमड़ी भीड़ को संबोधित करते हुए सांसद डिंपल यादव ने भाजपा सरकार की नीतियों पर जमकर कुठाराघात करते हुए सरकार को फेल बताया है उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में महंगाई बढ़ी है गरीब परेशान हैं लोगों को रोजगार नहीं मिल रहे हैं उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश का भविष्य अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के हाथों सुरक्षित है स्टार प्रचारक जया बच्चन और डिंपल यादव ने मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र के करारी में आयोजित जनसभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के मंझनपुर प्रत्याशी पूर्व काबीना मंत्री इंद्रजीत सरोज को समर्थन करने की अपील की है इस दौरान समाजवादी पार्टी के तमाम नेता भी मौजूद रहे चर्चा है कि कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से भी समाजवादी के नेता उलझ गए हैं।

# तहसील प्रशासन और भूमाफिया खेल रहे है लुका छुपी का खेल!

### बंजर भूमि पर किए जा रहे कब्जा को लेखपाल के रोकने के बाद भू माफियाओं ने फिर शुरू किया कब्जा

**कौशाम्बी।** चायल तहसील क्षेत्र में भू-माफिया और तहसील प्रशासन लुका छुपी का खेल खेल रहा है सरकारी जमीनों पर कब्जे की शिकायत ग्रामीण कर अवैध कब्जा को रोकने की मांग कर रहे हैं आला अधिकारी कब्जा रोकने का निर्देश दे रहे हैं मौके पर लेखपाल पहुंचकर अधिकारियों का फरमान सुना रहा है जिस पर लेखपाल के सामने कब्जा रोक दिया जाता है उसके जाते ही फिर सरकारी भूमि पर कब्जा शुरू हो जाता है जिससे तहसील प्रशासन और भू माफियाओं के बीच लुकाछिपी का खेल बेखौफ तरीके से खेला जा रहा है जिसके चलते सरकारी भूमि सुरक्षित नहीं रह गई है इस मामले को आला अधिकारियों को गंभीरता से लेना होगा और लुकाछिपी का खेल खेलने वाले लोगों पर मुकदमा दर्ज कराते हुए कठोर कार्यवाही किए जाने की जरूरत है ताजा मामला चायल तहसील क्षेत्र के समय पुर गांव के मजरा कृष्णा डोली की बंजर भूमि का है। चायल तहसील क्षेत्र में बंजर भूमि सुरक्षित नही रहा गई हैं भूमाफियों के ऊपर किसी अधिकारी की नजर नही पड़ा रही हैं इसलिए भूमाफियों के हौसले बुलंद हो चुके हैं लेकिन किसी छोटे अधिकारी के मना करने के बाद भी भूमाफिया नही मान रहे हैं भूमाफिय छोटे अधिकारी के मना करने के बाद भी काम लगा दिया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक चायल तहसील क्षेत्र के समसपुर गांव में भूमाफियों के हौसले इतने बुलंद हैं इनको किसी अधिकारी का डर नहीं रहा गया है लेखपाल के मना करने के बाद भी काम लगा दिया जा रहा है कृष्णा डोली गांव में बंजर भूमि में अलग अलग तीन जगह कब्जा किया जा रहा है लेखपाल ने आकर कब्जे से मना किया कि बंजर भूमि हैं काम बन्द करो भूमाफियों ने काम को रोक दिए लेकिन लेखपाल के जाने के बाद फिर से काम को शुरू कर दिया है इसकी जानकारी लेखपाल द्वारा दिया गया है आखिर क्या लेखपाल के मना करने के बाद अवैध कब्जा धारकों ने जमीन पर कब्जा करने से क्यों नहीं बंद किया है।

## न्यूज झरोखा

### अर्धसैनिक बल के जवानों के साथ मंझनपुर कोतवाल ने किया कस्बे में फ्लैग मार्च

**कौशाम्बी।** अर्धसैनिक बल के जवानों के साथ मंझनपुर कोतवाल ने अपने अधीनस्थों को लेकर कस्बे में फ्लैग मार्च किया है इस दौरान उन्होंने विधानसभा चुनाव में सुरक्षा का अहसास मतदाताओं को कराया है प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर विनोद कुमार सिंह समस्त थाना के अधीनस्थों के साथ एवं सीआरपीएफ के अधिकारी मनोज एम एवं बी पी सिंह के साथ उनकी बटालियन के जवानों को लेकर मंझनपुर कस्बे में एरिया डोमिनेशन किया गया तथा जनता में विश्वास दिलाया गया कि 27 फरवरी 2022 को शांतिपूर्ण मतदान होगा जिसमें निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए निदेशों को लाउड स्पीकर के माध्यम से सुनाया गया एवं अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया।

### अर्धसैनिक बलो ने किया कई गांव का फ्लैग मार्च

**इमामगंज कौशाम्बी।** कोखराज थाना अंतर्गत मूरतगंज चौराहा और आसपास के गांव में अर्धसैनिक बल के जवानों ने चौकी इंचार्ज मूरतगंज हरारायपुर के साथ फ्लैग मार्च किया है सामान्य विधानसभा चुनाव 2022 को सकुशल अपराध मुक्त संपन्न कराने के लिए कई गांव का पैरामिलिट्री फोर्स के साथ फ्लैग मार्च किया गांव में मतदाताओं को चेतावनी देते हुए कहा गया कि विधानसभा चुनाव में निष्पक्ष होकर मतदान करें किसी भी प्रत्याशी के प्रलोभन में आकर मतदान न करें उन्होंने कहा कि कोई प्रत्याशी किसी प्रकार की धमकी देता है तो पुलिस को तत्काल सूचना दें गांव की गलियों में फ्लैग मार्च को देखकर ग्रामीणों ने सनसनी फैल गई लेकिन अवगत कराते हुए जवानों ने कहा कि किसी को डरने की बात नहीं है! चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए गांव का भ्रमण किया जा रहा है! यदि कोई भी प्रत्याशी को परेशान करते हैं! तो चुनाव की गरिमा समाप्त हो जाएगी इसलिए कोई मतदाता किसी के प्रलोभन या भय में आकर मतदान न करें!

### ठेके से जा रही 18 पेटी अवैध शराब बरामद

**कौशाम्बी।** सैनी कोतवाली अंतर्गत थुलबुला टेढी मोड़ अंग्रेजी ठेका से छोटा हाथी वाहन 18 पेटी अवैध शराब लादकर सिराथू की ओर जा रहा था! जिसकी जानकारी सपा के कार्यकर्ताओं को हुई तो उन्होंने सैनी थाना समीप गुरुकुल नहर के पास छोटा हाथी रोककर देखा तो उसमें अवैध तरीके से 18 पेटी अंग्रेजी शराब छोटे बड़े ब्रांड लदे मिले। सूचना सैनी पुलिस को दी गई। सूचना पाते ही एसओ रंणजय सिंह पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर छोटा हाथी चालक एक युवक को शराब सहित अपने कब्जे में लेकर थाने पहुंचाया। आबकारी अधिकारी को सूचना देकर कार्यवाही करने का अनुरोध किया। वही अवैध शराब की जानकारी सपा प्रत्याशी पल्लवी पटेल को हुई तो दल बल के साथ मौके पर पहुंच कर कार्यवाही करने की मांग किया। आरोप है! कि मतदाताओं को शराब लुभाने के लिए ले जा रहे थे। मौके पर सपा कार्यकर्ता आशीष मौर्य पूर्व मंत्री मतेश चंद सोनकर सहित कई बड़े नेता शराब पकड़ने में कामयाब रहे।

### कार्यशाला के द्वितीय सत्र का सम्पन्न हुआ सफल आयोजन

**भरवारी कौशाम्बी।** ब्लॉक संसाधन केंद्र मूरतगंज में एउउए कार्यशाला का द्वितीय सत्र का सफल आयोजन खंड शिक्षाधिकारी मूरतगंज श्रीमती डॉ0 किरण पाण्डेय के कुशल निर्देशन में सम्पन्न कराया गया । उक्त सत्र का संचालन अफ्ढ मूरतगंज कौशलेश तिवारी द्वारा किया गया।कार्यशाला में उऊढड श्रीमती रेनू वर्मा एवं नोडल शिक्षक रोहित सिंह तोमर तथा शीलेन्द्र कुमार मिश्र के सहयोग से सम्पन्न कराया गया ।कार्यशाला को प्रोजेक्टर के माध्यम से दृश्य श्रव्य प्रस्तुतीकरण किया गया । कार्यशाला में ब्लॉक के अंजली पुरवार,मुनव्वर सुल्ताना,अर्चना भारती आदि शिक्षक/शिक्षिका तथा शमीर्ला त्रिपाठी ,सुनीता देवी ,प्रेमलता आदि आंगनबाड़ी कार्यकत्री, नोडल शिक्षक व शिक्षक संकुलों द्वारा गतिविधि प्रस्तुतीकरण किया गया।उक्त जानकारी कौशलेश तिवारी अफ्ढ विकासखंड मूरतगंज ने दी है।

### रोवर रेंजर्स के पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन

**कौशाम्बी।** महामाया राजकीय महाविद्यालय में चल रहे रोवर रेंजर्स के पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आज दिनांक 23 फरवरी को समापन हुआ।प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रशिक्षुओं को सर्वप्रथम सर्वधर्म प्रार्थना कराई गई,उसके बाद ध्वज शिष्टाचार कराया गया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन प्रशिक्षुओं का दीक्षा संस्कार कराया गया।दीक्षा प्रशिक्षक श्यामबाबू यादव और रेंजर प्रभारी रीता दयाल द्वारा दी गई।प्रशिक्षण शिविर की समाप्ति ध्वज लोवरींग के साथ हुई ।शिविर का समापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विनय कुमार सिंह की उपस्थिति में हुआ।शिविर का आयोजन महाविद्यालय की रेंजर प्रभारी रीता दयाल द्वारा किया गया एवम शिविर का संचालन जिला स्काउट संगठन कमिश्नर श्यामबाबू यादव और वंदना कुशवाहा ने किया।इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ नीलम बाजपेई, डॉ भावना केशरवानी,डॉ अमित शुक्ला एवम महाविद्यालय के समस्त कर्मचारी गण मौजूद रहे।

# कौशांबी की धरती पर एक साथ दहाड़े दो दो गृहमंत्री

अखंड भारत संदेश

**कौशाम्बी।** विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान अंतिम समय चुनाव प्रचार में कौशांबी की धरती में दो-दो गृहमंत्री जनसभा को संबोधित करने पहुंचे हैं एक तरफ भारत सरकार के गृह मंत्री अमित शाह ने विशाल जनसमुदाय को संबोधित किया सिराथू विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के समर्थन में मतदान करने की अपील की है तो दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी उनकी गृह मंत्री डिंपल यादव ने भी समाजवादी प्रत्याशी डॉ पल्लवी पटेल के समर्थन में उमड़ी भीड़ को संबोधित कर सपा प्रत्याशी को जिताने की अपील की है।

### हार से बौखलाई सपा जबरन कर रही है लोगों को शामिल

#### पूर्व चेयरमैन रामकरण ने लगाया समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी पूजा पाल पर गंभीर आरोप

**कौशाम्बी।** चायल विधानसभा क्षेत्र में पाल बिरादरी के एक मठाधीश पर बसपा के कार्यकर्ता व पूर्व चेयरमैन रामकरन ने आरोप लगाया कि मुझे अपने पास बैठा कर जबरन अपने साथ फोटो खिंचवा कर समाजवादी पार्टी में शामिल किये जाने की अफवाह फैला दी और बसपा पार्टी के खिलाफ मेरी छवि धूमिल कर रहा है। पूर्व चेयरमैन ने कहा कि मैं कल भी बसपा में थे और आज भी बसपा में ही हूं उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग संज्ञान में ले।

# डोर टू डोर मतदाताओं से मिलने पहुंची पंखुड़ी पाठक

मतदाताओं से संपर्क करती कांग्रेस नेता पंखुड़ी पाठक

जनसंपर्क करते कांग्रेस प्रत्याशी अरुण विद्यार्थी

अखंड भारत संदेश

**कौशांबी।** सिराथू विधानसभा में कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता और स्टार प्रचारक पंखुड़ी पाठक ने विधानसभा प्रत्याशी सीमा देवी के समर्थन में देवीगंज कड़ा बाजार में डोर टू डोर कैंपेनिंग की उसके बाद मां शीतला धाम का दर्शन किया और टेढ़ी मोड़ पर एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष अमित द्विवेदी व मानवाधिकार के जिला अध्यक्ष जितेंद्र कुमार शर्मा ने अपने साथियों के साथ उनका स्वागत किया तत्पश्चात वह देवीगंज बाजार के लिए प्रस्थान की बाजार में उन्होंने आम जनता से कांग्रेस पार्टी को वोट करने की अपील की और यह कहा कि प्रियंका गांधी के नेतृत्व में यूपी में सुना सुनहरे कल का उदय होने वाला है और अगर सरकार बनती है तो महिलाओं का विशेष ध्यान रखा जाएगा। इस मौके पर मौजूद कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव प्रभारी रामकिशन पटेल राष्ट्रीय पर्यवेक्षक दिलीप देसाई अनिल पांडे, एनएसयूआई जिला अध्यक्ष अमित द्विवेदी आजाद,अनिल अग्निहोत्री, बरसाती लाल पंडा, प्रदीप सक्सेना, कमाल अंसारी सरफराज आलम सहित सैकड़ों की संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

### नगर भ्रमण कर कांग्रेस प्रत्याशी ने मांगा जन समर्थन

#### कांग्रेस की स्टार प्रचारक के रूप में पंखुड़ी पाठक ने भी मतदाताओं से मुलाकात कर कांग्रेश को मतदान करने की अपील

**कौशांबी।** उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के अंतिम दिन मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी अरुण विद्यार्थी ने सैकड़ों समर्थकों के साथ मंझनपुर नगर में भ्रमण किया कांग्रेस की स्टार प्रचारक पंखुड़ी पाठक ने भी मतदाताओं से मुलाकात कर कांग्रेश के पक्ष में मतदान करने की अपील की है मतदाताओं से कांग्रेस की नीतियों को बताया कांग्रेस द्वारा घोषणा पत्र को मतदाताओं को देते हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने की अपील की सैकड़ों समर्थकों के साथ शुक्रवार को कांग्रेस प्रत्याशी अरुण विद्यार्थी ने मंझनपुर चौराहा नेहरू नगर नेता नगर चकरनगर चमनगंज सहित विभिन्न मोहल्लों में भ्रमण किया इस दौरान तमाम कांग्रेस नेता युवा कार्यकताओं और महिलाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया है।

# पुरानी पेंशन बहाल करने का डिम्पल यादव ने किया घोषणा

अखंड भारत संदेश

**करारी कौशाम्बी।** मंझनपुर विधान सभा क्षेत्र के करारी कस्बे में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने कहा कि सपा सरकार बनने पर कर्मचारियों की लंबे समय से चल रही मांग पुरानी पेंशन को बहाल किया जाएगा। सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 फीसदी आरक्षण दिया जाएगा।

डिंपल यादव ने कहा कि भाजपा ने कर्मचारियों और शिक्षकों की पुरानी पेंशन को खत्म कर दिया। लंबी सेवा के बाद सेवानिवृत्त होने वालों के जीवन निर्वाह के लिए फिर से पुरानी सामाजिक सुरक्षा पेंशन दिया जाना उचित है। भाजपा ने राज्य कर्मचारियों, शिक्षकों के साथ धोखा किया। पेंशन बहाली से 13 लाख से अधिक कर्मचारी लाभांवित होंगे।

### डिम्पल यादव ने कहा कि नौकरी में महिलाओं को 35 फीसदी दिया जाएगा आरक्षण, सपा प्रत्याशी के समर्थन में डिंपल यादव और जया बच्चन ने करारी में की जनसभा

कार्यक्रम को संबोधित करती डिम्पल यादव

उन्होंने कहा कि राज्य कर्मचारियों और अटेवा संगठन की इस संबंध में लंबे समय से मांग चल रही थी।सपा सरकार में कर्मचारियों के इलाज के लिए कैशलेस स्कीम तैयार की गई थी। सरकार बनने पर इसे पूरी तरह से लागू किया जाएगा। इसी तरह वित्तविहीन शिक्षकों को सम्मानजनक मानदेय देने की व्यवस्था करने का भी

### स्टूल के अलावा कुछ नहीं मिला

**करारी कौशाम्बी।** राज्यसभा सांसद जया बच्चन ने कहा कि उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की ओर से की गई टिप्पणी के सवाल पर कहा कि उनके बारे में बात करना बेकार है। उन्हें पूरे कार्यकाल में स्टूल के अलावा कुछ नहीं मिला है। वह अपने समाज के लिए कुछ नहीं कर पाए हैं। उन्हें लगातार अपमान मिला है। भाजपा पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि एक को इतना दबाया की वे हनुमान चालीसा पढ़ने लगे। हो सकता है अगली बार हमारे साथ आ जाएं।

आश्वासन दिया। भाजपा ने निजीकरण के जरिए संविधान और आरक्षण को नुकसान पहुंचाया। सरकार बनने पर इस मुद्दे पर भी विचार किया जाएगा।

### समय पर वाहन न पहुंचाने वाले स्वामियों के विरुद्ध दर्ज होगा मुकदमा : एआरटीओ

#### ओसा मंडी में समय से वाहन उपलब्ध कराने की अपील विधानसभा चुनाव में वाहन स्वामी से एआरटीओ ने की सहयोग की अपील

**कौशाम्बी।** सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी तारकेश्वर मल्ल ने अवगत कराया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 हेतु अधिगृहीत वाहनों को नवीन मण्डी समिति, ओसा में निर्धारित समय पर न पहुचानें वाले वाहन स्वामियों के विरूद्व लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम-1951 के अन्तर्गत सुसंगत धाराओं में विधिक कार्यवाही की जायेगी।

सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने सभी वाहन स्वामियों से सहयोग की अपील की है कि सभी श्रेणियां की अधिगृहीत वाहन स्कूली वाहन नियत समय पर ओसा मण्डी में उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

# पीठासीन अधिकारी एवं मतदान अधिकारी का कार्यक्रम निर्धारित

अखंड भारत संदेश

**कौशाम्बी।** विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल सम्पन्न कराने हेतु इस जनपद में दिनांक 27 फरवरी 2022 को मतदान सम्पन्न कराया जाना है। समस्त पीठासीन अधिकारी एवं मतदान अधिकारी दिनांक 26 फरवरी को कृषि उत्पादन मण्डी समिति, ओसा से अपने-अपने मतदान स्थलों के लिए प्रस्थान करेंगे। सभी पोलिंग पार्टियां अपने सम्बन्धित मतदान स्थल पर दिनांक 26 फरवरी को अपरान्ह 4 बजे तक पहुंचेगे तथा रात्रि में मतदान स्थल पर ही निवास करेंगे। दिनांक 27 फरवरी को मतदान सम्पन्न कराने के पश्चात वापस कृषि उत्पादन मण्डी समिति, ओसा के लिए प्रस्थान करेंगे जिला निर्वाचन अधिकारी ने जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला बेसिक शिक्षाधिकारी को निर्देशित किया है कि अपने अधीनस्थ समस्त कॉलेज/जूनियर हाईस्कूल/ प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत रसोइयों को निर्देशित करें कि वे सम्बन्धित अधिकारी/ मतदान अधिकारियों के लिए उनके द्वारा नगद भुगतान किये जाने पर भोजन व्यवस्था/ हल्का नास्ता आदि समय से तैयार करके उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें, उन्होंने कहा कि इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही/ शिथिलता न बरती जाए।

### जिला निर्वाचन अधिकारी ने सेक्टर मजिस्ट्रेटों को दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

**कौशाम्बी।** जिला निर्वाचन अधिकारी सुजीत कुमार ने सम्राट उदयन सभागार में विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 में नियुक्त सेक्टर मजिस्ट्रेटों के साथ बैठक की। बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी सेक्टर मजिस्ट्रेटों को एक बार पुनः अपने-अपने बूथों का निरीक्षण कर सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने के निर्देश दिये है। इसके साथ ही जिला निर्वाचन अधिकारी ने पोलिंग पार्टियां की रवानगी, मतदान के दिन के कार्यों एवं ई0वी0एम0 को जमा कराने आदि के सम्बन्ध में विस्तृत दिशा निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की लापरवही न बरती जाय, लापरवाही पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय सहित सभी उप जिलाधिकारीगण उपस्थित रहे।

### शांतिपूर्ण माहौल में चुनाव को कराये सम्पन्न : डीएम

**कौशाम्बी।** विधानसभा चुनाव- 2022 को शांतिपूर्ण माहौल में सकुशल संपन्न कराने हेतु जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा पुलिस लाइन में समस्त अधिकारी व कर्मचारी गणों के साथ बैठक की गई बैठक में सभी को निर्देशित किया गया कि 27 फरवरी को होने जा रहे पांचवे चरण में चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराया जाए व किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए लापरवाही बरतने वाले के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी साथ ही सभी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये।

## संपादक की कलम से

# एक विराट पर्व यह भी

**आज** हम आधुनिकता की चकाचौंध में जी रहे हैं। हम सभी की जिंदगी दौड़ धूप में कट रही है और इस दौड़ धूप भरी जिंदगी में लगातार हम अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं, अपने रीति रिवाजों से दूर जाते चले जा रहे हैं और लगातार हम लोग पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति के साथ स्वयं को आत्मसात कर रहे हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस जमाने में हम सभी आधुनिक तकनीक, मोबाइल संस्कृति में लीन हैं और हम हमारे समाज की पुरातन परंपराओं, संस्कृति, संस्कार, यहाँ तक कि अपने समाज के आदर्शों समेत सब कुछ भुलाते चले जा रहे हैं, युवा पीढ़ी को तो हमारे समाज के विभिन्न संस्कारों, पहले के जमाने में मनुष्य का जीवनयापन कैसे होता था, क्या होता था, क्या नहीं होता था, पहले का सामाजिक जीवन कैसा था, के बारे में विरले ही जानकारी हैं। यहाँ हम थोड़ी लीक से हटकर चर्चा करेंगे, जो कि हमारे समाज की ही संस्कृति, हमारी पुरातन व सनातन परंपराओं, रीति रिवाजों से ही संबंधित है। बात करेंगे शादी ब्याह की। आपने सुना होगा कि हाल ही में राजस्थान के बाड़मेर में एक शादी चर्चा का विषय बनी हुई है। मीडिया में यह शादी छाई रही। बताया जा रहा है कि बाड़मेर में एक दूल्हा और बाराती 21 ऊंटों पर सवार होकर दुल्हन के घर पहुंचे। बारात ने दो घंटे में पारंपरिक ढंग से सात किमी. का सफर रेगिस्तान के जहाज कहलाने वाले ऊंटों पर तय किया। यह भी बताया जा रहा है कि इस शाही शादी में शामिल हुए ऊंट जैसलमेर के सम क्षेत्र से मंगाए गए थे। इसके लिए दूल्हे के पिता ने पांच महीने पहले से ही तैयारी शुरू कर दी थी। वास्तव में ऐसी बारात को देखकर हमारी युवा पीढ़ी जरूर आश्चर्य चकित होगी ,क्योंकि वह मोटर गाड़ियों, कारों, यहाँ तक कि ट्रेन और हेलीकॉप्टर तक में बारात जाने व आने की साक्षी रही है। बैलगाड़ियों,ऊंटो के बारे में तो शायद वह कभी सोच ही नहीं सकती। बाड़मेर की इस बारात को देखकर लोग आश्चर्य में पड़ रहे थे। इस तरह ऊंटों पर जाती बारात को लोगों ने पहली बार देखा था। बताया जा रहा है कि लड़के ने अपने दादा का सपना पूरा करने के लिए बरसों पुरानी राजस्थान की परंपरा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इस तरह बारात निकाली थी।

# जीवंत लोकतंत्र के लिए संघर्ष की नई शुरूआत

**ललित गर्ग**

पांच राज्यों के वर्तमान चुनाव के सात चरणों में से चार चरणों में चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया व व्यवस्था में सुधार व्यापक देखा गया। धनबल, बाहुबल को काफी हद तक हाशिया मिला। पर बुद्धिबल, जो सबमें श्रेष्ठ व ताकतवर गिना जाता है, उस पर नियंत्रण बिना राष्ट्रीय चरित्र बने सम्भव नहीं। क्योंकि अन्ततोगत्वा बुद्धिबल ही राज करता है। वहां शुद्धि के बिना लोकतंत्र की शुद्धि की कल्पना अधूरी है और यह अधूरापन इन पांच राज्यों के चुनावों की भी विडम्बना बना है। उत्तर प्रदेश का चुनाव तो जैसे मुख्य राष्ट्रीय चुनाव से कम नहीं है। समूचे विश्व की दृष्टि वर्तमान में उत्तर प्रदेश पर केंद्रित है। देश के इस सबसे बड़े प्रदेश में लोकतंत्र में निहित नैतिकता की सारी सीमाएं ही लांघ दीं गईं हैं। एक पार्टी ने तो कुख्यात अपराधियों तक को मैदान में उतार दिया है और चुनाव जीतने पर अपराधियों को सरकारी सुविधाओं से लैस करने का वचन दे दिया है। इसी पार्टी के नेता और कार्यकर्ता बदला लेने की भावना एवं हिंसक मानसिकता से ग्रस्त होकर चुनाव के बाद देख लेने जैसी बाहुबली संस्कारों वाली भाषा से लोकतंत्र को शर्मसार कर रहे हैं। बाहुबल का जब भी प्रयोग हुआ या होता है तो नतीजा महाभारत होता है। हमने पश्चिम बंगाल के चुनावों में बाहुबल का प्रयोग देखा। चुनाव के दौरान एवं चुनाव के बाद के खून से लथपथ दृश्य हमारी आंखों में आज भी बसे

हैं, जो लोकतंत्र में छिपी एक ऐसी नियति का दुष्परिणाम है जो भारत और भारतीयता के सूर्य को ही निगलना चाहती है। चुनाव जीतने के बाद बहुमत वाली ममता की पार्टी के कार्यकर्ताओं ने किस तरह से विरोधी पार्टी को वोट देने वाले सामान्य लोगों के घर जलाए, हत्याएं की और कितने ही लोगों को पड़ोसी राज्यों में शरण लेने के लिए बाध्य कर दिया। इन दृश्यों ने बंगाल को तो आतंकित किया ही है, अब तथाकथित समाजवादी दल के विजय होने की संभावना मात्र से उत्तर प्रदेश की जनता डरी हुई है। विडम्बना देखिये- वोटों की बुनियाद पर खड़ा लोकतंत्र और ऊपर से अपनी सहिष्णुता एवं सौहार्द का कायल भारतीय विशाल मतदाता समुदाय ऐसी घटनाओं को ऑक्सीजन देने का आदि हो गया है। लेकिन कब तक? उत्तर प्रदेश का विधानसभा चुनाव तो ऐसी-ऐसी विडम्बनाओं को पक्का कर रहे हैं जिनसे भविष्य में तंत्र भले ही बचा रहे, लोक जीवन खतरे में पड़े बिना नहीं रह सकता। सत्ता तक पहुंचने के लिए जिस प्रकार दल-टूटन व गठबंधन हुआ है इससे सबके मन में अकल्पनीय सम्भावनाओं की सिहरन उठती है। राष्ट्र और राष्ट्रीयता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगे हैं। कुछ अनहोनी होगी, ऐसा सब महसूस कर रहे हैं। प्रजातंत्र में टकराव होता है। विचार फर्क भी होता है। मन-मुटाव भी होता है पर मयार्दापूर्वक। अब इस आधार को ताक पर रख दिया गया है। राजनीति में दुश्मन स्थाई नहीं होते। अवसरवादिता दुश्मन को दोस्त और दोस्त को दुश्मन बना देती है। यह भी बडे. रूप में देखने को मिला। धनबल का जब भी प्रयोग हुआ तो नतीजा शोषण, गुलामी के रूप में हुआ। एक तरफ लोकतंत्र का उत्सव है, दूसरी ओर चुनाव के इसी उत्सव के दौरान कर्नाटक से एक वर्ग द्वारा आजादी के नाम पर महिलाओं को गुलामी के एक प्रतीक से ढकने की आवाज उठी है। हम खाने में अलग, पहनने में अलग, सूंघने में अलग-जब ऐसे अलगाववादी-जिन्नवादी तत्त्व बोतल से निकल बाहर आते हैं तो राष्ट्रीयता के तत्त्व पृष्ठभूमि में-रसातल में चले जाते हैं। कर्णाटक में छात्राओं को आजादी के नाम पर गुलामी के प्रतीक देकर सड़कों पर उतारने वाले अपनी राष्ट्रविरोधी सोच का परिचय देते हुए अपनी संकीर्ण पुरुषवादी मानसिकता का बोझ महिलाओं पर लाद रहे हैं। महिलाओं को बाध्य किया जा रहा है कि वे काले बुर्के में अपने सपनों का गला घोटते अपनी जिंदगी को गुलामी के खूंटे से बाँध कर रखें। और इसकी शुरूवात शिक्षा के मन्दिरों से की जा रही है। बुरकाप्रथा की मानसिकता की शिकार लड़कियों को यह पता नहीं कि कट्टरपंथियों का अगला निशाना उन्हें तालिबान की तरह शिक्षा और नौकरियों से वंचित करना होगा। लेकिन स्वार्थ एवं कट्टरवाद के नाम पर महिलाओं को गुलाम बनाने का यह षड़यंत्र चुनाव को प्रभावित करने के लिये रचा गया है। यह भी लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन है।

भारत में लोकतंत्र की व्यूह रचना के आधार राजनीति दल हैं और ये राजनीतिक दल वोट बैंक पर टिके हैं। यही कारण है कि लोकतंत्र में सिर गिने जाते हैं, मस्तिष्क नहीं। इसका खामियाजा हमारा लोकतंत्र भुगतता है, भुगतता रहा है। ज्यादा सिर आ रहे हैं, मस्तिष्क नहीं। जाति, धर्म और वर्ग के मुखौटे ज्यादा हैं, मनुष्यता के चेहरे कम। बुद्धि का छलपूर्ण उपयोग कर समीकरण का चक्रव्यूह बना देते हैं, जिससे निकलना अभिमन्यु (मतदाता) ने सीखा नहीं। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी द्वारा अपराधियों को चुनाव के अखाड़े में उतारना, कर्णाटक में छात्राओं को बुर्के में कैद करना, राजनीतिज्ञों में शब्द-हथियारों से गृह युद्ध-सा छिड़ना, और चुनाव विश्लेषकों द्वारा जाति-धर्म के आधार पर जीत-हार का अद्भुत गणित विकसित करना-क्या यह सब भारत की एकता एवं अखंडता को तार-तार करने का खेल नहीं है? क्या यह लोकतंत्र के नाम पर भारत राष्ट्र को कमजोर करने का उपक्रम नहीं है? मतदाता सौ प्रतिशत शिक्षित हों, गरीबी की रेखा से नीचे कोई नहीं रहे, तभी लोगों को लोकतंत्र का अर्थ और मूल्य समझ में आएगा। तभी ये जाति, धर्म और वर्गों के समीकरण टूटेंगे। तभी लोकतंत्र को सिर नहीं मस्तिष्क मिलेंगे। पांच राज्यों के चुनावों के परिणाम 10 मार्च 2022 को आ जायेंगे और जहां पहुंचकर चुनाव आयोग की आचार संहिता के लम्बे हाथ भी बौने हो जायेंगे। मतदाता का रोल भी समाप्त हो जाएगा। वे दिन प्रतिनिधियों के होंगे, इसी दिन के लिए तो वे खडे.हुए हैं वरना सेवा तो वे लोग ज्यादा करते हैं जो सत्ता से बाहर हैं। पर वैसे लोगों को केवल आदर मिलता है।

# धर्मगुरुओं के 'राजनैतिक फतवे'

**निर्मल रानी**

**विश्व** का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते यहाँ 'लोकतान्त्रिक' तरीके से होने वाले आम चुनाव हमेशा ही पूरे विश्व के लिये कौतूहल का विषय होते हैं। समय समय पर इस विराट एवं अद्भुत चुनावी प्रक्रिया को करीब से देखने व समझने के लिये विदेशों से भी वहां के संसदीय प्रतिनिधिमंडल तथा अंर्तराष्ट्रीय चुनावी विशेषज्ञ आते रहते हैं। परन्तु सवाल यह उठता है कि क्या हमारे देश के शत प्रतिशत मतदाता वास्तव अपने अपने मताधिकार का प्रयोग पूरी स्वतंत्रता व स्वविवेक के साथ करते हैं ? क्या भारतीय मतदाताओं का एक बड़ा अर्थात निर्णयकारी वर्ग वास्तव में जनसमस्याओं,देश की प्रगति,विकास,सड़क,बिजली,पानी,उद्योग ,रोजगार,स्वास्थ्य,मंहगाई जैसे मुद्दों को सामने रखकर ही मतदान करता है ? और यदि जनता स्वविवेक से मतदान करती है,उसपर किसी तरह का धर्म-जाति-पंडित-गुरु-अथवा मौलवी के फतवों का प्रभाव नहीं होता फिर आखिर देश की संसद व विधानसभाओं में सांप्रदायिक,अपराधी,जातिवादी,निठल्ले, अशिक्षित,भ्रष्ट,स्वार्थी,विचारविहीन,व लुटेरी प्रवृति के लोग विभिन्न सदनों में कैसे पहुँच जाते हैं? सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सियन लूंग ने गत 15 फरवरी को सिंगापुर की संसद में एक टिप्पणी की। ली सियन लूंग ने कहा था कि 'नेहरू का भारत अब ऐसा बन गया है, जहां मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार लोकसभा के आधे से अधिक सांसदों के विरुद्ध बलात्कार, हत्या जैसे आरोपों सहित अनेक आपराधिक मामले लंबित हैं। हालांकि यह भी कहा जाता है कि इसमें से कई आरोप राजनीति से प्रेरित हैं.'। ली सियन लूंग ने इजराईल में चल रही राजनैतिक अस्थिरता का भी जिक्र किया। उनके द्वारा इजराइली नेता वे डेविड बेन-गुरियन व भारत के जवाहरलाल नेहरू का जिक्र समयानुसार राजनीति व राजनेताओं के तुलनात्मक स्तर के सन्दर्भ में किया गया था। इसमें कोई शक नहीं कि विश्व के अधिकांश देश उच्च आदर्शों और महान मूल्यों के आधार पर स्वतंत्र अथवा स्थापित हुए हैं। ऐसे में राजनीति के वर्तमान विश्व स्तरीय पतन काल पर किसी भी संवेदनशील व्यक्ति विशेषकर गंभीर राजनेताओं का चिंतित होना स्वाभाविक है। हालाँकि भारतीय विदेश मंत्रालय ने सिंगापुर के प्रधानमंत्री के इस बयान के बाद दिल्ली में सिंगापुर के उच्चायुक्त साइमन वॉन्ग को बुलाया और ली सियन लूंग के उपरोक्त वक्तव्य पर आपत्ति व असहमति जताते हुये कहा कि भारत के संबंध में ली सीन लूंग का यह बयान को "गैर-जरूरी" और "अस्वीकार्य" है। परन्तु क्या भारतवासियों के लिये यह सोचना व चिंतन करना जरूरी नहीं कि विदेशी नेताओं को आखिर भारत की वर्तमान राजनैतिक दुर्दशा पर ऊँगली क्योंकर उठानी पड़ती है? किसी कड़वे सच को अस्वीकार करने के बजाये क्या हमें आत्म चिंतन व आत्मावलोकन करने की जरुरत नहीं ? क्या सिंगापुर के प्रधानमंत्री ने जो भी कहा वह पूरी तरह तथ्यहीन है ? क्या विदेश मंत्रालय के "गैर-जरूरी" और "अस्वीकार्य"कह देने मात्र से हमारे देश के अपराधी व अपराधों के आरोपी राजनेताओं की छवि उज्जवल हो जायेगी ? क्या इससे ज्यादा जरूरी यह नहीं कि हम इस बात को लेकर आत्ममंथन करें कि हम कैसे अपनी इस 'कलंकपूर्ण ' चुनाव व्यवस्था को रोकने के लिये सख़्त कदम उठायें ? क्या मंदिर - मस्जिद, हिन्दू-मुसलमान, धर्म जाति,ऊंच नीच, क्षेत्र, भाषा, गाय, लव जिहाद, हिजाब, वन्देमातरम, कब्रिस्तान, शमशान, जिन्ना, औरंगजेब जैसे मुद्दों को आगे रखकर लड़े जाने वाले चुनाव व इन्हीं मुद्दों को गरमा व भ्रमा कर चुनाव जीतने वाले जनप्रतिनिधियों से हमें यह उम्मीद करनी चाहिये कि वे जनसरोकारों से जुड़े मुद्दों पर भी काम करेंगे ? राजनेताओं के भाषण भी ऐसे होने लगे हैं गोया वे अपने राजनैतिक प्रतिद्वंदी को अपना व्यक्तिगत दुश्मन मानने लगे हों। कोई किसी को आतंकवादी बता रहा है तो कोई चुनाव के बाद 'गर्मी निकालने ' की धमकी दे रहा है। कोई बुलडोजर चलाने की बातें कर रहा है। कोई पाकिस्तान भेज रहा है तो कोई बंगाल,कश्मीर व केरल से तुलना कर सांप्रदायिकता का भ्रमपूर्ण भय पैदा कर रहा है। तथाकथित राजनैतिक धर्मगुरुओं की भी भरमार है। इनमें तमाम ऐसे हैं जो सत्ता के करीब भी रहना चाहते हैं और सत्ता से लाभ भी उठाना चाहते हैं और उठाते रहते हैं। प्रायः देखा गया है कि यह धर्म गुरु अपने अनुयायियों को निर्देश अथवा फतवे जारी करते रहते हैं। इनके निर्देश अथवा फतवे आम तौर पर इस बात से प्रेरित होते हैं कि किसी धर्मगुरु के साथ सत्ता अथवा धर्मगुरु द्वारा समर्थन दिये जा रहे दल का व्यवहार कैसा है। इस स्थिति में इन 'स्वयंभू अध्यात्मवादियों' का सीधा संबंध राजनीति से स्थापित हो जाता है। और इनकी कोशिश होती है कि इनके अनुयायी इनके निर्देश व फतवे के अनुसार ही मतदान करें। गोया किसी धर्मगुरु के लाखों करोड़ों अनुयायी अपने गुरु अथवा मौलवी मौलाना के दिशानिर्देश पाते ही अपना स्वविवेक ताख पर रखकर अपने बहुमूल्य मताधिकार को गोया गिरवी रख देते हैं। ऐसी स्थिति में जीतने वाला प्रत्याशी अपराधी है,सांप्रदायिक,जातिवादी अथवा भ्रष्ट है यह बातें कोई मायने नहीं रखतीं। आज अनेक धर्मगुरु बेलगाम होकर जो मुंह में आये वह बोलते फिर रहे हैं। उनके मुंह से अमृतवाणी निकलने के बजाये विषवमन होता रहता है।

# कृषि क्षेत्र को आधुनिक और स्मार्ट बनाने पर जोर

**किशन भावनानी**

**भारत** में कृषि क्षेत्र में पुराने साधनों, संसाधनों, लकड़ी का हल, बैल द्वारा जुताई, खार रोपाई, धान कटाई, भराई इत्यादि अनेक प्रक्रियाएं आदिकाल से ही पौराणिक प्रथाओं के रूप में होती थी। परंतु बड़े बुजुर्गों का कहना है कि समय का चक्र घूमते रहता है और पलों का घेरा, सुख-दुख, पुराना नया, ऊंचा नीचा सभी को घेरे में लेते हुए चलता है!!! ठीक उसी प्रकार यह चक्र आज कृषि क्षेत्र में भी पुरानी आदिलोक से चली आ रही कृषि प्रक्रियाओ को बदलकर आज के नए भारत डिजिटल भारत में स्मार्ट कृषि, डिजिटल कृषि के रूप में लाकर खड़ा कर दिया है!!! जिसनें खार बोने से लेकर अंतिम और धानकटाई से लेकर मंडी तक पहुंचाने की हर क्रिया, प्रक्रिया में आधुनिक नए डिजिटल साधनों, संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है जिससे घटते कृषिक्षेत्र और सिकुड़ती कृषि भूमि के बावजूद कृषिक्षेत्र में भारी उत्पादन दर्ज होना आधुनिक डिजिटल स्मार्ट कृषि क्षेत्र के सकारात्मक परिवर्तनों को रेखांकित करता है। साथियों बात अगर हम भारत में कृषि क्षेत्र की करें तो भारत एक कृषि और गांव प्रधान देश है जहां अधिकतम परिवारों की आजीविका कृषि क्षेत्रपर निर्भर है इसीलिए कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाना भारत की बुनियादी नीति रही है परंतु सिकुड़ते कृषि

क्षेत्र को प्रोत्साहित करने, लोगों का कृषि क्षेत्र के प्रति ध्यान आकर्षित करने पिछले कुछ सालों से सरकारों द्वारा अनेक योजनाएं, परियोजनाएं, स्कीमों, सुरक्षाचक्र इत्यादि अनेक सकारात्मक कदम तेजी से उठाए जा रहे हैं। साथियों बात अगर हम कृषि क्षेत्र को आधुनिक डिजिटल और स्मार्ट कृषि बनाने बजट 2022 के प्रस्तावों के विभिन्न प्रभावोत्पादक कदमों की करें तो दिनांक 24 फरवरी 2022 को केंद्रीय बजट 2022 का कृषि क्षेत्र पर सकारात्मक प्रभाव पर एक वेबिनार, स्मार्ट कृषि- क्रियान्वयन के लिए रणनीतियों पर आयोजित किया गया जिसमें बजट में उठाए गए प्रस्तावित विभिन्न महत्वपूर्ण 7 कार्यक्रमों पर चर्चा, संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा भारत द्वारा पेश प्रस्ताव पारित कर वर्ष 2023 को मोटा अनाज वर्ष मनाने, सिंचाई के स्त्रोतों में नवाचार, भारत में मृदा परीक्षण संस्कृति को बढ़ाने की आवश्यकता, कृषि ड्रोन टेक्नोलॉजी, विशेष कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, पराली प्रबंधन, कृषि क्षेत्र को स्मार्ट कृषि, डिजिटल कृषि से लेकर अनेक विषयों पर चर्चा की गई। साथियों बात अगर हम दिनांक 24 फरवरी 2022 को माननीय पीएम द्वारा बजट 2022 से कृषि क्षेत्र को मजबूत करने पर एक वेबनार में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार, बजट पर हितधारकों के बीच जागरूकता और स्वामित्व की भावना पैदा करने के लिए केंद्र सरकार ने कृषि और संबद्ध क्षेत्र के लिए स्मार्ट कृषि विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार में सहकारिता से समृद्धि विषय पर सहकारिता मंत्रालय ने भी भागीदारी की क उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने सहकारिता से जुड़ा एक नया मंत्रालय बनाया है, जिसका उद्देश्य सहकारी समितियों को एक सफल व्यावसायिक उद्यम में बदलना है। उन्होंने कहा कि बजट में कृषि को आधुनिक और स्मार्ट बनाने के लिए मुख्य रूप से सात रास्ते सुझाए गए हैं। पहला- गंगा के दोनों किनारों पर 5 कि.मी. के दायरे में नेचुरल फार्मिंग को मिशन मोड पर कराने का लक्ष्य है। दूसरा- एग्रीकल्चर और हॉर्टीकल्चर में आधुनिक टेक्नॉलॉजी किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। तीसरा- खाद्य तेल का आयात घटाने के उद्देश्य से मिशन ऑयल पाम को सशक्त करने पर जोर दिया गया है।

चौथा- कृषि उत्पादों के परिवहन के लिए पीएम गति-शक्ति योजना के माध्यम से नई रसद व्यवस्था की जाएगी। बजट में पांचवां समाधान बेहतर कृषि-अपशिष्ट प्रबंधन और कचरे से ऊर्जा उत्पादन द्वारा किसानों की आय बढ़ाना है।

# रूस का यूक्रेन पर हमला और नाटो की भूमिका

**संजीव ठाकुर**

यूक्रेन एक छोटा सा राज्य है, उसकी सैन्य शक्ति भी इतनी क्षमतावान नहीं है कि रूस या अन्य शक्तिशाली देश का सैन्य मुकाबला कर सके,पर अमेरिका, ब्रिटेन और नाटो के 28 देशों के बहकावे में आकर उसने रूस को नाराज करना शुरू कर दिया था। यूक्रेन को यकीन था कि रूस के आक्रमण के समय अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इजरायल और नाटो के कई देश उसकी रक्षा करेंगे, पर ताकतवर,शक्तिमान रूस के हमले के सामने ना तो अमेरिका ने अपना सैन्य आक्रमण किया ना ब्रिटेन ने अपनी सेना ही भेजी और ना ही अन्य नाटो देश में रूस के खिलाफ किसी तरह की जंग ही की है ,केवल दूर से बैठकर समझौते करने की बात करते रहे और रूस के आक्रमण की निंदा ही की है। यह आलेख लिखते तक रूस ने कीव पर कब्जा भी कर लिया होगा और उसके समस्त एयर बेस सैनिक अड्डों को नष्ट कर दिया है। यूक्रेन का एयर डिफेंस पूरी तरह चरमरा गया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति ने बताया कि रूस ने सभी सैनिक हवाई अड्डों पर रॉकेट लॉन्चर दाग कर उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दिया है, यूक्रेन के लगभग 40 सैनिकों को मार भी गिराया है, इसमें 10 निर्दोष नागरिक भी मारे गए हैं। रूस ने दावा किया था कि वह नागरिक ठिकानों पर बमबारी नहीं करेंगा पर मिसाइल तथा गोलियां सैनिकों तथा नागरिकों को अलग-अलग नहीं पहचानती है, और यही वजह है कि सैनिकों के साथ नागरिक भी मारे गए। वर्ष 1914 में यूक्रेन से रूस ने क्रीमिया को अलग कर अपने अधिपत्य में ले लिया था। रूस का कहना है कि अमेरिका ब्रिटेन और नाटो देश यूक्रेन को एक न्यू क्लियर सामरिक अड्डा रूस के खिलाफ बनाने की तैयारी कर चुके हैं, और इन सभी देशों के साथ यूक्रेन भी रूस की प्रतिरक्षा प्रणाली को बहुत बड़ा खतरा बन गया है। यूक्रेन पर अमेरिकी प्रशासन का पूरा पूरा नियंत्रण है, यूक्रेन प्रशासन केवल कठपुतली मात्र है। इसे संचालित करने वाला अमेरिका तथा ब्रिटेन ही है।

यूक्रेन लगातार नाटो देश की सदस्यता के लिए प्रयास करता रहा है और अमेरिका चाहता है कि यूक्रेन नाटो देश का सदस्य बन कर रूस के खिलाफ एक सामरिक अड्डे की तरह उनके काम आए। तत्कालिक कारणों में रूप द्वारा गैस तथा तेल के लिए बिछाई गई पाइप लाइन जो जर्मन तक गैस तथा तेल पहुंचाने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ थी। जर्मन एक बहुत बड़ा तेल तथा गैस का बाजार है, यहां से सारे यूरोप में आर्थिक गतिविधि शुरू होकर गैस तथा तेल की सप्लाई की जाती है जो कि एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र है यह गैस पाइपलाइन यूक्रेन के क्षेत्र से होकर जनवरी तक जाती है। इससे नाटो देश को बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान की संभावना भी है। दूसरी तरफ यूक्रेन, क्रीमिया को अपने पास वापस अपने अधिपत्य में लेना चाहता है, जो वर्तमान में रूस के कब्जे में है, इसके अलावा रूस ने यूक्रेन के दो बड़े क्षेत्र लुहानस्क और डोनट्स रिपब्लिक को राज्य के रूप में मान्यता दे दी है, यह बहुत बड़े क्षेत्र और इन्हीं के माध्यम से उसने अपनी सेना को यूक्रेन में दाखिल भी किया था। इन दो बड़े रिपब्लिक को देश की तरह मान्यता देने पर अमेरिका तथा ब्रिटेन और नाटो देशों ने अंतरराष्ट्रीय नियमों के उल्लंघन की बात कह कर भरपूर सार्वजनिक निंदा भी की है और किसी स्वतंत्र देश की प्रभुसत्ता पर हस्तक्षेप भी बताया है।

# उजाले का अंधेरा

**डॉ. सुरेश कुमार**

वह क्या है न कि उजाले में भी अंधेरा बसता है। किसी-किसी को दिखता है। किसी-किसी को नहीं दिखता है। किसी-किसी को दिखकर भी नहीं दिखता है तो किसी-किसी को नहीं दिखकर भी दिखता है। यह किसी-किसी कहलाने वाले लोग गुफाओं या आदिम युग में नहीं रहते। हमीं में से कोई किसी-किसी का पात्र निभाता रहता है। आश्चर्य की बात यह है कि एक किसी दूसरे किसी को किसी-किसी का किस्सा बताकर अपनी किसियाने की खुसखुसी करता रहता है। कोई किसी के दुख में किसी सुख को तलाशने की कोशिश करता है। कोई किसी की आग में किसी की रोटी सेंकने का काम करता है। । कोई किसी के गिरने में किसी के उठने की राह जोहता है। यह किसकिसाने का फसाना बहुत पुराना है। हमसे-तुमसे-सबसे पुराना है। किसी की बात में किसी की चुप्पी, किसी के लिखे में किसी के मिटने और किसी की ताजगी में किसी के बासीपन की याद हो आना किस्साहट नहीं तो और क्या है! यह किसी-किसी कहलाने वाले प्राणी बड़े विचित्र होते हैं। एक किसी दूसरे किसी के शव को छूना नहीं चाहता है। यह किसी कभी किसी का बेटा बनकर किसी पिता को अंतिम दर्शन करने के सौभाग्य से वंचित कर देता है। किसी का पति बनकर किसी पत्नी का सुहाग उजाड़ देता है। किसी का भैया बनकर किसी भाई का सहारा छीन लेता है। ऐसा किसी किसी-किसी का नहीं होता। किसी ने खूब कमाया, कोठियाँ खड़ी कीं, घोड़ा-गाड़ी का ऐशो आराम देखा। किंतु यह केवल किसी-किसी तक सीमित रहा। आगे उसी किसी के किसी-किसी ने उसे भोगा। यह किसी-किसी का किस्सा युगों से चला आ रहा है। किसी-किसी ने किसी-किसी के साथ मिलकर जिंदगी के चार दिन बिताए थे। किसी के सामने किसी ने सिर उठाकर अपनी गुमानी दिखायी थी। दुर्भाग्य से एक किसी के मरने पर कोई किसी के साथ नहीं गया। सब के सब यहीं रह गये। उसका बंगला, घोड़ा, नौकर-चाकर सब के सब यहीं रह गए। किसी कहलाने वाला चार किसी कहलाने वाले कंधों के लिए तरसकर रह गया। न जाने कैसे उस किसी को किसी ने किसी तरह किसी ऐसी जगह पहुँचाया जहाँ किसी-किसी को मुक्ति मिलती है। किसी-किसी की बातें, किसी-किसी की यादें, और किसी-किसी के किस्से तब तक हैं जब तक कोई किसी को किसी तरह यह आपबीती सुनाता है। एक किसी को जीने के लिए किसी चीज की जरूरत पड़े न पड़।

# वैचारिक शून्यता के शिकार 'सत्तालोभी व अवसरवादी' नेता

**तनवीर**

**भारतीय** राष्ट्रीय कांग्रेस को देश के उस इकलौते प्राचीन राजनैतिक संगठन के रूप में जाना जाता है जिसने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाते हुये पराधीन भारत को स्वाधीनता दिलाई थी। महात्मा गाँधी से लेकर सुभाष चंद्र बोस,बाबा साहब भीम राव अंबेडकर, पंडित जवाहर लाल नेहरू,सरदार पटेल,मौलाना अबुल कलाम आजाद,खान अब्दुल गफ़्फार खान,जैसे अनेक महान नेता इसी कांग्रेस पार्टी के सम्मानित संस्थापक व सदस्य रहे हैं। कांग्रेस पार्टी जहाँ स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आजादी के बाद अर्थात अब तक 'सर्व धर्म समभाव ' जैसी सर्व समावेशी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती आ रही है वहीं इसी देश में हिन्दू महासभा,मुस्लिम लीग,राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जैसे भी अनेक दल व संगठन सक्रिय रहे जिन्होंने कांग्रेस व गांधीवादी विचारधारा के विरुद्ध चलते हुये देश के लोगों को धर्म के नाम पर गोलबंद करने का काम शुरू किया। ऐसी शक्तियां अंग्रेजों के हाथों का खिलौना बन गयीं क्योंकि अंग्रेज भी 'बांटो और राज करो ' की इसी विभाजनकारी नीति पर चलते हुये ही विश्व के बड़े भूभाग पर शासन करते आ रहे थे। आज दुनिया के अनेक देशों ,में बन चुके कई अलग अलग देश, दुनिया के अनेक देशों में फैला धर्म के नाम का आतंक,देश प्रेम पर हावी होता धर्म प्रेम यह सब उसी अंग्रेजी सियासत के ही दूरगामी परिणाम हैं। परन्तु इससे भी बड़ा सच यह है कि अंग्रेजों की इस विभाजनकारी नीति को परवान चढ़ाने में सबसे बड़ी भूमिका मौकापरस्त,क्षणिक लाभ उठाने वाले,धन व सत्ता लोभी,विचार व सिद्धांत विहीन लोगों की रही है । कहा जा सकता है कि 'विरासत' में मिली इस 'वैचारिक शून्यता' व 'रीढ़ विहीनता' का सिलसिला न केवल आज तक जारी है बल्कि संभवतः यह भारतीय राजनीति के सबसे बड़े व 'दुर्भाग्यपूर्ण सत्य ' का रूप भी धारण कर चुका है। कहने को तो हमारे देश में अनेक राजनैतिक दल हैं जो दक्षिण पंथी,वाम पंथी,मध्य मार्गीय,व अनेक प्रकार की क्षेत्रीय विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु प्रायः इन दलों के नेताओं में वैचारिक प्रतिबद्धता अथवा वैचारिक समर्पण नाम की कोई चीज बाकी नहीं रह गयी है। कौन सा 'गांधीवादी' कब गोडसेवादी बन जाये,कौन सा लोहियावादी अथवा समाजवादी कब दक्षिणपंथी बन जाये कुछ कहा नहीं जा सकता इन नेताओं के 'वैचारिक पाला बदल' के कारण भी बताने के कुछ और व हकीकत में कुछ और ही होते हैं। मिसाल के तौर पर इन दिनों कांग्रेस के अनेक नेता दल बदल करते समय यह कहते सुने जा रहे हैं कि आज की कांग्रेस पहले वाली कांग्रेस नहीं रही,कोई कहता है कि कांग्रेस आत्महत्या कर रही है,कोई नेहरू-गाँधी परिवार पर पार्टी को मजबूत न कर पाने का आरोप लगा रहा है। परन्तु हकीकत तो यह है कि देश में धार्मिक ध्रुवीकरण की सफल राजनीति करने के बाद सत्ता में आने वाली भारतीय जनता पार्टी के समक्ष उन रीढ़विहीन व विचारविहीन नेताओं द्वारा समर्पण किया जा रहा है जो लंबे समय तक 'सत्ता सुख ' भोगे बिना नहीं रह सकते। जिन्हें अपने साथ साथ अथवा अपने बाद अपने बच्चों व परिजनों के लिये पार्टी प्रत्याशी के रूप में टिकट की गारंटी चाहिए। या जो कांग्रेस में रहते हुये स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रहे थे,अथवा जो अपना जनाधार समाप्त कर चुके थे। कांग्रेस दरअसल हमेशा ही अपने ही 'विभीषणों ' से कमजोर हुई है। जितनी बार कांग्रेस विभाजित हुई,देश का कोई अन्य दूसरा दल विभाजित नहीं हुआ। परन्तु कांग्रेस में पूर्व में कामराज, ब्रह्मानंद रेड्डी,नारायण दत्त तिवारी,अर्जुन सिंह,जी के मूपनार,जगजीवन राम व हेमवती नंदन बहुगुणा आदि नेताओं के समय काल के पार्टी विभाजन काफी हद तक पार्टी की अपनी मूल धर्मनिरपेक्ष विचारधारा को भी साथ लेकर चल रहे थे। तभी इन नेताओं ने या तो गांधीवादी विचारधारा युक्त अपने अलग राजनैतिक संगठन बनाये या फिर आगे चल कर पुनः कांग्रेस में ही विलय कर गये।

## आईपीएल मीडिया अधिकार : प्रसारण और डिजिटल अधिकारों की बोली लगाएगा सोनी नेटवर्क्स

**नई दिल्ली.** दो नई टीमों को शामिल करने और एक आकर्षक मेगा नीलामी के बाद, ई-नीलामी और सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्?स इंडिया के माध्यम से 2023/27 के लिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के टेलीविजन और डिजिटल प्रसारण के मीडिया अधिकारों को बेचने के लिए मंच तैयार है। सोनी लीग की दोनों अधिकारों के लिए बोली लगाएगा। आईपीएल मीडिया अधिकारों के लिए निविदा का आमंत्रण (आईटीटी) जल्द ही जारी होने की संभावना है, जिसके बाद ई-नीलामी होगी। ई-नीलामी या बंद लिफाफा बोली के लिए पहले एक आंतरिक बहस हुई थी, जैसा कि हाल ही में टीम नीलामी के लिए किया गया था, लेकिन अंत में बीसीसीआई ने ई-नीलामी के लिए जाने का फैसला किया, क्योंकि यह बहुत अधिक पारदर्शी है।

विशेष रूप से, डिजनी के स्वामित्व वाले स्टार के पास वर्तमान में आकर्षक लीग के मीडिया अधिकार हैं। स्टार इंडिया ने मौजूदा चक्र 2018/22 के लिए 16,347.5 करोड़ रुपये में आईपीएल के मीडिया अधिकार खरीदे थे। हालांकि, सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया (एसपीएनआई), जिसने 8,200 करोड़ रुपये का भुगतान करने के बाद 10 वर्षों (सीजन 1 से 10 तक) के मीडिया अधिकारों का आयोजन किया, वह उस अधिकार को वापस पाने के लिए उत्सुक है, जिसे उन्होंने एक दशक तक पोषित किया था।

कंपनी ने आईएएनएस से कहा, एसपीएनआई आगामी आईपीएल के प्रसारण और डिजिटल अधिकारों दोनों के लिए बोली का मूल्यांकन करेगा। जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड के साथ विलय के बाद सोनी ने अपना विस्तार किया है और उनसे अधिकारों के लिए एक साथ बोली लगाने की उम्मीद है और आईपीएल अधिकार हासिल करने से उन्हें बाजार में भारी बढ़ावा मिल सकता है।

हालांकि, उनके लिए सफलता की राह आसान नहीं होगी, क्योंकि कई अन्य नाम भी मैदान में हैं। डिज्नी के स्वामित्व वाली स्टार, रिलायंस-वायाकॉम18 और अमेजॅन बाजार में अन्य बड़े खिलाड़ी हैं और मीडिया के अधिकारों को हथियाने से बोली-प्रक्रिया में एक कड़ा मुकाबला देखने को मिल सकता है।

## 11 साल के बाद उस्मान ख्वाजा ने छोड़ा सिडनी थंडर का दामन, जानिए वजह

**नई दिल्ली.** बिग बैश लीग (Big Bash League) का पहला सीजन 2011 में खेला गया था और तभी से सिडनी थंडर (Sydney Thunder) के साथ उस्मान ख्वाजा (sman Khawaja) जुड़े हुए हैं, लेकिन अब वह इस फ्रेंचाइजी टीम का साथ छोड़ रहे हैं। उस्मान ने अपने करियर का इसको सबसे मुश्किल फैसला बताया है। 11 साल बाद उस्मान ने पारिवारिक कारणों से सिडनी थंडर का साथ छोड़ने का फैसला लिया है।ख्वाजा ने सिडनी थंडर के लिए 59 मैचों में कुल 1818 रन बनाए हैं, वह अपने होमटाउन ब्रिसबेन के पास रहना चाहते हैं और इसी वजह से उन्होंने सिडनी थंडर के साथ अपना कॉन्ट्रैक्ट खत्म किया है। ख्वाजा की पत्नी रेचेल ने हाल ही में दूसरे बच्चे को जन्म दिया है।ख्वाजा ने अपने बयान में कहा, इस फैसले के बारे में मुझे बात करने से नफरत है। एक क्रिकेटर के तौर पर यह मेरे करियर का सबसे मुश्किल फैसला था। सिडनी थंडर के खिलाड़ी, सपोर्ट स्टाफ और कोचिंग स्टाफ मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं।

## एक पल में हीरो से विलेन बन गया टीम इंडिया का ये खिलाड़ी, इस ब्लंडर को देख भड़के रोहित

**नई दिल्ली.** भारत ने श्रीलंका को लखनऊ में खेले गए पहले टी20 मैच में 62 रनों से रौंदकर तीन मैचों की टी20 सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है. इस मैच में टीम इंडिया को शानदार जीत मिली लेकिन एक भारतीय खिलाड़ी ऐसा था, जो एक ही पल में इस मैच में हीरो से विलेन बन गया. कप्तान रोहित शर्मा भी इस खिलाड़ी से इतना नाराज हुए कि उन्होंने अपना सिर पकड़ लिया. इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है, जिस पर फैंस लगातार कमेंट्स कर रहे हैं.

हीरो से विलेन बन गया टीम इंडिया का ये खिलाड़ी

दरअसल, कप्तान रोहित शर्मा ने श्रीलंका की पारी का छठा ओवर युजवेंद्र चहल को सौंपा. युजवेंद्र चहल के इस ओवर की दूसरी ही गेंद पर श्रीलंकाई बल्लेबाज चरित असालंका ने छक्के के लिए ऊंचा शॉट खेल दिया, लेकिन इसके बाद जो हुआ उसने कप्तान रोहित शर्मा और युजवेंद्र चहल को बेहद नाराज कर दिया. चरित असालंका ने गेंद को हवा में उठा दिया, लेकिन बाउंड्री के पास खड़े श्रेयस अय्यर ने आसान सा लड्डू कैच टपका दिया.

# Ind vs SL: टी-20 सीरीज में इस स्टार गेंदबाज को शामिल करने पर आशीष नेहरा ने जताई हैरानी

**नई दिल्ली.** श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज के लिए टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली और विकेटकीपर-बल्लेबाज रिषभ पंत को आराम दिया गया है। हालांकि, स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और आलराउंडर रवींद्र जडेजा विभिन्न कारणों से वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज से बाहर होने के बाद वापसी की है। दोनों सीनियर खिलाड़ी गुरुवार को लखनऊ में श्रीलंका के खिलाफ पहले टी20 मैच में खेले, जिसमें भारत ने 62 रन से जीत दर्ज की। चोटिल केएल राहुल की गैरमौजूदगी के कारण बुमराह को सीरीज के लिए उपकप्तान बनाया गया है।पूर्व तेज गेंदबाज आशीष नेहरा ने बुमराह को टी-20 सीरीज के लिए टीम में शामिल करने पर हैरानी जताई। नेहरा ने क्रिकबज से बातचीत में कहा, मैं बहुत हैरान हूं कि बुमराह इन तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में खेल रहे हैं। बेशक हर खिलाड़ी खेलना चाहता है, लेकिन टी20 सीरीज के बाद दो टेस्ट मैच होने हैं। अभी और मैच आने बाकी हैं। हमारे पास अधिक विकल्प हैं और अन्य खिलाड़ियों को समय के साथ-साथ आत्मविश्वास की भी आवश्यकता है।नेहरा ने यह भी कहा कि बुमराह को शामिल करने से अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार सहित अन्य खिलाड़ियों को सीमित अवसर मिलेंगे, जो अपनी फार्म को तलाश रहे हैं और वेस्टइंडीज के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा, हमने भुवनेश्वर कुमार जैसे खिलाड़ियों की बात कर रहे हैं। आप मोहम्मद सिराज को और मैच समय दे सकते हैं। अवेश खान ने भी अब तक सिर्फ एक मैच खेला है। बुमराह के वापस आते ही इनमें से किसी एक खिलाड़ी को बार बैठना होगा। इसलिए मैं हैरान हूं कि वह (बुमराह) यहां खेल रहे हैं। बता दें कि श्रीलंका के खिलाफ पहले टी-20 मैच में बुमराह ने गुरुवार को 19 रन देकर 3 ओवर विकेट लिए। भारत की जीत में ईशान किशन की 89 रन और श्रेयस अय्यर की 57 रन ने बड़ी भूमिका निभाई।

## Ranji Trophy 2022: नर्वस नाइंटीज का शिकार हुए डेब्यू मैच में ट्रिपल सेंचुरी जड़ने वाले सकिबुल गनी, मात्र 2 रन से शतक से चूके

**नई दिल्ली.** अपने डेब्यू मैच में ट्रिपल सेंचुरी जड़कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाले बिहार के लाल सकिबुल गनी (Sakibul Gani) का शानदार प्रदर्शन जारी है। गनी ने अपने दूसरे मैच में सिक्किम के खिलाफ 98 रनों की एक और जबर्दस्त पारी खेली। हालांकि वह केवल दो रन से शतक से चूक गए और नर्वस नाइंटीज का शिकार हो गए। गनी ने अपनी पारी के दौरान 135 गेंदों पर 18 चौके लगाए। कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में बिहार और सिक्किम के बीच जारी इस मुकाबले में गनी ने चौथे विकेट के लिए लखन राजा के साथ 57 और बिपिन सौरभ के साथ 5वें विकेट के लिए 100 से ज्यादा रनों की साझेदारी की।

**डेब्यू मैच में ट्रिपल सेंचुरी जड़कर बनाया था वर्ल्ड रिकॉर्ड**

सकिबुल ने अपने पिछले ही मैच में मिजोरम के खिलाफ ट्रिपल सेंचुरी जड़ा था और वह अपने डेब्यू मैच में तिहरा शतक लगाने वाले पहले क्रिकेटर बने थे।

गनी ने अपनी इस पारी से खूब सुर्खियां बटोरी थी। उन्होंने पिछले मैच में 405 गेंदों पर 341 रनों की शानदार पारी खेली थी। इस दौरान उन्होंने 84.20 की स्ट्राइक रेट से 56 चौके और दो छक्के लगाए थे।

## PSL 2022: पाकिस्तान छोड़कर भागे एलेक्स हेल्स ने लौटकर इस्लामाबाद युनाइटेड को दिलाई बड़ी जीत, पेशावर जल्मी का सफर खत्म

पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) 2022 के एलिमिनेटर मैच में पेशावर जल्मी को इस्लामाबाद युनाइटेड ने पांच विकेट से हराकर दूसरे एलिमिनेटर में जगह बना ली है, जहां फाइनल में पहुंचने के लिए उन्हें लाहौर कलंदर्स से भिड़ना होगा। पीएसएल 2022 के बीच में ही निजी कारणों से इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज एलेक्स हेल्स इस्लाबाद युनाइटेड का साथ छोड़कर स्वदेश लौट गए थे। प्लेऑफ से ठीक पहले वह पाकिस्तान लौटे और एलिमिनेटर मैच में ताबड़तोड़ पचासा जड़ टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई।एलेक्स हेल्स बायो बबल से परेशान होकर स्वदेश लौटे थे, इसके अलावा कप्तान शादाब खान ने भी एलिमिनेटर मैच में वापसी की और इससे इस्लामाबाद युनाइटेड का पलड़ा पहले ही भारी नजर आने लगा था। दोनों टीमों के बीच एलिमिनेटर मैच में कांटे की टक्कर देखने को मिली और मैच आखिरी ओवर तक खिंचा। पेशावर जल्मी ने 20 ओवर में पांच विकेट पर 169 रन बनाए थे, जवाब में इस्लामाबाद युनाइटेड ने 19.3 ओवर में पांच विकेट पर 170 रन बनाकर मैच अपने नाम कर लिया।

श्रेयस अय्यर भी बनना चाहते हैं ऑलराउंडर, बुमराह से मांगी गेंदबाजी!

एलेक्स हेल्स ने 49 गेंदों पर 62 रनों की पारी खेल, टीम की जीत की नींव रखी। वह अपनी टीम की ओर से बेस्ट स्कोरर भी रहे। उनके अलावा शादाब ने 17 गेंद पर 22 रन बनाए, जबकि आजम खान ने 22 गेंद पर 28 रन ठोके। पाकिस्तान सुपर लीग का दूसरा एलिमिनेटर मैच 25 फरवरी यानी कि आज खेला जाना है, जबकि 27 फरवरी को फाइनल मैच खेला जाएगा। मुल्तान सुल्तान्स पहले ही फाइनल का टिकट कटा चुका है।

# विवादों को हवा देकर मुश्किल में फंसे रिद्धिमान साहा, BCCI भेजेगी कारण बताओ नोटिस!

**नई दिल्ल** विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमान साहा पहले सुर्खियों में छाए हुए थे और अब उन पर संकट और ज्यादा मंडराने लगा है। श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए टीम से बाहर किए जाने के बाद बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और हेड कोच राहुल द्रविड़ पर सवाल उठाने वाले साहा की मुश्किलें बढ़ सकती है। बीसीसीआई अब साहा से इस मामले में सवाल-जवाब कर सकती है। इसके लिए बोर्ड बंगाल के विकेटकीपर को कारण बताओ नोटिस भेजने पर विचार कर रहा है। बीसीसीआई का कहना है कि वो सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट में शामिल हैं और उनका इस तरह से सार्वजनिक रूप से बयान देना प्रोटोकॉल का उल्लंघन है।बीसीसीआई के कोषाध्यक्ष अरुण धूमल ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया, हां, इस बात की संभावना है कि बीसीसीआई रिद्धिमान से पूछ सकती है कि सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट होने के बावजूद उन्होंने टीम चयन को लेकर सार्वजनिक रूप से कैसे बात की? जहां तक अध्यक्ष का सवाल है, गांगुली ने उन्हें प्रेरित करने की कोशिश की थी। बोर्ड अब यह जानने की कोशिश करेगा कि उन्होंने कैसे बंद कमरे में कोच राहुल द्रविड़ से हुई बातचीत को सार्वजनिक कर दिया।रोहित ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड, ऐसा करने वाले **दुनिया के पहले कप्तान बने**

यह पूछे जाने पर कि क्या बीसीसीआई औपचारिक कारण बताओ नोटिस देगा या मौखिक रूप से इस मामले पर साहा से सवाल पूछेगा? धूमल ने कहा, हमने अभी तक इस मामले पर फैसला नहीं किया है। पिछले कुछ दिनों से हम सभी बिजी हैं। लेकिन कुछ दिनों में इस पर फैसला हो जाएगा।37 साल के साहा ने श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में नहीं चुने जाने के बाद कहा था कि हेड कोच राहुल द्रविड़ ने उन्हें रिटायरमेंट लेने की सलाह दी थी। उन्होंने साथ ही बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली को लेकर कहा था कि गांगुली ने उन्हें कहा था कि जब तब वह बोर्ड अध्यक्ष हैं, तब वह टीम में बने रहेंगे। सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट की लिस्ट में साहा ग्रुप बी में हैं और इसके लिए उन्हें सालाना 3 करोड़ रुपये मिलते हैं।

# MCA करेगा खिलाड़ियों का सम्मान, रोहित शर्मा के साथ ये धाकड़ बल्लेबाज भी होगा सम्मानित

**नई दिल्ल.** महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन यानी एमसीए जल्द ही टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा को सम्मानित करेगी। रोहित को यह सम्मान उन्हें तीनों फार्मेट में कप्तान चुने जाने की खुशी में मिलेगा। आपको बता दें कि रोहित ने पहले टी20 में और फिर बाद में वनडे क्रिकेट में विराट कोहली की जगह ली थी। उसके बाद साउथ अफ्रीका के खिलाफ हार के बाद विराट ने टेस्ट टीम की कप्तानी भी छोड़ दी थी।

विराट के कप्तानी छोड़ने के बाद कई तरह के कयास लगाए जा रहे थे लेकिन आखिरकार पिछले हफ्ते रोहित को टेस्ट

टीम की भी जिम्मेदारी दे दी गई। इस तरह वो अब सभी फार्मेट के लिए भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान हैं। गौरतलब है कि विराट ने पिछले साल टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टी-20 फार्मेट से कप्तानी छोड़ दी थी। इसके बाद चयनकर्ताओं ने उन्हें वनडे कप्तानी से यह कहते हुए हटा दिया था कि वे लिमिटेड ओवर्स क्रिकेट में दो अलग-अलग कप्तान नहीं चाहते। इसके बाद कोहली ने दक्षिण अफ्रीका दौरे पर टेस्ट में हार के बाद क्रिकेट के सबसे बड़े फार्मेट की भी कप्तानी छोड़ दी थी। ऐसे में रोहित को तीनों फार्मेट में कप्तान बना दिया गया है। कप्तान की शुरुआत शानदार तरीके से हुई है।

एमसीए द्वारा रोहित शर्मा को सम्मानित करने का फैसला एमसीए एपेक्स काउंसिल की बैठक में लिया गया। उनको ये सम्मान आइपीएल से पहले दिया जाएगा। रोहित के अलावा एमसीए कई अन्य खिलाड़ियों को भी सम्मानित करेगी। इसमें अंडर-19 सेंसेशन अंगकृष रघुवंशी भी शामिल है, जिन्होंने अंडर-19 वर्ल्ड कप के 6 मैचों में 278 रन बनाए थे और भारत की जीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके अलावा मुंबई के कई क्रिकेटर है जिन्हें एमसीए सम्मानित करेगी। इन खिलाड़ियों की सूची में हाल ही में शानदार प्रदर्शन करने वाले स्टार मीडिल आर्डर बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव, गेंदबाज शार्दूल ठाकुर, ओपनिंग बल्लेबाज पृथ्वी शॉ, श्रेयस अय्यर और सरफराज खान शामिल हैं।

# ऑस्ट्रेलिया के लिए मैच न खेलने वाले खिलाड़ियों के वेतन में हो कटौती : हेडन

**ब्रिस्बेन.** ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज मैथ्यू हेडन ने शुक्रवार को देश के मैचों से गायब रहने वाले खिलाड़ियों के वेतन में कटौती की मांग की। हेडन की टिप्पणी टेस्ट कप्तान पैट कमिंस, सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर, तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क और जोश हेजलवुड को मार्च में पाकिस्तान के खिलाफ सफेद गेंद के मैचों के लिए आराम दिए जाने के बाद आई है।

हेडन ने द ऑस्ट्रेलियन के हवाले से कहा, जब खिलाड़ी अपने देश के लिए नहीं चुने जाते हैं, तो यह आपके उच्च प्रदर्शन के लिए चिंता का विषय है। आप सभी वास्तव में अपने देश के लिए खेलने के लिए उत्सुक हैं और यदि आपको वह नहीं मिलता है, तो मैं वास्तव में सवाल करता हूं कि आपका प्रदर्शन अच्छा क्यों नहीं है।

हेडन ने कहा, आपके द्वारा की गई हर वह चीज जैसे टीम के मूल्यों, सिद्धांतों, अपने साथियों के बारे में कुछ भी अच्छा न करने की कोशिश करना मुश्किल पैदा करती है। मुझे लगता है कि हाल ही में खिलाड़ियों द्वारा क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया का नेतृत्व किया जा रहा है और इसने कई समस्याओं को खड़ा किया है।

आराम करने वाले खिलाड़ियों में से कमिंस, वार्नर और हेजलवुड इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2022 सीजन में क्रमशः कोलकाता नाइट राइडर्स, दिल्ली कैपिटल और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए खेलने वाले हैं।

लेकिन तीनों 6 अप्रैल तक टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं लेंगे। हेडन, जिन्होंने पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात में टी20 विश्व कप के दौरान पाकिस्तान के बल्लेबाजी सलाहकार के रूप में काम किया था, उनको लगता है कि सफेद गेंद वाले मैचों के लिए यह अच्छा नहीं है।

उन्होंने आगे कहा, जब आप ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलना चाहते हैं तो आपको मौके का फायदा उठाना चाहिए। इसका मेरे लिए कोई मतलब नहीं है। हम सभी जानते हैं कि आईपीएल कितना महत्वपूर्ण है।

मुझे पता है कि यह मुश्किल हो सकता है खिलाड़ियों और प्रशासकों को आधुनिक कार्यक्रम के दायरे में काम करने के लिए, लेकिन मुझे अभी भी लगता है कि ऑस्ट्रेलिया की ओर से मिले मौके को गंवाना नहीं चाहिए

# टीम इंडिया को मिला बेन स्टोक्स जैसा घातक ऑलराउंडर, जल्द वर्ल्ड क्रिकेट में करेगा राज!

**नई दिल्ली.** भारतीय क्रिकेट टीम में बेन स्टोक्स जैसे घातक ऑलराउंडर ने लगभग अपनी जड़ें जमा ली हैं. टीम इंडिया को इंग्लैंड के खतरनाक ऑलराउंडर बेन स्टोक्स जैसा एक बेहतरीन ऑलराउंडर मिल गया है. भारत के इस विस्फोटक ऑलराउंडर ने बहुत कम समय में ही टीम इंडिया में अपनी छाप छोड़ दी है. ये ऑलराउंडर तूफानी बैटिंग के अलावा घातक बॉलिंग में भी माहिर है. टीम इंडिया को वेंकटेश अय्यर के रूप में बेन स्टोक्स जैसा घातक ऑलराउंडर मिल गया है. वेंकटेश अय्यर ने भारत के लिए अभी तक 2 वनडे और 7 टी20 इंटरनेशनल मैच खेले हैं. वेंकटेश अय्यर IPL और डोमेस्टिक क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर काफी चर्चा में रहे हैं.

वेंकटेश अय्यर तूफानी बैटिंग के अलावा घातक बॉलिंग में भी माहिर हैं. वेंकटेश अय्यर फिलहाल श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में खेल रहे हैं. इससे पहले बीते हफ्ते वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में 27 साल के वेंकटेश अय्यर ने बेहद आक्रामक बल्लेबाजी की थी. वेंकटेश अय्यर ने तीन मैचों की टी20 सीरीज में 184 के स्ट्राइक रेट से 92 रन बनाए थे.इस दौरान उन्होंने 10 चौके और 4 छक्के जड़े. ओवरऑल टी20 क्रिकेट में वेंकटेश अय्यर 1377 रन बना चुके हैं. वेंकटेश अय्यर 7 अर्धशतक भी जड़ चुके हैं. वेंकटेश अय्यर ने 136 चौके और 50 छक्के लगाए हैं. वहीं, गेंदबाजी करते हुए वेंकटेश अय्यर ने 42 पारियों में 22.70 की औसत से 34 विकेट झटके हैं. 2 रन देकर 2 विकेट उनका बेस्ट प्रदर्शन है. वेंकटेश अय्यर की इकोनॉमी भी कम है. इससे पहले टी20 मुश्ताक अली ट्रॉफी में वेंकटेश अय्यर ने 5 पारियों में 52 की औसत से 155 रन बनाए थे. वहीं, गेंदबाजी करते हुए वेंकटेश अय्यर ने 17 की औसत से 5 विकेट भी झटके थे.

## पाकिस्तान में पहली बार कोई हिंदू बना लेफ्टिनेंट कर्नल, जानिए इनके बारे में

**इस्लामाबाद**. पाकिस्तान में पहली बार किसी हिंदू धर्म के शख्स को लेफ्टिनेंट कर्नल नियुक्त किया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया कि पाकिस्तानी आर्मी ने इतिहास में पहली बार किसी हिंदू अधिकारी को लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नत किया है।पाकिस्तानी सेना की मीडिया विंग ने इसकी जानकारी दी है। आर्मी की तरफ से जारी एक बयान में कहा गया कि सिंध प्रांत के थार जिले के रहने वाले कैलाश कुमार एक शानदार अधिकारी हैं।

मेजर से कर्नल बने कैलाश कुमार

पाकिस्तान के सामा न्यूज ने बताया कि कैलाश कुमार इस पद पर पहुंचने वाले पहले हिंदू-पाकिस्तानी हैं। उनकी रैंक को मेजर से लेफ्टिनेंट कर्नल में अपग्रेड किया गया है।पाकिस्तान सैन्य अकादमी से पास आउट हैं कैलाश कुमारमीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि कैलाश कुमार पाकिस्तान सैन्य अकादमी से पास आउट हुए हैं।

## भूकंप के तेज झटकों से हिला इंडोनेशिया, रिएक्टर स्केल पर 6.2 रही तीव्रता

**जकार्ता**. इंडोनेशिया में शुक्रवार सुबह भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। अमेरिकी जियोलॉजिकल सर्वे के अनुसार यहां 6.2 स्केल का भूकंप आया। बता दें कि ये झटके इतने तेज थे कि, लोग घरों से बाहर तक निकल आए। जानकारी के मुताबिक, सुबह करीब 07:09 बजे भूकंप महसूस किया गया। बुकिटिंग्गी में यह झटके महसूस हुए। हालांकि, भूकंप में अभी तक किसी भी प्रकार की जान-माल के नुकसान की खबर नहीं आई है।

**दो महीनों में कई बार आया भूकंप**

बता दें कि इंडोनेशिया (Indonesia) में यह दो माह में तीसरा भूकंप है। इससे पहले 2 फरवरी को इंडोनेशिया के केपुलावन बरात दया (Kepulauan Barat Daya) में झटके महसूस किए गए थे । यूरोपियन-मेडिटेरेनियन सिस्मोलॉजिकल सेंटर ने यह जानकारी दी थी कि रिक्टर स्केल पर इसकी 6.4 की तीव्रता थी। इस दौरान किसी तरह की सुनामी की खबर सामने नहीं आई थी न ही जानमाल को कोई नुकसान हुआ था। पिछले महीने 19 जनवरी को भी इंडोनेशिया में 5.5 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया था। भूकंप के झटके अमाहाई से 219 किलोमीटर पूर्व में महसूस किए गए थे।

## Vladimir Putin की खास आदत, जो उनको दूसरे वर्ल्ड लीडर्स से बनाती है अलग

**मास्को**. रूस (Russia) ने यूक्रेन (Ukraine) पर हमला कर दिया है, इस बीच रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन (Vladimir Putin) की चर्चा जोरों पर है. हर कोई उनके व्यक्तित्व के बारे में बात कर रहा है. जान लें कि व्लादिमीर पुतिन की एक खास आदत है जो उन्हें दूसरे वर्ल्ड लीडर्स से अलग बनाती है.

**पुतिन को जानवरों से है प्यार**

डेली स्टार में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को जानवरों से बहुत प्यार है. उनकी कई तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हैं जिसमें वो जानवरों के साथ नजर आ रहे हैं. वो कई बार जानवरों के साथ मस्ती करते हुए भी देखे गए हैं.

**वायरल हुई घुड़सवारी करते हुए पुतिन की फोटो**

सोशल मीडिया पर घुड़सवारी करते हुए व्लादिमीर पुतिन की एक तस्वीर काफी वायरल है. इस फोटो में पुतिन ने शरीर के ऊपरी हिस्से पर कुछ नहीं पहना है और घुड़सवारी करते हुए दिख रहे हैं. व्लादिमीर पुतिन की ये फोटो साल 2019 की है. पुतिन की ऐसी ही एक और फोटो साल 2009 में भी सामने आई थी. साल 2013 में पुतिन की बुल्गारियन शेफर्ड के साथ खेलने की तस्वीर भी सामने आई थी.

# Russia Ukraine Missiles: कैलिबर, इस्कंदर बनाम स्टिंगर, जेवलिन... यूक्रेन की जंग में तबाही मचा रही हैं ये मिसाइलें

**कीव**. रूस और यूक्रेन की सेना के बीच भीषण युद्ध लगातार दूसरे दिन भी जारी है। रूस की सेना ने गुरुवार को यूक्रेन के सैन्य ठिकानों पर कई तरह के रॉकेट, क्रूज और बलिस्टिक मिसाइलों से भीषण हमला किया। इस दौरान यूक्रेन के एयर डिफेंस सिस्टम, रनवे, हथियारों के गोदाम और एयरपोर्ट को निशाना बनाया गया। इस बीच अब यूक्रेन ने भी अपनी मिसाइलों से जोरदार पलटवार किया है। आइए समझते हैं यूक्रेन में कैसे रूस बनाम पश्चिमी देशों के हथियारों के बीच भीषण लड़ाई जारी है।

विशेषज्ञों के मुताबिक यूक्रेन पर हमला करने के लिए रूस तबाही मचाने वाला स्मर्च रॉकेट सिस्टम इस्तेमाल कर रहा है। यह वही रॉकेट सिस्टम है जिसका इस्तेमाल भारतीय सेना करती है। प्रत्येक स?मर्च रॉकेट सिस्टम ट्रक पर रखा जाता है और यह मात्र 38 सेकंड में 12 रॉकेट फायर कर सकता है। भारतीय सेना के पास मौजूद स्मर्च रॉकेट 90 किमी तक मार कर सकते हैं, वहीं रूसी रॉकेट की क्षमता और ज्यादा मानी जाती है।

**उर्गान मल्टी रॉकेट लॉन्चर सिस्टम का इस्तेमाल**

प्रिंट की रिपोर्ट के मुताबिक रूस उर्गान मल्टी रॉकेट लॉन्चर सिस्टम का इस्तेमाल कर रही है जिसमें प्रत्येक यूनिट में 16 ट्यूब होते हैं लेकिन इस रेंज स?मर्च की तुलना में आधी है। भारतीय रक्षा सूत्रों का कहना है कि रूस कई तरह की मिसाइलों का इस्तेमाल कर रहा है जिसमें प्रमुख तौर पर सबमरीन और जंगी जहाज से लॉन्च की जाने वाली कैलिबर क्रूज मिसाइल और इस्कंदर मिसाइल का इस्तेमाल कर रही है। सूत्रों के मुताबिक कैलिबर क्रूज मिसाइल रूस की पसंदीदा है जिसे उसने साल 2015 में सीरिया में भी इस्तेमाल किया था।

सूत्रों ने कहा कि इस मिसाइल को 2500 किमी की दूरी से भी दागा जा

सकता है। इसके अलावा रूसी सेना इस?कंदर मिसाइल का भी इस्तेमाल कर रही है जिसकी रेंज 300 से लेकर 400 किमी तक है। ये मिसाइलें अत्याधुनिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम को भी भेदने में सक्षम हैं। यही नहीं यह बीच में ही अपना मार्ग बदलने में सक्षम है। इससे पहले यूक्रेन ने बताया था कि रूस ने 36 इस्कंदर मिसाइलों को यूक्रेन की सीमा पर तैनात किया है। इसके अलावा कई फाइटर जेट और लड़ाकू हेलिकॉप्टर भी यूक्रेन में बमबारी कर रहे हैं।

जेवलिन और स्टिंगर मिसाइलों से यूक्रेन दे रहा जवाबरूस के हमले के जवाब में अब यूक्रेन की सेना भी जोरदार जवाब दे रही है। यूक्रेन का दावा है कि उसने रूस के दर्जनों टैंकों को तबाह कर दिया है। माना जा रहा है कि यूक्रेन की सेना अमेरिका के दिए 300 एंटी टैंक जेवलिन मिसाइलों का इस्तेमाल कर रही है। ये मिसाइलें मैन पोर्टेबल हैं। इन्हें यूक्रेनी सैनिक कंधों पर रखकर फायर कर सकते हैं। जेवलिन मिसाइलों को आर्मर्ड व्हीकल, टैंक और बंकरों को उड़ाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। युद्ध की स्थिति में ये मिसाइलें रूसी सेना के लिए बड़ी परेशानी पैदा कर सकती हैं। यह मिसाइल अपने लक्ष्य को साधने के लिए इंफ्रारेड तकनीक का इस्तेमाल करती है। इस मिसाइल को टैंकों के खिलाफ सबसे अधिक प्रभावी माना जाता है। जेवलिन मिसाइल का इस्तेमाल बिल्डिंगों और दुश्मन के अड्डों को उड़ाने के लिए भी किया जाता है।यूक्रेन को रूस के फाइटर जेट और हेलिकॉप्टरों से निपटने के लिए अमेरिकी स्टिंगर मिसाइलें भी दी गई हैं। यह मिसाइल हवा में उड़ते लो फ्लाइंग ड्रोन और हेलीकॉप्टर को को मार गिराने में सक्षम है। स्टिंगर मिसाइलों को भी कंधे पर रखकर आसानी से फायर किया जा सकता है।

## नाटो यूक्रेन के अंदर नहीं, बल्कि गठबंधन के पूर्वी हिस्से में अपनी उपस्थिति बढ़ाएगा

**ब्रसेल्स**. नाटो के महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने कहा है कि उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सहयोगी यूक्रेन के पास अपने पूर्वी हिस्से में अपनी सेना को और मजबूत करने पर सहमत हुए हैं, लेकिन यूक्रेन में सेना भेजने का उसका कोई इरादा नहीं है।स्टोल्टेनबर्ग ने गुरुवार को उत्तरी अटलांटिक परिषद की एक असाधारण बैठक के बाद प्रेस को बताया कि नाटो के पास यूक्रेन के अंदर सैनिक नहीं है और उसका यूक्रेन में नाटो सैनिकों को तैनात करने का कोई इरादा नहीं है।समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, नाटो की प्रतिक्रिया तब आई जब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को डोनबास क्षेत्र में एक विशेष सैन्य अभियान को अधिकृत किया, और यूक्रेन ने पुष्टि करते हुए कहा कि देश भर में सैन्य ठिकानों पर हमले हो रहे हैं।पुतिन ने गुरुवार को देश के लिए एक टेलीविजन भाषण में कहा कि रूस की योजनाओं में यूक्रेनी क्षेत्रों पर कब्जा शामिल नहीं है।

रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि हम किसी पर बलपूर्वक कुछ भी नहीं थोपने जा रहे हैं। यह देखते हुए कि रूस का कदम नाटो के मौलिक खतरों के जवाब में है, जो पूर्वी यूरोप तक फैल गया है और अपने सैन्य बुनियादी ढांचे को रूसी सीमाओं के करीब लाया है।

इससे पहले, नाटो के राजदूतों ने एक बयान में कहा कि उन्होंने सभी सहयोगियों की रक्षा के लिए हमारी रक्षात्मक योजना के अनुरूप, गठबंधन में प्रतिरोध और रक्षा को और मजबूत करने के लिए अतिरिक्त कदम उठाने का फैसला किया था।

उन्होंने कहा कि हम गठबंधन के पूर्वी हिस्से में अतिरिक्त रक्षात्मक भूमि और वायु सेना, साथ ही अतिरिक्त समुद्री संपत्ति तैनात कर रहे हैं।हमने सभी आकस्मिकताओं का जवाब देने के लिए अपने बलों की तैयारी बढ़ा दी है।

## यूएस एविएशन रेगुलेटर ने यूक्रेन, बेलारूस, रूस के कुछ हिस्सों में नो-फ्लाई जोन का विस्तार किया

**वॉशिंगटन**. अमेरिका के फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) ने कहा है कि वह पूर्वी यूरोप में अपने नो-फ्लाई जोन का विस्तार कर रहा है क्योंकि यूक्रेन में संघर्ष चल रहा है।

एफएए ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि उसने पूर्वी यूरोप और रूस में उस क्षेत्र का विस्तार करने वाले एयर मिशनों को नोटिस जारी किया, जहां अमेरिकी एयरलाइंस और अमेरिकी पायलट काम नहीं कर सकते।बयान में कहा गया है, विस्तारित एनओटीएएम अब यूक्रेन के पूरे देश, बेलारूस के पूरे देश और रूस के पश्चिमी हिस्से को कवर कर रहे हैं।

समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, एनओटीएएम एक नोटिस है जिसमें उड़ान संचालन से संबंधित कर्मियों के लिए आवश्यक जानकारी होती है।रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा यूक्रेन के डोनबास क्षेत्र में एक विशेष सैन्य अभियान को अधिकृत करने के 24 घंटे से भी कम समय बाद यह घोषणा हुई।

## झूरंड रेखा विवादः तालिबान और पाकिस्तानी सेना के बीच छिड़ी लड़ाई, तीन नागरिकों की हुई मौत, 20 घायल

**इस्लामाबाद**. कंधार के स्पिन बोल्डक जिले में डूरंड रेखा पर तालिबानी और पाकिस्तानी सेना के बीच लड़ाई शुरू हो गई है। लड़ाई के दौरान गोलीबारी और हाथापाई के चलते 20 लोग घायल हो गए हैं जबकि 3 की मौत हो गई है। स्थानीय मीडिया के अनुसार कल दोपहर से ही डूरंड लाइन पर तालिबान और पाक बलों के बीच कंधार के स्पिन बोल्डक जिले में लड़ाई चल रही है। अब तक 20 नागरिक घायल और तीन मारे गए हैं। डूरंड लाइन के पास नागरिक अपने घरों से भाग गए हैं।

**पाक सैनिकों द्वारा अफगान बच्चे को पीटने पर शुरू हुई लड़ाई**

कंधार के सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा स्पिन बोल्डक गेट पर एक अफगान बच्चे को पीटने और उसके बाद अफगान सुरक्षा बलों के पाकिस्तानी सीमा प्रहरियों पर गोलियां चलाने पर यह लड़ाई शुरू हुई है। घटना गुरुवार दोपहर की है, जिसके बाद गेट को यातायात के लिए बंद कर दिया गया। घटना के बाद, अल-बद्र कोर से सेना के बल घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं और पाकिस्तानी सीमा प्रहरियों को जवाब देने की तैयारी कर रहे हैं।

**गुलाम खान सीमा पर भी हुई थी गहमागहमी**

बता दें कि डूरंड रेखा के मुद्दे पर तालिबान और पाकिस्तान के बीच मतभेद अभी भी जारी है। गौरतलब है कि इस संदर्भ में जलालाबाद (नंगरहार प्रांत) में पाकिस्तान के वाणिज्य दूतावास ने पिछले दिनों में खोस्त-उत्तर वजीरिस्तान क्षेत्र में गुलाम खान सीमा पार की स्थिति को पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय को बताया था। उन्होंने बताया था कि तालिबान ने पाकिस्तान को वहा से हटा दिया था। स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, एक सीमा चौकी से पाकिस्तानी झंडा और जीरो लाइन पर हुमवे और सशस्त्र कर्मियों को तैनात किया गया था।

जवाब में, पाकिस्तान ने तालिबान को संभावित जवाबी कार्रवाई की चेतावनी जारी की और व्यापार कुछ दिनों के लिए निलंबित कर दिया गया था। लेकिन बाद में दोनों पक्षों के व्यापारियों और आदिवासी बुजुर्गों के हस्तक्षेप से इस मुद्दे को सुलझा लिया गया था।

**तालिबान ने डूरंड लाइन पर पाक बाड़बंदी को किया था क्षतिग्रस्त**

तालिबान ने पाकिस्तानी सेना द्वारा डूरंड लाइन पर की गई बाड़बंदी के कुछ हिस्सों को भी कुछ दिनों पहले क्षतिग्रस्त कर दिया था।

बता दें कि इससे पहले भी तालिबान ने पाकिस्तानी सेना को डूरंड लाइन (दोनों देशों की सीमा रेखा) के करीब नांगरहार प्रांत में बाड़बंदी व सैन्य चौकियों के निर्माण से रोका था।

## Russia Ukraine War: घर में ही घिरा रूस! यूक्रेन पर हमले के खिलाफ कई शहरों में प्रदर्शन, हिरासत में 1700 से ज्यादा लोग

**मास्को**. यूक्रेन पर हमले के खिलाफ रूस के अंदर ही विरोध के स्वर उठने लगे हैं। रूस की राजधानी मास्को समेत कई शहरों में लोग यूक्रेन पर युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। बता दें कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार सुबह यूक्रेन पर युद्ध का एलान किया था।

**हिरासत में 1700 से ज्यादा लोग**

रूस की पुलिस ने दर्जनों शहरों में प्रदर्शन कर रहे 1700 से ज्यादा लोगों को हिरासत में ले लिया है। मास्को टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिणी शहर तोल्याट्टी से दूर पूर्वी शहर खाबरोवस्क तक भी प्रदर्शन हुए। इसके अलावा राजधानी मास्को और सेंट पीटर्सबर्ग में भी प्रदर्शन हुए। मास्को में ही 100 लोगों को हिरासत में लिया जा चुका है। सामाजिक कार्यकर्ता मरीना ने गुरुवार को रूसियों से यूक्रेन में रूसी सैन्य अभियान के खिलाफ मार्च में हिस्सा लेने की अपील की।

**प्रदर्शनकारियों को चेतावनी**

उधर, रूस में प्रदर्शनकारियों को चेतावनी दी गई है। रूसी सुरक्षाबलों ने कहा कि किसी भी तरह की अनाधिकृत सभाएं अवैध हैं। किसी भी तरह की सभा करने की मंजूरी नहीं है।

**अमेरिका में भी प्रदर्शन**

रूस के हमले के खिलाफ अमेरिका में भी प्रदर्शन हो रहे हैं। व्हाइट हाउस के बाहर सैकड़ों लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया है। रूस के दूतावास के बाहर भी लोगों ने प्रदर्शन किया है।

**137 लोगों की मौत की खबर**

रूस के हमले में यूक्रेन में अब तक 137 लोगों की मौत हो चुकी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्सकी ने इसकी पुष्टि की है।

उन्होंने यह भी बताया कि राजधानी कीव से कुछ ही दूर पर स्थित चेर्नोबिल न्यूक्लियर साइट भी अब मास्को के नियंत्रण में चला गया है।

## पति ने अपने लूज मोशन को इकट्ठा कर किचन के जार में रखा, पत्नी के सामने ऐसे खुली पोल

**लंदन**. वैसे तो ज्यादातर पति-पत्नी एक-दूसरे के राज को हमेशा राज ही रखते हैं लेकिन एक महिला ने अपने पति के बारे में ऐसा खुलासा किया जिसके बारे में जानकर सभी हैरान हैं. महिला ने बताया कि उसका पति अपना लूज मोशन (Loose Motion) इकट्ठा करता था. उसने अपना लूज मोशन एक जार में भरकर किचन (Kitchen) में रखा था.

**पति ने की अजीबोगरीब हरकत**

डेली स्टार में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक, महिला जब अपना किचन साफ कर रही थी तब उसे अपने पति की अजीबोगरीब हकरत के बारे में पता चला. पहले तो उसे यकीन ही नहीं हुआ कि उसका पति

ऐसा भी कर सकता है लेकिन जांच की तो ये बात सही पाई गई.जार खोलने पर आई बदबू

महिला ने बताया कि उसने किचन में एक जार रखा देखा. उसको जिज्ञासा हुई कि जार में क्या रखा है? फिर महिला ने जार खोला तो उसमें से बहुत बुरी बदबू आ रही थी. जार में जो रखा था वो भूरे रंग का दिख रहा था.

**पति ने स्वीकार की अपनी गलती**

उसने बताया कि जब उसने पति से इस बारे में पूछा तो पति के पास कोई जवाब नहीं था. फिर पति ने स्वीकार किया कि उसने अपने लूज मोशन को इकट्ठा करके किचन में रखा था. हालांकि पति ने ये नहीं बताया कि उसने ऐसा क्यों किया? महिला ने बताया कि लूज मोशन की गंध इतनी खराब थी कि वो अपनी जिंदगी में ये घटना कभी नहीं भूल सकती है. उसके पति को डायरिया हुआ था जिसके बाद उसने ऐसा किया.

गौरतलब है कि महिला ने अपने पति की इस हरकत के बारे में सोशल मीडिया पर खुलासा किया, जिसके बाद ये यूजर्स के लिए चर्चा का विषय बन गया. एक यूजर ने कहा कि शख्स ने अपना लूज मोशन लैब में जांच के लिए भेजने के लिए रखा होगा.

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

## यूक्रेन पर हमले के बाद बाइडन ने की रूस के खिलाफ नए प्रतिबंधों की घोषणा

**वाशिंगटन**

**अमेरिकी** राष्ट्रपति जो बाइडन ने गुरुवार को यूक्रेन में सैन्य हमले शुरू करने के लिए रूस की निंदा की और रूस पर निर्यात, बैंकों और उद्योगपतियों पर नए प्रतिबंधों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यूरोपीय संघ के 27 सदस्य और जी-7 सदस्य भी इन प्रतिबंधों में भाग लेंगे। बाइडन ने कहा कि अमेरिका और नाटो की सेनाएं रूस से युद्ध नहीं करेगी। देश को संबोधित करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि पुतिन ने युद्ध चुना है ।

## डॉक्टर ने 80 से ज्यादा महिलाओं के साथ की गंदी हरकत, फिर हुआ ऐसा

**एडिनबर्ग**. स्कॉटलैंड (Scotland) के नार्थ लैनार्कशायर (North Lanarkshire) से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है. दरअसल यहां एक डॉक्टर पर आरोप लगा है कि उसने 80 से ज्यादा महिलाओं के साथ गंदी हरकत की. उसने किसी को आपत्तिजनक तरीके से छुआ तो किसी को बिना उसकी मर्जी के किस कर लिया.

**डॉक्टर पर लगे गंभीर आरोप**

द मिरर में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, डॉक्टर ने करीब 35 साल में 80 से ज्यादा महिलाओं के साथ कथित रूप से गंदी हरकत की. आरोपी डॉक्टर का नाम कृष्णा सिंह है. उसकी उम्र 72 साल है. स्कॉटलैंड के नॉर्थ लैनार्कशायर में उसका क्लीनिक है. डॉक्टर पर जो आरोप हैं वो साल 1983 से 2018 के बीच लगाए गए.

**आपत्तिजनक तरीके से डॉक्टर ने छुआ**

पीड़ित महिलाओं ने ये भी आरोप लगाया है कि डॉक्टर ने उनको जबरन किस किया और जब उन्होंने इसका विरोध तो डॉक्टर ने उनके ऊपर अभद्र टिप्पणी की. ये भी आरोप है

कि स्टेथोस्कोप से चेक करते वक्त डॉक्टर महिलाओं को आपत्तिजनक तरीके से छूता था.

हालांकि डॉक्टर ने अपने ऊपर लगे सभी आरोपों से इनकार किया है. आरोपी डॉक्टर के वकील ने कहा कि डॉक्टर कई मामलों में पहले ही बेगुनाह साबित हो चुका है, उसके ऊपर लगे बाकी आरोप भी कोर्ट में झूठे साबित होंगे.

**इमरजेंसी डिपार्टमेंट में महिला के साथ जबरदस्ती**

इतना ही नहीं डॉक्टर पर ये भी आरोप है कि उसने इमरजेंसी डिपार्टमेंट में एक साथ महिला के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की. हालांकि अभी कोर्ट में इन मामलों की सुनवाई जारी है.

जानकारी के मुताबिक, आरोपी डॉक्टर ने बिहार के पटना से मेडिकल की पढ़ाई की. वो साल 1976 में यूनाइटेड किंगडम पहुंचा और प्रैक्टिस शुरू की.